मानसप्रचारिका ॥

अर्थात्

बहुतसे कठिन और गूढ़आशय ॥

जिसको

वैकुण्ठवासि श्रीअयोध्यानिवासि प्रसिद्ध महन्त हरिऊधवप्रसाद
साधुजी के शिष्य जानकीदासजी ने रचना किया

जिसमें

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत रामायण में वन्दना से मानस
पुराण पैंतालीस अष्टपदी चौपाई दोहेकी टीका निर्माण
की गईहै । इस टीकाके देखनेसे सबको बहुत सी
शास्त्र की सूक्ष्म बातें विदित होती हैं

श्रीमद्रामचरित्र पदाब्ज मधुकर प्रेमानुरागियों की भक्ति
बढ़ावने और सुखबोध के निमित्त और सन्त और
साधु लोगों के अवलोकन करने के लिये

पहिली बार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के छापेखाने में छापीगई ॥

मार्च सन् १८८५ ई० ॥

प्रकटहो कि कारखानेअवधअखबारमें बहुतप्रकारोंकीतुलसी दास व अन्नकविकृतरामायण मूल व तर्जुमाभाषामें होकर छपीहैं जिनका व्योरा नीचे लिखा जाताहै ॥

श्री गोस्वामी तुलसीकृत रामायण मूल और भाषा टीका रामचरण सहित

जिनमें रामायणके सातों कांडों में अयोध्या निवासि श्री महन्त रामचरणजी ने भाषा टीका किया इस विस्तृत और सर्वालंकार युक्त टीका को टीकाकार ने सर्व पुराणों के उचित श्लोक और वेद की ऋचाओंसेभी भूषित कियाहै और यह पुस्तकनुमा और सनाभि पत्रे नुमा दोनों प्रकारों से छपीहै ॥ क़ीमत ७)

श्री तुलसीकृत रामायणमूल टीका शुकदेवलाल रचित॥

यह टीका मैनपुरी निवासि शुकदेवलालजी ने संवत् १८२५ ई० में रचनाकी मुख्यकर इसटीका में यहगुणहैं कि श्रीतुलसीकृत रामायण के परिपूर्ण आशय को ठेठबोली में अक्षरार्थ लेकर उलथाकियाकुछभी न्यूनाधिक्यनहीं, पद पदार्थ अति रमणीय हैं और भक्ति भावको अति लक्षित कियाहै और गूढ़ाशयों के प्रकट करने और प्रमाणकेहेतु प्राचीन पौराणिकों के श्लोकभी संयुक्त कियेहैं ॥ क़ीमत २)

श्रीतुलसीकृत रामायण सटीक ॥

इस रामायणमें गूढ़ाशयों की टीकाके सिवाय सविवेचनानेकार्थबोधक कोश और शंका समाधान व काव्यांग और ज्ञान के अर्थ बहुधा प्रतिपत्र मानसदीपिका आदिभी संयुक्त कीगई है ॥ क़ीमत ११-)

श्री तुलसीकृत रामायणकीमानसप्रचारिका ॥

इस नवीन टीका को बैकुण्ठ वासि अयोध्याके रहनेवाले महन्त हरि ऊधवजी साधके शिष्य श्रीजानकीदासजी ने रचनाकिया इसमें श्रीमद्गोस्वामि तुलसीकृत रामायण में बन्दना से मानस पुराण की पैंतालीस अष्टपदी चौपाई दोहे की टीका निर्माणकीगईहै इस सुगमटीकाके पढ़ने से सबकोबहुतसीशास्त्रकी सूक्ष्म और गूढ़बातेंविदितहोतीहैं क़ीमत १-)

श्रीतुलसीकृतरामायण के श्लोक, चौपाई, दोहा सोरठा, छन्द की संख्या ॥

-※-

कांडक्रम	श्लोक	चौपाई	दोहा	सोरठा	छंद
बालकांड	७	२९६६	३५९	३५	३९
अयोध्याकांड	३	२६०६	३१४	१३	१३
आरण्यकांड	२	५२८	४९	९	१०
किष्किंधाकांड	२	३००	३१	३	२
सुन्दरकांड	३	५२६	६२	१	३
लंकाकांड	३	११०२	१४९	९	३७
उत्तरकांड	७	११७७	२०५	१७	१४
	२७	९२०५	११६९	८७	११

जय जय जय श्रीअवध विहारी। जय जय जय श्रीजनक दुलारी॥
जय जय जय श्रीरविकुल मण्डन। जय जय जय श्रीरघुकुल नन्दन॥
जय जय जय संतन हितकारी। जय जय जय भक्तन भयहारी॥
जय जय जय प्रभु अधम उधारण। जय जय जय दम्पति सुख कारण॥
सीताराम चरण चित लाऊं। सब संतनको विनय सुनाऊं॥
यह यश मुद मंगल करि गाई। सब जिल्दन में दियो छपाई॥

प्रकट होकि श्रीअयोध्याजी में श्रीमहाराजरामप्रसादजीकी गद्दीपरजो महंतश्रीहरिउद्धवप्रसादजीहुये तिनके शिष्य श्रीजानकीदासजी विख्यात रामायणी तिन्हों ने यह टीका नाम मानसप्रचारिका सम्वत् १९३२ में किया औरआपबड़ी सौभाग्यताके साथ श्रीमिथिलाजी में जायके इस अनित्य शरीरको छोड़ खास श्रीजानकीदुल्लहजी सर्कार के महलटहल में समर्पणकिया सो श्रीतुलसी कृत रामायण में प्रथम वन्दना से और मानस पुराण पर्यंत ४५ दोहा यह टीका है और सोलह कैंकर्य जोनाम धरेगये हैं सो सोलहप्रकरण जानिबे के अर्थ वो ऐसे बड़े परिश्रम वो बहुत बुद्धिकीशुद्धताके साथ यह टीका हुआ है कि साक्षात् श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी मानो टीकाकारजी के हृदय कमल में बैठके मानस का रूपक बांधाहै कि और कोई टीकामें यह भूमिका मानसका नहीं पाया जाता और तारीफ़ यहहै कि जोकोई पण्डित वा कवि सुनते औ देख हैं तो यही पश्चात्ताप करतेहैं कि श्रीरामायणजीके सातों कांडका टीका पूर्ण होता तो यहटीका श्रीराम उपासकोंको प्राण वल्लभ होता सो यह टीका सम्बत् १९३८ में मैं जोहौं श्रीरामदासानुदास नाम द्वारकादास परमहंस को पटना शहरमें प्राप्तहुआ एक वैष्णव कामतादासजी नाम के हाथसे सो दासनेजब अवलोकनका सुख लूटा तब यह अभिलाषा हुई कि छपिजाय तो मानस प्रकरण लगावनेवालों का बड़ा उपकारहो सो पटना शहरमें छपावनेकी तैयारी सबहोचुकीथी किइसीसमयमें श्री अवधजीसे पत्री पहुँचीकि चले आवो तब श्रीअवधनाथ युगल सर्कार की अति कृपा अपनेपर जानदास तुरंत चलाआया श्रीरामघाटपर बड़ी छावनीमें अपने प्राणनाथ श्री १०८ स्वामीजी के दर्शनको प्राप्त हुआ

और जब छावनी में श्रीरामायणी महात्मोंके समाज में बैठा तो क्या देखताहूं कियह श्रीमानस प्रचारिका के टीकाकारजी के साधक श्रीमाधवदासजी रामायणी इसीटीका को खूब प्रेमसे व्याख्यान कर रहे हैं तब मेरे रामने श्रवण का सुखलिया कुछ दिन पीछे मनन करते करते यह श्रीरामजीकी प्रेरणाहुई कि इस टीकामें सबमूलपदके अर्थोंमें अंक लगावनेका परिश्रम महात्मोंको पड़ताहै सो जो मूल पदके अर्थ जहां तक महात्माने व्याख्या कियाहै ज्यों का त्यों निकाल के उसी जगह मूलपदके नीचेधरि दियेजायँ कि अंक लगावनेका कुछ ज़रूर न हो। तब एक महात्मा यमुनादासजी नाम रहतेहैं छावनीमें उनसे हमारे रामने परिश्रमकरायकरके अपनीबुद्धि अनुसार तर्जुमाकर खुलासा लिखवाया सम्वत् १६४० भाद्रपद कृष्णदशमी मेंपूर्णहुवा तदनन्तर कार्त्तिकमास में शुक्लपक्ष अक्षयनवमी गुरुबारको यहदीन सकलसाधनहीन नामावलम्बी अपने आसन पर पड़ाहुआ युगलसर्कार श्रीसीता वल्लभलालजी की झांकीहाथ में लिये माधुर्य्यका सुख लूटताथा कि इतनेमें खास सर्कारी कृपाहुई कि श्रीकनकभवन महल टहल विश्रामी श्रीपरमहंस सीता शरणजी संत मंडली संयुक्त नामध्वनि करतेहुये इस अधम के उद्धारार्थ साक्षात् आसनपर आय पहुँचे तब दास बोला (चौपाई) सेवक सदन स्वामिआगमनू। मंगलमूल अमंगलदमनू॥ तत्पश्चात् यहपोथी हाथ में दिया देखिके कहा बहुत सहज करदिया अबकोई वसीला से छापा होजाय सो आज्ञा शीशपर धर श्रीटीकाकारजी के प्रथम की पोथी से एक २ अक्षर शुद्धकरके ह्रस्व दीर्घ व्यञ्जन विसर्ग्ग शुद्धकिया भरत दास जी वैष्णवके हस्तसे अब फाल्गुनमासमें श्रीराम कृपाते यह वसीला मिला कि पीलखाये गांवके बाबा श्रीमहाबीरदासजीकी बहुतइच्छा हुई कि यहपोथी शुद्धप्रति मिलै तो उसी ग्रामके रहनेवाले श्रीपण्डित राज पूज्य सरयूप्रसादजी की सहायतासे लखनऊ मेंमुन्शीनवल किशोरजी के शीशाक्षरयन्त्रालय मेंबहुत जल्दीछप जायगी सो संवत् १६४० पूर्ण होने के दिन चैत्रमास अमावास्या गुरुवार को यह पुस्तक लखनऊ को भेजीगई जो उत्तम रीति से मुद्रितहुई अबमेरा आशीर्व्वाद है कि इस पुस्तक के छापने वाले और पढ़ने पढ़ाने वाले आनन्दपूर्व्वक रहैं और इसका परिपूर्ण सुख उठावैं॥

(श्रीरामदासानदास द्वारकादासपरमहंस)

रामायण मानसपरिचारिका ॥

श्रीगणेशायनमः॥

श्रीसीतारामाभ्यांनमोनमः ॥ श्रीजानकीबल्लभोविजयतेतराम् ॥ श्रीमत्परमाचार्यपरमविज्ञान शीलकविवृन्द भाकरश्रीगोस्वामीतुलसीदासायनमोनमः ॥

॥ दोहा ॥

महाराज अवधेश सुत श्रीमिथिलेश कुमारि ॥
चरणकमल बंदन करौं युगल रूप उरधारि १
सहितशिवाश्रीशिवचरण कमल अमलयुगधेय ॥
श्रीगणेश पद पद्मयुग श्रीमत् मारुत सेय २
श्रीवाणी श्रीआदि कवि विधिनारद सनकादि ॥
व्यासआदिशुकशेषसब कुम्भजादि जनकादि ३
औरौ जे रघुबीर के सेवक सांचे जानि ॥
चरणकमल बंदन करौं अतिहितमनक्रमबानि ४
रामपुरी मंगल मयी देत सकल अहलाद ॥
तहां प्रकट आचार्यभए स्वामी राम प्रसाद ५
श्री मत्परमाचार्य है तुलसिदास सुखसार ॥
श्रीमद्राम प्रसाद जो विदित तासु अवतार ६
तासु शिष्य के शिष्य हैं तासु शिष्य विख्यात ॥
स्वामी हरिप्रसादज्यहि देखि गर्ब छुटिजात ७
तासु शिष्यलघुमैं भयों नाम जानकी दास ॥
मानस को परिचारिका करन चहौं सुखराश ८
श्रीमतुलसीदास पद बंदिसुमिरि सियराम ॥
मानस की परिचारिका करौं यथा अभिराम ९

वर्णस्वल्प आशय अमित अर्थ करै मन बोधि ॥
श्रीमानस परिचारिका नामधरोशुभ बोधि १०

मू० । वर्णानामर्थसंघानां रसनांछन्दसा मपि ॥
मंगलानांच कर्त्तारौ वंदेवाणी विनायकौ १

टी० । वाणी विनायकौ द्वौ अहं वंदे कथंभूतौ वाणी विनायकौ वर्णानां अर्थसंघानां रसनां छन्दसां अपीतिनिश्चयेन कर्त्तारौ चपुनः सर्वमंगलानां कर्त्तारौ एतादृशौ वाणीविनाकौ अहंवंदे (इत्यन्वयः)॥

अथवार्तिक ॥ अहं कहे मैंजोहौं तुलसीदास सो वाणीजो है सरस्वती व विनायक जोहैं गणेश तिनको वंदतहौं कथंभूतौ कहे कैसे हैं वाणी विनायक कि बर्णानां कहे बहुत जो हैं अक्षर पुनः अर्थ संघानां कहे तिन्ह अक्षरनके अर्थके संघानां कहे समूह पुनः रसानांक हे तिन अर्थन का रस शृङ्गारादि पुनः छन्दसां कहे गायत्र्यादि व श्रीआदि जितने छन्द इन सब के कर्त्ता चपुनः सर्व मंगल के अपि इति निश्चय करिकै कर्त्ताहैं तिन सरस्वतीगणेशके हम वंदतेहैं ॥ इत्यर्थः ॥ १ ॥

भवानीशंकरौवन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ॥
याभ्यांविनानपश्यन्ति सिद्धाःस्वांतस्थमीश्वरम् २

टी० ।भवानीशंकरौ द्वौ अहंवंदे कथंभूतौ भवानी शंकरौश्रद्धाविश्वास रूपिणौ श्रद्धाविश्वासौ कथंभूतौ या विशेषणीयम् भवानीशंकरौ वंदनीय त्वं या श्रद्धाविश्वासौ विनासिद्धाः स्वअंतस्थितं ईश्वरंनपश्यंति ताश्रद्धा विश्वास रूपिणौ भवानीशंकरौ द्वौ अहंवंदे (इत्यन्वयः) ॥

अथवार्त्तिक ।।भवानी जो पार्वती शंकर जो महादेव तिनके अहंक हे मैंजो तुलसीदाससो वंदत हौं कैसे हैं भवानीशंकर श्रद्धा व विश्वास के स्वरूपै हैं वे कैसे हैं श्रद्धा विश्वास कि जौने विशेषण करि कै भवानी शंकरके वंदत हौं कि जा श्रद्धा विश्वासबिना अपने अन्तःकरण में जो स्थित है ईश्वर सो सिद्धाः कही सिद्धन को नपश्यंति नाम नहीं देखि परत है कैसो सिद्ध होइ जब वेद गुरु वाक्य में श्रद्धा होइ व तदनुकूल अपने कर्तव्यमें विश्वासहोइ कि यह जो वेद गुरु संमत मैं कछु करत हौं सो मेरो कल्याण करैगो ऐसादृढ़ विश्वास होइ तब जो अन्तःकरण में विराजमान ईश्वर सो देखिपरत हैअभिप्राय कि भवानीशंकरकी कृपा बिना ऐसी श्रद्धा विश्वास नहीं होतहै काहे कि श्रद्धाविश्वासके भवानी

शंकर स्वरूपही हैं श्रद्धारूपभवानी विश्वासरूप महादेव ऐसेजो भवानी शंकर तिन को हम वंदत हैं (शंका) वंदना तौ भवानीशंकर की व महत्व श्रद्धा विश्वास की सो कैसे बनै(समाधान) जब विशेषण में इतना महत्व कहे कि जा बिना स्वान्तः ईश्वरकी प्राप्ति नहीं तौ विशेष्य में अधिक महत्व भयो काहेते कि श्रद्धा विश्वास भवानी शंकरके विशेषण कहाहै । जो कहौ कि अनेक विशेषण भवानी शंकरके बड़े बड़ेहैं तिनको छोड़ि श्रद्धै विश्वास क्योंकहे तौ सुनो वन्दनाहेतु लिये होतहै सो इहां रामचरित करिबेकेहेतु वन्दनाहै तहां श्रद्धैविश्वासको प्रयोजन है ताते यहीविशेषणदिये ॥ २ ॥

वन्देबोध मयंनित्यं गुरुंशंकररूपिणम् ॥
यमाश्रितोहिवक्रोपि चन्द्रःसर्वत्रवन्द्यते ३

टी० । गुरुं अहंवन्दे कथम्भूतंगुरुं बोधमयं पुनः कथम्भूतंगुरुंनित्यंपुनः कथम्भूतगुरुंशंकररूपिणं कथम्भूतंशंकरं यः आश्रितःहिइतिनिश्चयेनवक्र चन्द्रःअपि इतिनिश्चयेन सर्वत्रवन्द्यते तद्स्वरूपिणंगुरुंयः आश्रितोशिष्य स्यवक्रंसर्वत्रवन्दनीयोभवत् एतादृशंगुरुंअहंवंदे (इत्यन्वयः) ॥

वार्त्तिक ॥ अहंकहे मैं जो तुलसीदास सो गुरुकोवन्दतहौं कैसे हैं गुरु बोधकहीज्ञानमयहैं फेरिकैसेहैं नित्यहैं नित्यकहो सनातनहैं फेरि कैसे हैं शंकरस्वरूप हैं कि जैसे शंकरकेआश्रितह्वैकै टेढ़ोचन्द्रमा द्वितीयाको सर्वत्र वन्दनीयहोतहै तैसे गुरुके शरणहोइ तौ कैसो टेढ़शिष्यहोइ सो बन्दनीय होतहै ऐसेजोहैं गुरु सो मैं वन्दतहौं जाते हमारी टेढ़ीबुद्धि श्रीरामयश गावने योग्यहोइ ॥ ३ ॥

सीतारामगुणग्राम पुण्यारण्यविहारिणौ ॥
वन्देविशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ४

टी० । कवीश्वर कपीश्वरौ द्वौ अहंवन्दे कथम्भूतौ कवीश्वर कपीश्वरौ सीतारामगुणग्राम पुण्यारण्यविहारिणौ पुनः कथम्भूतौकवीश्वरकपीश्वरौ विशुद्धविज्ञानौ एतादृशौकवीश्वरकपीश्वरौअहंवन्दे (इत्यन्वयः) ॥

वार्त्तिक ॥ अहंकहे मैंजो तुलसीदास सो कवीश्वर जोहैं बाल्मीकि व कपीश्वरजोहैं हनुमान्जीसोदोनोंके वन्दतहौं कैसेहैंबाल्मीकिहनुमान्जी कि सीतारामके गुणनकेग्राम कहीसमूह सोई है एक पुण्यका वन तिस

वनके बिहारीहैं नाम रातिदिन श्रीसीतारामके गुणनमें रहतहैं फेरिकैसे हैं कि विशुद्धविज्ञानहैं जिनकानाम विशेष ज्ञानकहो परमात्माविषे आत्माकी वृत्तिलयकरना ऐसे जो बाल्मीकि व हनुमान् तिनको वन्दत हौं जाते हमहूं बिशुद्धविज्ञानमें प्राप्तह्वैकै सीतारामके गुणगावैं ॥४॥

उद्भवस्थिति संहार कारिणीं क्लेशहारिणीम् ॥
सर्वश्रेयस्करींसीतां नतोहंरामवल्लभाम् ५

टी० । सीतांअहंनतः कथंभूतांसीतां उद्भवस्थिति संहारकारिणीम् पुनः कथंभूतां सीतां क्लेशहारिणीम् पुनः कथंभूतांसीतां सर्वश्रेयस्करीम् पुनः कथंभूतांसीतां श्रीरामवल्लभां एतादृशीं सीतां अहंनतः (इत्यन्वयः)॥

वार्तिक ॥ अब श्रीमती श्रीजानकीजीकी वंदनाकरतेहैं अहंकहे मैंजो तुलसीदास सो श्रीजानकीजीको नमस्कार करतहूं कैसीहैं श्रीजानकीजी उद्भवकहो उत्पत्ति स्थितिकहीपालन संहार कहो नाश तीनिउं की कर्तृ हैं आशयकि त्रिदेवकीकारणहैं फेरिकैसीहैं श्रीजानकीजी कि सर्वक्लेशको हरणहारीहैं पुनः कैसीहैं श्रीजानकीजी सर्वश्रेय जो कल्याण तिनकी कर्तृहैं फेरिकैसीहैं श्रीजानकीजी श्रीरामबल्लभा कहे प्रिया हैं देखिये तौ श्रीगोस्वामीजी रामबल्लभा कहिकै कादिखावाहै किजबकहा कि उद्भव स्थिति व संहारकी कर्तृहैं तब यह निश्चय भयो कि श्रीजानकीजी मूल प्रकृतिहैं ता निवारणार्थ क्लेशहारिणी व सर्व कल्याणकी कर्तृकहा तब यह निश्चयभयो कि महालक्ष्मी वा विद्या स्वरूपहैं ता निवारणार्थ कहा कि श्रीजानकीजी श्रीरामबल्लभाहैं याकहनेसेकहूं शब्दजाइनहीं सकतहै श्रीरामस्वरूपै निश्चयभयो ताते इनसबकी श्रीजानकीजी कारणहैं इस बातका खुलासा इसीग्रंथमें देखिलेब ठौरठौरमें—गिरा अर्थ इसदोहामें पुनः सती मोहप्रकरणमें पुनःस्वयंभुवमनुकेतपकेप्रकरणमें पुनःबाल्मीकि जब स्वरूप कहाहै पुनः राज्याभिषेक समय सर्वत्र देखिलेब अच्छीतरह विचारिकै इत्यर्थः ॥ ५ ॥

यन्मायावशवर्त्तिविश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुराः यत्सत्वादमृषैवभातिसकलं रज्जौयथाहेर्भ्रमः ॥ यत्पादःप्लवमेकमेवहिभवाम्भोधेस्तितीर्षावताम् वन्देहंतमशेषकारणपरंरामाख्यमीशंहरिम् ॥ ६ ॥

टी० । ईशंअहंवंदे कथंभूतंईशं रामाख्यं कथंभूतंरामाख्यईशं हरिंपुनः कथंभूतंरामाख्यईशं यन्मायावशवर्तिविश्वंअखिलं ब्रह्मादिदेवासुराः पुनः कथंभूतं रामाख्यईशंयत्सत्वादमृषैवभातिसकलंसंपूर्णंप्रपंचंमृषैव अमृषंव भातिकैवरज्जौयथाहेभ्र्मः पुनः कथंभूतंरामाख्यईशं भवांभोधेस्तितीर्षावतां एकंएव हिइतिनिश्चयेन यत्पादःप्लवंपुनःकथंभूतंरामाख्यईशंअशेष कारणपरं तं रामाख्यईशं अहंवंदे (इत्यन्वयः)॥

वार्तिक॥अब श्रीरामचंद्रकी वंदना करतेहैं कि अहंकही मैंजोहौं तुलसीदास सो ईश्वरकेनमस्कारकरतहौं कवनईश्वर के नमस्कार करतहौं कि रामाख्यं जेहिईश्वरका रामऐसानामहैसोरामईशकसेहैं कि यन्मायानाम जेकरीमायाके बश ह्वैकरिकै वर्तत हैं विश्वजो संसार व ब्रह्मादि देवता व असुरकही दैत्यराक्षससंपूर्ण जेकरीमायाके वशवर्त्तीहैं फेरिकैसेहैं रामाख्य ईश कियत्सत्वात् नाम जेकरीसत्वा ते मृषा जोहै संसार सो सत्यकीनाईं शोभितहै जो कहो कि जो असत्यहै सो कैसे सत्यदिखातहै तौ यथानाम जैसे रात्रिमें रज्जुजो रस्सी तामें अहिजोसर्प ताकी भ्रांतिहोतीहै सर्पके सत्वा ते फेरि श्रीरामईश कैसे हैं कि भवजोहै संसार सोईअंभोधिनाम समुद्रहै सो तितीर्षावतांकही सोभवसमुद्रतरिबेकीहै इच्छाजिनके तिन को श्रीरामचन्द्र के चरण एक प्लवकही नौकाहैं एवकही वही चरणही निश्चय करिकै पारकरिबेको फेरि श्रीराम ईश कैसेहैं अशेष कारणकही संपूर्णकारणोंसेपरेहैंअशेषकहनेसे यहजनायो कि जितने एककेएककारण हैं नाम जहाँतक कारणहैं तिनसबकेपरेहैं एककेएक कारणकोहैं सोसुनो यह जगत् जोहै सो कार्य तेहिके कारण ब्रह्मा विष्णु शिव काल कर्म गुण स्वभाव एते जगत्के कारणहैं इनसबका कारणमूलप्रकृतिहै तेहिकेकारण महाविष्णुहैं जिनको महापुरुष कही तिनहूंसे परे श्रीरामचन्द्रजीहैं इस के प्रमाण बहुतसेहैं कहांतक लिखैं एकश्रुति लिखतेहैं (यस्यांशेनैवब्रह्मा विष्णुमहेश्वरापिजातोमहाविष्णुर्यस्यदिव्यगुणाश्च एककार्यकारणयोःपरः परमपुरुषोरामोदाशरथीवभूव इतिअथर्वण उत्तरार्द्धे) पुनः इसी ग्रंथ में प्रमाण (चौपाई) उपजहिं जासुअंशते नाना । शम्भु बिरञ्चि विष्णु भगवाना ॥ फेरि श्रीरामईश कैसेहैं हरिंकही हरिहैं अपने भक्तनके सबदुःख हरिलितेहैं तंरामाख्यईशं अहंवंदे ऐसे जे श्रीरामाख्यईशहैं तंकहीतिनको हम नमस्कार करतेहैं अहर्निशि कहीरातिदिन बारबार ॥ इत्यर्थः॥ ६ ॥

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्रामायणेनिगदितंक्वचि

दन्यतोपि स्वांतःसुखायतुलसीरघुनाथगाथा भाषानिबद्धमतिमंजुलमातनोति ॥ ७ ॥

टी०। यद्रामायने नानापुराणनिगमागमसंमतं निगदितंतद्रघुनाथगाथा तुलसीभाषानिबंधं आतनोति कोर्थः विस्तारयति कथंभूतारघुनाथगाथा अतिमंजुलंमंजुलंकोर्थः निर्मलं तत्प्रसंगे क्वचित्अन्यतः अपिनिबंधंकस्मै प्रयोजनायस्वान्तःसुखाय (इत्यन्वयः) ॥

वार्तिक ॥ श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं कि यद्रामायने कहे जवने रामायण में नानापुराण औ निगम जो वेद औ आगम जो शास्त्र तिनके संमत निगदितं कहे कथित हैं तवनी रघुनाथ गाथाको हम भाषा करि विस्तार करते हैं कैसी है रघुनाथगाथा अति मंजुलम् कहे निर्मल है तत्प्रसंगे कहे तवनी रघुनाथगाथा के संग में क्वचिदन्य कहे क्वचित् क्वचित् रामायण से अन्यतः नाम और जो कछू रुचै गो सोभी कहौं गो कस्मै प्रयोजनाय भाषानिबद्धंकहे काहेकोभाषाकरतेहैं स्वान्तःसुखायकहे अपने अन्तःकरणके सुखकेहेतु इति अबजो कोउ कहै कि वह कवन रामायण है जो गोसाईंजी भाषाकीन्हहै सोसुनौ (श्लोकः) यत्पूर्वंप्रभुना कृतंसुकबिनाश्रीशंभुनादुर्गमम् श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्तोतुरामायनम् ॥ मत्वातद्रघुनाथनामनिरतं स्वांतस्तमःशांतये भाषाबद्धमिदंचकार तुलसीदासस्तथामानसम्॥१॥अस्यार्थः। यद्रामायणेप्रभुनापूर्वंकृतंकथंप्रभुनासुकविनाकथं सुकबिना श्रीशंभुनामित्यर्थः कथंभूतंरामायनेदुर्गमं पुनः कथंभूतंरामायने श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशंप्राप्नोतु पुनः कथं भूतं रामायनं रघुनाथनामनिरतं एवंमत्वातद्रामायनं तथा मानसम् मानसम् कोर्थः शंभुनामनसाहिस्थितंमानसं तुलसीदासः इदंभाषाबद्धं चकारकस्मै प्रयोजनाय स्वान्तस्तमःशान्तये (इत्यन्वयः) ॥

अथवार्तिक। श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी कहतेहैं कि यद्रामायनंकही जवनिरामायनकोप्रभु जो श्रीमहादेवसुंदरकवि पूर्वहीकीनहै सोरामायन कैसनहैअतिदुर्गमहै दुर्गमकही दुःखौकरिकै गम्यनहीपुनः कैसीहै रामायनकिरामचन्द्रके चरणारविन्दको भक्तिप्राप्ति करनेवालीहै अनिशंकही रातिदिनसर्वजीवनको फेरिकैसीहै रामायनकिश्रीरामनाम करिकै निरतंनाम युक्तहै अभिप्राय कि जैसेकहत सुनत श्रीरामभक्तिप्राप्तिहोतिहै तैसे जिस रामायणके कहतसुनत श्रीरामनाममें प्रीतिहोतिहै एवंमत्वा नाम ऐसा

मानिकै तद्रामायनंनाम तवनरामायण तथा मानसं कही जवन रामायण को रचिकै महादेवजी अपनेमानसमें राखाहै ताते मानसकहातत्प्रमाण (चौपाई) रचिमहेशनिजमानसराखा । पाइ सुसमय शिवासन भाषा॥ ताते राम चरित मानसवर । धरेउ नाम हिय हेरि हरषि हर ॥ इति ॥ तिसको मैंजोहौं तुलसीदास सो इदंभाषा वद्धंचकार कही यह भाषा प्रबंध कीनहै कस्मै प्रयोजनाय कही काहेको भाषाकीनहै कि स्वांतस्तमः कही अपने अंतःकरण की तमजो है अंधकार अविद्याके शांतयेकही नाश हेतु इत्यर्थः ॥७॥

ज्यहिसुमिरतसिधिहोइ गणनायक करिवरबदन ॥
करौ अनुग्रह सोइ बुद्धिराशि शुभगुण सदन ८

सोरठार्थ ॥ जोगणेशजीके सुमिरत मात्र कामना सिद्धि होती है सो गणेश हमारेपर अनुग्रहकरो सो कौन गणेश जिनका श्रेष्ठ हाथीका ऐसा मुखहै सोकैसेहौ बुद्धिकीराशि व शुभगुणकेसदनशुभगुणकही ज्ञान वैराग्य भक्ति योग दया करुणा शान्ति सन्तोष इत्यादि गुणन के स्थानहौ सो अनुग्रह करो जाते हम को शुभ गुण प्राप्तिहोइं तब श्री सीताराम चरित्र गाइबे योग्यहोहिं इहां गणेशजीका मंगलाचरणहै शंका न करना ग्रंथके प्रारंभमें गणेशजीका मंगलाचरण-होतहै यहपरंपरा है इसमें कुछ उपासना की न्यूनता नहींहै ॥ ८ ॥

मूक होहिं बाचाल पंगु चढ़ैं गिरिवर गहन ॥
जासुकृपासोदयाल द्रवौसकलकलिमलदहन ९

टी० । यह सोरठा कोऊ भगवान् में लगावतेहैंकोऊ सूर्य में सो नाम तौ किसूकाहै नहीं गुण क्रियाद्वारे से जानाजाइ सो जो गुण क्रिया कहा है सो दूनहू में घटतहै विष्णुमें गीताके श्लोक करि सबै जानैहैं परंतु जो विष्णुमें कही तो आगे विष्णुको कहैंगे जो कहीकै दूनऊ सोरठा विष्णु इमें लगत हैं तौनहीं बनत काहेकि क्रिया द्वै हैं सो दयाल द्रवहु व करो सो मम उर धामतौ एकपदमें एक कर्मके साथ द्वै क्रिया नहीं होतीं जो कहीकी स्थान भेद करि एक रमावैकुण्ठ विष्णु को कहा व क्षीर शायी श्रीमन्नारायण को कहातौ यहभी नहीं बनत काहेकी गणेश महेशकेबीच में विष्णुकी वंदना नहीं सुनीहै कितो ब्रह्मशिवके बीचमें कै पंच देवतन

के बीचमें सुनीहै ताते यह सोरठा पंचदेवता के मंगलाचरण करिसूर्यै में लगत है काहे कि श्रीगोस्वामीजी श्री अयोध्याबासिन के मत में हैं अयोध्याबासी पंचदेवता का पूजन करि सीताराम के चाहते हैं प्रमाणं अयोध्याकाण्डे (चौपाई) करिमज्जनपूजहिंनरनारी । गणपतिगौरि पुरारितमारी ॥ रमारमणपदवंदिबहोरी । विनवहिंअंजलिअंचलजोरी ॥ राजा रामजानकीरानी । आनँदअवधिअवधरजधानी ॥ इसीरीतिसे गोसाईंजी जो पंचदेवताके विनयकरि सीताराम यशगाइबो मांगतहैं सो दयाल सूर्य हमारेपरद्रवहु कोदयाल मूकहोंहिवाचाल पंगुचढैंगिरिवरगहन जासु कृपा सो देखिये तौ बालक महामूक व पंगुहै सो जिनकी कृपासे दिन दिन वृद्धिहोतहै तब वहीबालक जो एक मात्राउच्चारण करिबेकीसमर्थ न रही सो वेदवक्ताहोतहै व जो पग्गभरि चलनेकीसमर्थ नहीं सो नदी पर्वत वनसबमें चलाजातहै सो सूर्य अपनेदिननकरिकै पोषतेहैं फेरिकैसे हैं कलिमलिदहन सो दयालद्रवहु जाते रामयशगाइबेमें मैंजो मूकपंगुहौं सो समर्थ होउं व कलिमल जो रोग सो निवृत्तहोइं तब रामयशगावों जो कोई कहै कि एतोसमर्थ सूर्यमेंकहांकहाहै तौ बिष्णुपुराण व आदित्य हृदयमें देखिलेव अथवा महात्मनसे अससुनाहै कि सूर्यभगवान् गरुड़जी के पंखनको वेदपढ़ायो है सो पंखनियत मूक हैं व अरुण जो हाथपाउं दोनोंकेपंगुतिनको इतनीकृपाकियें किअपनोसारथीबनाये अपरपूर्ववत् ६॥

नीलसरोरुहश्याम तरुणअरुणवारिजनयन ॥
करोसोममउरधाम सदाक्षीरसागरशयन १०

टी० । जो सदाक्षीरसागरमें बसतेहैंसो हमारेउरमें धामकरौ धामकही घरवनावो श्रीसीतारामबलिबेहेतु सोकैसेहैं क्षीरसायीभगवान् नीलकमल की तद्वत् हैं श्यामनवीन लालकमल की नाईं नेत्र सो धामकरो व बसो जाते रामयशगावें इत्यर्थः ॥ १० ॥

कुंदइंदु समदेह उमारमणकरुणायतन ॥
जाहिदीनपरनेह करहुकृपामर्दनमयन ११

इतिप्रथमप्रकरणम् ॥ १ ॥

टी० । अब चौथेसोरठामें शिवशक्तिका मंगलाचरण करतेहैं ध्वनिकरिकै अर्थ फलितहै कि उमा उमारमण कृपाकरहु कैसेहैं उमा उमारमण कि

कुन्दइन्दु समदेह पीत कुन्दके पुष्प समकोमल सुगंध मकरन्द मयउमा जोको तनुहै वो चन्द्रमा समश्वेत प्रकाश अमृत मय उमारमणकोतनु है फेरि कैसहैं युगलकी करुणाके आयतन कही स्थान हैं फेरि कैसेहैं कि जिनको दीनही पर नेह है फेरि कैसेहैं मयनजो काम तिसके मर्दन हैं भला शिवजीतौ कामको जारि कै मयन मर्दनभये पार्वतीजी कबमयन मर्दन भई सो सुनो शिवतो जराये तब मयन मर्दन भये वो पार्वतीजी बिना जरायेही मयनको मर्दन कियेहैं कैसेजानीकि जब सप्तऋषी कहा कि (अबभा झूठ तुम्हार प्रणजारेवकाममहेश) तबपार्वती जी कहाकि तुमरे जानकामअबजारा वो हमरेजानसदाशिव योगी ॥ अकामअभोगी यह वचन से जानाकि उमा पहिलेसे मयनको मर्दन कियाहै ऐसा अर्थ पंचदेवताके पूरणार्थ उमारमणके शब्दसे कहा ॥ ११ ॥

इतिश्रीरामचरित्रमानसपरिचारिकायांतमिष्टीवृन्द नामप्रथमकैंकर्य ॥ १ ॥

बन्दौं गुरुपद कंज कृपासिंधुनर रूपहरि ॥
महामोह तमपुंज जासुवचनरविकरनिकर १

टी० । अबगुरुचरण के बंदना करतेहैं बन्दौं गुरुपद कंजकैसेहैं पदकंज कृपा सिन्धुहैं फेरि कैसेहैं देखिबे को नररूप हैं भाव कि नरके ऐसेपद हैं परन्तु वास्तव हरिहैं सर्व दुःखके हरनेवाले हैं फेरि कैसे हैं कि महा-मोह जोहै सोतमको पुंजहै सो जासुकही जेहिते वचन कही नहींबचने पावतहैं काहेते कि रवि कर निकर की समूहरबिकिरणकी बराबरिचरण में प्रकाशहै सोनखके साथ कहैंगे अथवा कृपासिन्धु आदि स्वरूपही का विशेषण है ॥ १ ॥

बन्दौं गुरुपद पदुम परागा सुरुचि सुवाससरसअनुरागा २

टी० । अब श्री गोसाईं जी गुरुपद पदुमकी पराग जो धूरीहै तिसको बन्दना करतेहैं कि गुरुपद कमलकी पराग जो धूरी सो बन्दौं कैसी है धूरी कि जिसमें सुन्दरि रुचिहै वो सुष्टु बास है वो श्रेष्ठ अनुराग है ऐसी धूरीहै देखियेतौ गुरुपद को कमलकी उपमा काकहिये जिस पदमें कछू से धूरी लपटिगईहै तिसमें कमल को धर्म बर्त्तमान है धर्म काको कही गुण स्वभाव क्रिया यहतीनि मिले धर्मकही जो कमलमें रुचिहै सोगुणवो जो कमलमें सुगन्धहै सो स्वभावहै वो जो कमलमें रसहै सोक्रिया है यह

तीनिउ वस्तु धूरी में कहाहै कि सुरुचि वरन कमलमें रुचि है धूरीमें तं सुरुचि है वो सुवासहै वोश्रेष्ठहै अनुराग सोईसुन्दर रसहै सोआगेधूरीकं विशेषण में कहतेहैं कि अमर मूरी की चारु चूरण मय है भव रोग जं अविद्या तिसके परिवार जो कामक्रोधादि तिनको नाश करिबेको यहरुचि नाम दीप्तिहै वो सुकृत रूप शंभुतनु को बिमल करिऐश्वर्यउज्ज्वल मंगल मोदके करतीहै यह सुवास है वो मन मुकुर के मल हरि गुणन के बश करतीहै यहश्रेष्ठ अनुराग नामरसहै अथवा अन्वयसे पद लगावनाकिगुरु पद पराग पद्म बन्दौंगुरुके चरणकीपराग जोहै धूरी कमल तद्वत्तिसको बन्दत हौं कमलमें द्वै धर्म हैं सुगन्ध वो मकरन्द तैसे धूरीमें द्वै धर्म है सुरुचि वो अनुराग सो सुरुचि जोहै सोसुगन्ध है औअनुराग जो है सो सम्यक्प्रकारकोरसहै ॥ २ ॥

अमियमूरि मय चूरणचारू शमन सकल भवरुज परिवारू ३

टी० । यह स्वरूप कहि अब विशेषण कहते हैं कि वह गुरु चरण रज कैसीहै कि अमृतमूरि जो जड़ीहै तिसकी चारुनाम सुन्दर चूर्ण समस्त भवरुज जो काम क्रोध लोभ मोहमद मतसर्य इत्यादि तिनकोशमनकही नाश करिबे को ॥ ३ ॥

सुकृत शम्भुतन बिमल विभूती मंजुल मंगल मोद प्रसूती ४

टी०फेरिवह धूरीकैसीहै कि सुकृतजो है समस्त पुण्यसोशंभुकही शिव तनुहैतिसके विमल करिबेको विभूतिहै इहांविपर्यय अलंकारकरि कहतेहैं किजैसेशंभुतनुमें लगिकै विभूति शोभितहोतिहै तैसे गुरुचरण रजविभूति में लागिकरिके समस्त सुकृतरूपी शंभुतन शोभित होतहै जिस सुकृतमें गुरुचरण रजनहींपरचो सो सुकृततौहै पर शोभित नहींहै फेरि कैसीहै धूरीमंजुल मंगलमोदकी प्रसूतीनाम माताहै तहां एकमलिन मंगलमोद है व एकमंजुल मंगल मोदहै मलिन मंगल मोद कौन है कि विषयवस्तु पाइकै बाहर इन्द्रिनके सुखसों मंगल भीतरइन्द्रिनके सुखसों मोदयह मलिन मंगल मोदहै व जो परमेश्वर तत्त्व पाइकै बाहर भीतर जो सुख सो मंजुलमंगल मोदहै तिनकी प्रसूतीनाममाताहै ॥ ४ ॥

जनमनमंजु मुकुरमलहरणी कियेतिलकगुणगणबशकरणी ५

टी०।फेरि वह धूरीकैसीहै कि जन जोसमस्तप्राणी तिनकामनसोई मंजु मकुरकही दर्पणहै तिनके मलहरणीहै देखिये तौ मंजुमुकुर भी कहा व

मलहरनीकहा तौ मंजुतामें मलकाहै तहां अपने अपने वर्णाश्रम के धर्म में रत सोई मंजुहै व भगवत् भागवत धर्मसे विमुखसो मल तिसमलके हरनेवालीधूरीहै फेरि कियेतिलकनाम तिसधूरीके धारण करनेसे समस्त गुणकेगण बशहोतेहैं कौनगुण भगवतसंबंधी ज्ञानवैराग्य योग दया करुणा शांति संतोष शील इत्यादि व यही गुणनमें चारिप्रयोग भी कहाहै कहा कहाहै सो सुनो अमिय मूरिमय यह चौपाई में मारण प्रयोग व वैद्यक सिद्धकिया व सुकृत शंभुतन यह चौपाई में मोहन प्रयोग सिद्ध किया व जनमनमंजु यह आधी चौपाईमें उच्चाटन प्रयोग सिद्धकिया व किये तिलक यह आधीचौपाई में वशीकरण प्रयोग सिद्धिकिया (इत्यर्थः) ५ ॥

श्रीगुरुपदनखमणिगणज्योती सुमिरतदिव्यदृष्टिजेहिहोती ६

टी० । अब श्रीगोसाईं जी गुरुपदनख के बन्दना करते हैं देखिये तौ अबहीं रजका प्रकरण पूरानहींभयो बीचमें नखकी वंदना करनेलगे सो यह भाव है कि रजकरिकै कामादि रोगनाश भयो व सुकृत शोभितभयो व उज्ज्वल मंगलमोद भयो व मलहरणभयो गुणगण बशभये परन्तु प्रकाशत्व न देखे तबरजके नजदीक में नखनका प्रकाशदेखि वंदनाकरने लगे प्रकाशहेतु दोनोंका प्रकरण एक संगही समाप्त करेंगे कहतेहै कि श्रीगुरुपदके नखमणिगणकी ज्योतिहै जेहिके सुमिरत दिव्यदृष्टि होतिहै तेहिनखको बन्दौं यद्यपि पदमें बंदौंनहींहै तद्यपि गोसाईंजी के परंपरा करिकै कहा कौन परंपरा कि गुरुं अहंवंदे व बन्दौं गुरुपदकंज व बन्दौं गुरुपदपदुमपरागा यहतीनिपद बंदन व नखके साथ नहीं यामें गोसाईं जी यह चमत्कार दिखाये कि रज व नखका मेलकरा क्या मेलकिरजके साथ बन्दौं व नखकेसाथ श्री यहसे जानागया कि छंदकेहेतु एकएक को एकएकके साथ कहा परंतु एकएकके साथ दोनोंचाही सो रजकाप्रकरण न लगनेदिये बीचहीमें नखका विशेषण कहनेलगे सो अर्थ इसतरहका है कि श्रीगुरुपदरज बन्दौं व श्रीगुरुपदनख बंदौं यही दोनोंका मिलाप फेरि दोहामें कहैंगे ६ ॥

दलन मोह तम सोसु प्रकाशू बड़ेभाग उर आवत जासू ७

टी० । बाहरदृष्टिको प्राकृतजानि नखमणिगण ते दिव्यकिये अब भीतरके नेत्रजोहैं ज्ञान वैराग्य तिनको मोहरूप तमकरि मुंदेजानिउसीनख को सूर्य्यकरि कहतेहैं कि श्रीगुरुपदनख कैसेहैं कि मोह तम दलिबेको

सोसुनामसूर्य हैं इहां क्रियानाम कहाहै काहेते कि सर्वरसके शोषनेवाले सूर्य हैं ताते सोसुनाम है परन्तु जिन प्राणिन के बड़भाग होहिं तिनके उर में आवतहैं ॥ ७ ॥

उघरहिं विमलबिलोचनहियके ॥ मिटहिं दोषदुखभवरजनीके ८

टी० । उघरहिं इति जब ऐसो नखरूप सूर्यहृदयमेंआवे तब का होइ तब उघरहिंकहो जो ज्ञान वैराग्य रूप नेत्र मुंदेहैं सो खुलहिं तब भव जो संसार सोईहै रजनी नाम रात्री तिसकादोष दुःख मिटहि रजनीका दोष दुःख कथाहै कि अंधकार सो दोष व चोर सर्पादिकी भय सो दुःख व भव रजनीका अविद्या सोदोष जा अविद्यामें अपनपौ भूलिगयो व तिस में काम क्रोधादि सो चौर सर्पहैं सो दुःख सब मिटि जातहै ॥ ८ ॥

सूझहिं रामचरितमणिमानिक ॥ गुप्तप्रकटजहँ जोजेहिखानिक ९

टी० । जब ज्ञान वैराग्य नेत्र खुलैं व भव रात्रिके दोष दुख मिटैं तब का होतहै कि श्रीरामचरित जो मणिमाणिक रूप सो सूझहिं नाम देखि परतहैं गुप्त ठौर के व प्रकट ठौरके गुप्त ठौर कौन प्रकट ठौर कौन सो सुनो मणि सर्प्प ते होतीहै सो सर्प्प गुप्त यद्यपि संसार में है तदपि दैव योगते मिलतहै व माणिक पर्वत ते होतहै सोपर्वत प्रकटहै उसमें माणिक गुप्तहै भेदीसे मिलतहै ताते प्रकटहै व मणिको कारण गुप्तहै वहां किसू भेदीकी गम्यनहीं केवल ईश्वर कृपाते प्राप्त होतहै तैसे अनुभव वाले संत सोई सर्पहैं सो है जगत्‌ही में परन्तु कोई जानत नहीं उनहीं के अनुभवमें जो सीतारामचरित्र सो मणि सो अति गुप्तहै जब सीताराम कृपा करहिं तब मिलहि उसमें कोईभेदी नहीं व वेद पुराण संहिता सो पर्वत प्रकटहैं उसमें रामचरित्र माणिकरूप गुप्त सो पंडितजन भेदिन से मिलतहै सो जब गुरुपद नख उरमेंआयो तब सब गुप्तप्रकट ठौरके मणि माणिक रूप रामचरित्र सो देखि परतेहैं ॥ ९ ॥

यथासुअंजनआंजिदृग साधकसिद्धसुजान ॥
कौतुकदेखहिंशैलवन भूतलभूरिनिधान १०

टी० । इस दोहामें फेरि रज नखका मिलाप कहते हैं दीप देहरी के न्याय करिकै ऊपर नखका विशेषण कहते आवते हैं जब कहा कि राम चरित मणि माणिक सूझहिं कथा यथा सुअंजन दै सुजान शैलवन भूतल में भूरि स्थानके कौतुक देखतेहैं तथा फेरिदोहाके नीचे यह चौपाई कहा

कि (गुरुपदरज मृदुमंजुल अंजन । नयनअमीदृगदोष विभंजन) कैसे जैसे सुअंजन कही सिद्धांजनको आंजि नाम देइकरि साधक जो साधना करनेवाले सोई साधना सिद्धभये सो सिद्ध व सिद्ध अंजन बनाया सो सुजान तब अंजन देइ करिकै कौतुककही तमासा देखतेहैं कहां शैलवन भूतल जिस स्थानमें जौनतरहका लीला भूरिनाम समूह होताहैसोसब देखतेहैं तैसे गुरुचरण रज मृदुलमंजु अंजनके ज्ञान वैराग्यरूप नेत्रन में देइकरि नाम धारण करिकै तब रामचरित कौतुकको देखतेहैं कौन शैल कौन वन कौन भूतल सो सुनो कि वेद पुराण शास्त्रसंहिता सो शैलतामें जो रामचरित व संसार सो वन तिसमें अंतर्यामी रूप रामके चरित व संतका हृदय सो भूतल तिनके अनुभवमें जो रामचरित सो जहां जिस रंगकाहै सो सब देखतेहैं ॥ १० ॥

गुरुपदरजमृदुमंजुलअंजन ॥ नयनअमियदृगदोषविभंजन ११

टी० । गुरुपद रज जोहै सो मृदुनाम कोमल व मंजुल नाम उज्ज्वल अंजनहै अंजन का नाम होताहै सो इस अंजनका नाम नयना अमी सो कैसोहै अंजन कि दृग दोष विभंजन दृग जो नेत्र तिसके दोष जो माड़ा फूली तिमिर मोतियाबिंद इहां ज्ञान बिराग नेत्र तिनमें अहं सो दोष तिनको विशेष भंजन करैहै ॥ ११ ॥

तेहिकरिविमलविवेकविलोचन॥ बरणौंरामचरितभवमोचन१२

इतिद्वितियप्रकरणः ॥ २ ॥

टी० । तेहि गुरुपदरज अंजनकोज्ञानबिराग नेत्रमेंकरि नामदेइनेत्रनको बिमलकरिकै तब श्रीरामचरित जो भवमोचन तिसको बरणौं यहतीसरी असंगति अलंकारहै (उदाहरण) और काज आरंभियेऔरै काजैदौर॥ १२ ॥

इतिश्रीरामचरित्रमानसपरिचारिकायांश्रीगुरुपदपदरजपदनख विशेषणवंदनानामद्वितियकैंकर्यः २ ॥

बन्दौंप्रथम महीसुर चरणा मोहजनितसंशयसबहरणा १

टी० । अब श्रीगोसाईंजी महाराज ब्राह्मणनके चरणके बन्दनाकरतेहैं कि प्रथम महीसुर जो ब्राह्मण तिनकेचरण बन्दौं कैसेहैं ब्राह्मणनके चरण कि मोहजनित नाम मोहसेउत्पत्ति संशय तिसके हरनेवाले हैं (शंका) अनेक बन्दनाकरि आयेहैं अब प्रथमपद कैसेबने (उत्तर)यह बंदनाकेसाथ

प्रथम नहींहै ब्राह्मणकेसाथहै कि प्रथमपूजनीय जोब्राह्मण तिनकेचरणबन्दौं (शंका) प्रथम पूजनीय तौ गणेशहैं (उत्तर) सोऊ ब्राह्मणोंकेद्वारागणेशपूजनीयहैं जब जन्म होताहै तब प्रथम ब्राह्मणै नामकरण व नक्षत्र का फल गनिकै पुजावतेहैं तब गणेशजीको पूजनहोतहै ताते ब्राह्मण सर्व कार्यमें व सर्वस्थानमें व सर्वते मुख्यहै पहिले सर्वकर्म में ब्राह्मणै को अधिकारहै ताते ब्राह्मणको प्रथम पूजनीय कहा है अथवा प्रथम प्रकरण के साथहै कि श्रीगोस्वामीजी वाणीविनायकसेले गुरुपद नखताईं बंदनाकरि सो है प्रकरण समाप्तकरे जब तीसरा प्रकरण उठाये तब प्रकरणके प्रथमही महीसुर बंदे ॥(इत्यर्थः)१ ॥

सुजन समाजसकल गुणखानी करौं प्रणाम सप्रेम सुबानी २

टी० । अब श्रीगोसाईंजी सुजनजो सन्तजन तिनकी समाजकेबन्दना करतेहैं कैसीहै सुजनसमाज कि सर्वगुणनकी खानिहै तिनको सप्रेमकही प्रेमसंयुक्त व सुष्टुवाणीसे प्रणाम करतहौं ॥ २ ॥

साधुचरितशुभसरिसकपासू निरसबिशदगुणमयफल जासू३

टी० । कैसोहैसाधुचरित शुभहै कपासकेसदृश कपासका कैसाहैचरित्र निरस नाम रसरहित व विशद व जासुनाम जा कपासका फल गुणमय कहो गण जो तागतन्मयहै तैसे साधु विषयरसते निरसहैं व उज्ज्वलकर्म भगवत्सम्बन्धी व जिनकाफल गुणमयहै ॥ ३ ॥

जो सहिदुख परछिद्र दुरावा बन्दनीयजेहि जग यशपावा४

टी० । जो कपास व साधु अपनेऊपर अनेकदुःख सहिकै पराया छिद्र छपावतेहैं ताहीतें जगमें बन्दनीय व यशको प्राप्तहैं कौन दुःख सहिकै पराया छिद्रछिपावतेहैं सो सुनो कपास पहिलेचरखीमें ओटीजातिहै पुनि धुनीजातिहै पनि कातीजातिहै पुनि बिनीजातिहै इतनादुःख सहि पराये को छिद्र जो लज्जा सोछिपावतहै तैसे साधु प्रथमवर्णाश्रम वोहित कुटुम्बको छोंड़े पुनि अनेक शुभकर्म जिनमें प्रथमदुःखहै पुनि अनेक तीर्थव्रतकरि कष्टकरतेहैं तब जो कहूं एक दिन तिन्ह साधुनका सत्कार किया केवल अन्न जलमात्र तौ तिन्हके अनेकनपाप छूटिजातहैं इतनाकष्टपरायेकेहेतु सहतहैं जो कहो कि साधु जो कर्म करतेहैं सो परायेकेहेतु हैं तौ साधुनके कुछ न रहा सो सत्यहै तहांसाधु तौ पहिलही शुभाशुभ छोंड़ि भगवत् शरण भयेहैं निरवासिक हैं अब जो कछू कर्मकरतेहैं काहेते कि शुभकर्म करना साध-

नका सहजधर्म है परन्तु हैं कर्मनसे निरवासिक ताहीसे जो कर्म करतेहैं सो परार्थेअर्थहैं आप तौ शुद्ध भगवत् शरणहैं ताहीते पूजनीयहैं ॥ ४ ॥

मुद मंगलमय सन्त समाजू जो जगजंगम तीरथराजू ५

टी० । साधुनकी समाज मुदमंगलमयहै जोजगत्के बीचमें जंगमतीरथ राजहैं जंगमकही चलनेवाला ५ ॥

रामभक्तिजहँ सुरसरिधारा सरसइब्रह्म विचार प्रचारा ६

टी० । अबसम अधिक रूपककरि तीरथराजका धर्म साधुसमाजमेंकहते हैं तीरथराज जो प्रयागहै सो स्थावरहै उनमें गंगाजीहैं व यमुनाजी हैं व सरस्वतीजीहैं व तीनिउंमिले वेनीहैं सो साधुसमाज जंगम तीरथराज में श्रीरामभक्ति सो गंगाभक्ति व गंगासम रूपक जाते भक्ति व गंगाकीचरण उत्पत्तिहै व साधुसमाजमें ब्रह्मविचार सोसरस्वतीहै जैसे प्रयागमें सरस्वती गुप्त है तैसे साधुसमाजमें ब्रह्मविचार गुप्तहै ॥ ६ ॥

विधिनिषेधमयकलिमलहरणी कर्म्मकथारविनन्दिनिवरणी ७

टी० । साधुसमाजमें विधिनिषेधमय जो कर्मकथा विधिकही ग्रहणनि-षेध कही त्याग तन्मय कर्मकथा सो कलिमल हरणी रविनन्दिनि कही यमुनाजीहैं जो कहो कि यमुना व कर्म कथाकी क्या समताहै सो सुनो यमुनाजी सूर्यकी पुत्रीहैं व यावत्कर्महैं सो सूर्यसेहैं सूर्यबिना कोई कर्म नहीं यह समताहै ॥ ७ ॥

हरिहर कथा बिराज त्रिवेनी सुनत सकल मुदमंगल देनी ८

टी० । जैसे प्रयागमें गंगायमुना सरस्वती पृथक्पृथक् शोभितहैं पुनि तीनिउं मिलेवेनीरूप शोभितहैं तैसेसाधुसमाजमें भक्ति ब्रह्मविचारकर्म कांड पृथक्पृथक् शोभितहैं पुनितीनिउं मिले हरिहरकथा रूप शोभितहै हरिहरकही भगवत् भागवत इनकीकथा त्रिकांडमें है सो साधु समाज प्रयागमें वेनीहै स्नान करनेसे सर्व मुदमंगल देनी है कथा सुनेसे सर्व मुद मंगल देनीहै ॥ ८ ॥

बटबिश्वास अचल निजधर्मा तीरथराज समाज सुकर्मा ९

टी० । प्रयागमें वटहै सोअक्षयहै साधु समाजमें विश्वास सो बटनिज धर्ममें अचल सो अक्षयवट विश्वासकी समता जैसे प्रयागमें अक्षय वट मुख्यहै तैसे साधुसमाजमें अपने धर्ममें अचल विश्वास सोई मख्य है

विश्वास बिना कोई सिद्धिनहीं होत जैसे तीरथराज में समाज नाम गंगा यमुना सरस्वती त्रिवेणी अक्षयवट है तैसे साधु समाज में सुकर्म भक्ति ज्ञान कर्म हरिहरकथा विश्वास येई समाजहैं ६ ॥

सबहिसुलभसबदिनसबदेशा सेवतसादरसमनकलेशा१०

टी० । इहांतक समरूपक कहि अब साधु समाज जंगम तीरथराज को स्थावर तीर्थराजसे अधिक रूपक करि कहतेहैं कि स्थावर तीर्थराज सबको सुलभ नहींहै साधु समाज सबहि सुलभ प्रयागका सबदिन माहात्म्य नहीं एकमाघमकरके सूर्यहोहिं तबै माहात्म्य साधुसमाजका सब दिन प्रयाग एक देशमें है साधुसमाज सर्वदेशमें है आदर सहित सेवन करनेसे क्लेश जो है जन्म मरण सो शमन कही नाश है जातहै क्लेश नाशनेमें दोउनकी समताभई परन्तु कठिन सौलभ्यका भेदहै ताते साधु समाज अधिकहै ॥ १० ॥

अकथअलौकिक तीरथराऊ देइ सद्यफल प्रकट प्रभाऊ ११

टी०।पनः प्रयागका माहात्म्य कहागयाहै साधुमाहात्म्य अकथहै प्रयाग लौकिकहै साधु समाज अलौकिक है (शंका) साधु समाज अलौकिक कैसे (उत्तर) साधु समाजकी बराबरी लोकमें अपर नहीं ताहीते अलौकिक काहे कि अपर तीर्थ देवता सेवन करतसंते चारिफल के देवइया बहुतहैं अपना स्वरूप बनाइ लेइ ऐसाकोई नहीं साधु समाज सेवन करतसंते अपना स्वरूप बनाइ लेतहैं ताहीते अलौकिक जेकरे समान लोकमें दूसरा नहीं व प्रयाग सेवन करत संते कालांतर फल देतेहैं व साधु समाज सेवन करतसंते सद्यफल देतेहैं यह अधिक है ॥ ११ ॥

सुनिसमुझहिंजनमुदितमन मज्जहिंअतिअनुराग ॥
लहहिँ चारि फलअछततनु साधुसमाजप्रयाग १२

टी० । यह बातको सुनि जनजो सर्वप्राणी सो समुझहिं नाम विचारहिं व चलिकै प्रयागमें मुदितमन मज्जहिं नाम स्नान करहिं तौ तनु छूटे एकफल पावहिं व साधु समाज प्रयागमें अनुरागरूप मज्जनकरै तौ तनुके अछत चारिफल पावहिं ऐसे साधु समाज प्रयागहैं देखिये तौ शरीरांतर को फल अपनेको देखिपरतहै व अछत तनुको फल अपनतथा और सबको देखि परतहै यह सद्यफल व अछततनु कहिबेको यहभाव जब कहा कि प्रयाग कालान्तर फल देतहैं तब यह ज्ञान जाना गया

कि द्वै चारि वर्षमें देतहैं सोयह बातहै नहीं इस निवारणार्थ कहा कि साधुसमाज अछततनु फलदेतेहैं यहकहने सेजनाये कि प्रयाग शरीरांतर फल देतहैं १२ ॥

मज्जनफल पेखियततकाला काकहोहिंपिकबकउमराला १३

टी० । अब जो दोहामें अछततनु कहा सो इसमें नेमनरहा काहेकि तनु सौवर्षरहै पचासवर्षरहै पच्चीसवर्ष रहै सो न जाने कबमिलैगो यह अति व्याप्ति छुड़ावनेको कहतेहैं कि मज्जन फल पेखिये नाम साधुसमाजके संगका फल तत्काल देखिपरत है कहां देखिपरतहै काक होहिं पिक नाम जिन्ह प्राणिनकी वृत्ति काकवत्है काककी कौनवृत्तिहै कठोर बोली मलिन भोजन अविश्वास ऐसी वृत्ति जिन प्राणिन कीहै ते सत्संगमें परिपिक जो कोयल तद्वत् वृत्ति होती है कोयल कीकवनि वृत्तिहै मधुर बाणी आम्रादि भोजन व बक मरालहोत हैं बकमराल कैसे होतहैं कि जिन प्राणिन को बकवत् चाल है नाम दगाबाजी वो हिंसा सोउ सत्संगमें परि हंस होतहैंनाम निस्कपटनिर्हिंसकहोत हैं तत्काल १३ ॥

सुनि आचरज करै जनिकोई सतसंगति महिमानहिंगोई १४

टी० । इस बातको सुनि कोऊ आश्चर्य न करै सत् संग की महिमा गोई नाम छपी नहीं है जो कोउ कहै कि गोई नहीं तौ प्रकट कहां है तापर कहत हैं १४ ॥

बालमीकिनारदघटयोनी निजनिजमुखनिकहीनिजहोनी १५

टी० । बालमीकि नारद घटयोनी जो अगस्त्य सो येसब अपने अपने मुखनते अपनी अपनी होनी कहाहै बालमीकिजी श्री रामचन्द्र जी से नारदजी व्यासजीसे अगस्त्य महादेवजीसे कहा पूर्वकीमलीनतासत्संगके प्रभावसे जसभये तसकहाहै १५ ॥

जलचर थलचर नभचर नाना जेजड़ चेतन जीवजहाना १६

टी० । अब सत्संग का प्रभाव भूत भविष्य बर्त्तमान तीनिउ काल का कहतेहैं कि जलचरजो मत्स्यादि थलचर मनुष्यादि नभचरपक्ष्यादि नाना वोजो जगत्में जितनेजड़ चेतन जीव हैं जहांन फारसी में जगत् को कहते हैं १६ ॥

मतिकीरति गति भतिभलाई जबजेहियतनजहांजेहिपाई १७

टी० । मति जो बुद्धिकीरति गति भूतिभलाई येपांचौ वस्तु जवनाम जवनेकाल में जेहियतन नामजेहि उद्यमते जहांनाम जेहि अस्थान में जेहिनाम जोकोई पाईहै १७ ॥

सोजानब सत संग प्रभाऊ लोकहुं वेदन आन उपाऊ १८

टी० । सोसब सत्संगे के प्रभाव ते जानब और लोक वेद में दूसरी उपाययह पांचहूवस्तुके मिलनेको नहींहै १८ ॥

बिनु सतसंग बिवेक न होई रामकृपाबिनु सुलभन सोई १९

टी० विनु सत्संग विवेकनहीं होत है कवन विवेक जो ऊपर कहा है कि मति आदिपांच सत्संगके प्रभाव से मिलतहै यहजानना सो विवेक तवन विवेक सत्संगे ते होतहै सत्संगका प्रभाव सत्संगे ते जानाजात है जो कोई कहै कि जब इतना बड़ा सत्संगका प्रभाव है तब सब कोई सत्संगे क्यों न करै तापर कहत हैंकि रामकृपा बिनासुलभ नहीं १९ ॥

सतसंगतिमुदमंगलमूला सोइफलसिधिसबसाधनफूला २०

टी० । मुद मंगल का मूल सत्संग है फेरि वही सत्संग सिद्धिफल है अपर सब साधन फूलहै २० ॥

शठसुधरहिं सतसंगतिपाई पारसपरसिकुधातुसुहाई २१

टी० । शठ जोहैं सोउ सत्संग को पायकरि सुधरि जाते हैं कैसे जैसे पारसके परसे ते कुधातु जो लोहा सो सुवर्ण होतहै यह तद्गुणा लंकार है ॥ लक्षण तद्गुणा निज गुण त्यागि करि संगतिके गुण लेइ ॥ नासा मोतीअधरमिलि पद्मरागछबिदेइ (इतितुलसीभूषणे) २१ ॥

विधिबशसुजनकुसंगतिपरहीं फणिमणिसमनिजगुण अनुसरहीं

टी० । ऐसेसंत जो कहूं विधिवश नाम प्रारब्ध के जोरसे कुसंगति में परिजाहिं तौ जैसे सर्प्पके विषे मणि अपना गुण अनुसरतहै तैसे संत अपने गुणलगावैं कुसंगति के गुण आप ग्रहण न करैं यह अतद्गुणालंकारहै ॥ लक्षण ॥ तहां अतद्गुणसंगको जब गुणलागतनाहिं ॥ पियअनुरागीनाभयो बसिअनुरागिनमाहिं (इतितुलसीभूषणे) २२ ॥

विधिहरिहरकविकोविदबानी कहतसाधु महिमासकुचानी २३

टी० । अबसंतकी महिमाकी अगमता कहतहैं कि विधि जो ब्रह्माहरि

जो विष्णु हर जो महादेव कवि शुक्राचार्य कोविद बृहस्पति बाणी सरस्वती एतेनिछि साधु की महिमा कहते में सकुचते हैं काहेकि जो कहै सो थोर २३ ॥

सोमोसनकहिजातनकैसे साकबनिकमणिगुणगणजैसे२४

टी० । तौ जोयेईश्वरकोटी सो नहीं कहिसक्के तौ हमसे नहीं कहि जात कैसें जैसेसाक वनिक जो कांचकी पोतिके बेचनेवाला मणि के गुण गणनहींकहिसकत तैसे २४ ॥

बन्दौं संतसमानचित हित अनहित नहिंकोउ ॥
अंजलिगतशुभसुमनजिमि समसुगंगकरदोउ२५

टी० । बन्दौं संत कैसे हैं संतको समानहैं चित्त जिनके शत्रु मित्रकोई नहीं कैसे जैसेसुगन्धदार फूलको एक हाथसे तोरै व एक हाथ पर धरै वह फूल दोनोंहाथमें बराबर सुगन्ध देइगो तैसे संत को कोई भलाकरै कोई बुरा वे समान मानते हैं २५ ॥

जा हु

बालविनयसुनिकरिकृपा रामचरण रतिदेहु ॥ २६ ॥

टी० । संतको चित्त सरल जगत्‌के हितकारी ऐसो स्वभाव सनेह को जानि बन्दौं सो हमारी बालविनय सुनि कृपाकरि श्री सीतारामजी के चरणमें रति नाम प्रीतिदेहु २६ ॥

बंदनानामतृतीयकर्कर्य ॥ ३ ॥

बहुरि बंदि खलगण सतभाये जे बिन काज दाहिने बाये १

टी० । अब श्रीगोस्वामीजी खलगणकी बंदनाकरतेहैं काहे ते कि जो खल न होहिं तो संतको महत्व न खुलै बहुरि नाम साधु बंदनाके पश्चात् खलगण जोहैं तिनको बन्दौं कैसेहैं खल कि बिनाकाजही दाहिन वामनाम बिनु प्रयोजन सन्मुख विमुख होतेहैं तिनको अपने सद्भाव से बन्दौंसद्भाव कही संतका स्वभावहै कि सबको नमस्कार करना ॥ १ ॥

परहित हानिलाभ जिनकेरे उजरे हर्ष विषाद बसेरे २

टी० । फेरि खल कैसेहैं पराये हितकी हानि सोई जिनको लाभ है पुनः पराये केउजरे हर्ष व बसेमें विषाद होतहै २ ॥

हरिहरयश राकेश राहुसे पर अकाजभट सहसबाहुसे ३

टी० । पुनःकैसेहैं खलकि हरिहर यशकही भगवत् भागवतकीकथा जो हैसो राकेशनाम चन्द्रमा है तेहिको राहु रूपहैं अभिप्रायकी जहांहरिहर कथाहोतहोइ तहां जो खलपहुंचैं तो कोई रीतिसे धरी दुइचरी कथा बन्द करिदेहिं कोई विषयकी वार्त्ताकरि वाकोई वादविवादकरि सोग्रहण तुल्य भयौ जो कथा उपराम होइगई तौ जानौकि सर्वग्रास होइ गयो पुनःकस खलकि पराया अकाजकरिवेको सहस्रबाहु सम भटहैं ३ ॥

जे परदोष लहहिंसहसाषी परहितघृत जिनके मनमाषी ४

टी० । पुनःखलकैसेहैं किजे सहसाषी नामसाक्षीभरि वा साक्षीदेकरि परायोदोषको लेतेहैं व परायाहित जो घृतहै तिसमें माषीकीनांई परिकै अंगभंगहोइ जातेहैं नामपरायेके अकाज करिबेको मनोरथ सो अंगहै सो आपन बूतभरि करै जब दूसरे को अकाज न भयौ तव मनोरथ नष्टभयौ वहै अंगभंगहै ४ ॥

तेज कृशानु रोष महि षेशा अघअवगुणधनधनिक धनेशा ५

टी० । पुनः वेखलकैसेहैं कि अग्निकीनाई रातिदिन जरतेरहतेहैं वो महिषासुरकी बराबरि रोषहै वोपापअवगुणके धनी कुवेरकीबराबरि हैं ५

उदय केतु सम हितसबहीके कुंभकरण सम सोवत नीके ६

टी० । पुनः सबके हितकार कैसेहैं जैसे उदयकेतु अभिप्राय कि जैसे केतुकेउदयमें सबको क्ष्ट प्रहोतहै तैसे खलनके उदयमें सबकेक्ष्ट प्र होत है ताते जो वेखल कुंभकरण की नाई सोवतेरहैं तबै नीकहै कुंभकरणतौ निद्रामें सोवतरह्यौहै खलविपत्ति रूप निद्रामें सोवै तबैनीक है यह कवि शापहै खलनको ६ ॥

परअकाजलगितनुपरिहरहीं जिमिहिमिउपलकृषीदलिगरहीं

टी० । पुनः खलकैसेहैं कि परायेके अकाजके लगाइके आपना शरीर छोड़िदेतेहैं कैसे जैसे कृषीको दलिकै हिम जो पाला वो उपल पाथर सो विलाइजातहैं नामगलिजात ७ ॥

बन्दौं खलयश शेष सरोषा सहस बदन वरणै पर दोषा ८

टी० । पुनःखलन को बन्दतहौं शेषके समान परिसहरोषा कही हर्ष पूर्वक देखि येतौ शेषहजार मुखते भगवान्को यश बरणते हैं वो खल एकै मुखमें हजारमुखकी शक्ति करिकै परावादोष वरणतेहैं तातेशेषसम कहाहै ८॥

पुनिप्रणवौं पृथुराजसमाना परअघसुनै सहसदशकाना ९

टी० । पुनः राजा पृथुके समान खलनको बंदतहौं राजापृथु द्वै कान में दशहजार कानकी शक्तिभगवान् से मांगिकरि भगवत् यश सुनते हैं वो खलद्वै कानमें दशहजार कान को आवाहन करिपरावा अघ जो पाप सो सुनते हैं तातेसमताहै ९ ॥

बहुरि शक्र सम विनवौंतेही संतत सुरा नीकहित जेही १०

टी० । बहुरिकही फेरि खलनको शक्रजो इन्द्रतिनके समानबन्दौं जो कहोइन्द्र तौ नित्यही अमृतपान करतेहैं तौ खल संतत नाम निरन्तर सुरानाम मदिरा सो पानकरतेहैं काहेते उनकोवहै नीकलागतहै वो हित करतहैं तहां मदिराकहीअमल गांजा भांग अफीम चरस माजूम जितनी वस्तु अमलकरैं सो मंदिरा संज्ञाहैं १० ॥

वचनवज्रजेहिसदापियारा सहसनयनपरदोषनिहारा ११

टी० । जो कहौ इन्द्रकेहाथमेंतौ वज्रहै सो वड़ोप्रियहै तौ खलनकेमुख में वज्रसम वचनपियारहै जो कहो इन्द्र तौ हज़ारनेत्र से श्रीरामजी को विवाहदेखे वो देवतनको हित देखतेहैं तौ खल हज़ारनेत्र की शक्तिकरि परावादोष देखतेहैं ताते इन्द्रकी बराबरि बन्दौं ११ ॥

दो० उदासीन अरिमीतहित सुनतजरहिंखलरीति ॥
जानिपानियुगजोरिकरि विनतीकरौंसप्रीति १२

टी० । पुनः खलकैसेहैं कि चाहैशत्रुहोइ चाहैमित्रहोइ चाहैउदासीन नाम मध्यस्थ होइ कोईकर हितसुनै तौ जरहिं यह खलकी रीतिहै सो ऐसी खलन की रीति जानिकै दोनौ हाथजोरिकै विनती करतहौं प्रीति पूर्वक १२ ॥

मैंआपनिदिशिकीन्ह निहोरा तिननिजओरनलाउबभोरा १३

टी० । श्री गोस्वामीजी महाराज कहतेहैं कि जो कोईकहै कि क्या खलनकी बंदनाकरतेहो काबे भलाईमानैंगेनहीं मानैंगे तापरकहतेहैं कि हम खलनसे भलाई नहीं चाहतेहैं हमतौ अपनी ओरसों निहोरा नाम बंदनाकीनहै अपनीओरकही अपनेसाधुता गुणतेऔर खल अपनीओर से नहीं चूकैंगे खलईकरबेमें अभिप्रायकि जो वे अपनीखलईसे न चूकें तौ हम अपनी साधुताते कैसेचूकैं १३ ॥

वायसपालिय अतिअनुरागा होंहिंनिरामिषकबहुँकिकागा १४

॥ इति चतुर्थ प्रकरणं ॥

टी० । अब जो कोई कहै कि भला तुमतौ बिनती करते हौ औ वे खलईसे नचूकैंगे सो कैसे तहां सुनौ जैसे वायस जो है । कौवा तिस को अति प्रीतिसे पालौ परंतु निरामिष नहीं होता काहेते कागा उस का गयाका बहतो कागको कागईहै तैसे खलको बंदना करेसे खलनको कागयो खलके खलई है मैं तौ अपनी साधुताते बंदना कीन है १४ ॥ इति श्रीरामचरित्र मानसपरिचारिकायां खलबंदनानाम चतुर्थःकैंकर्य ४

बंदौंसंत असज्जन चरना दुखप्रद उभयबीच कछुबरना १

टी० । संत असंतके चरण बंदौं कैसे संत असंतहैं दुःखप्रदउभय कही दुःखके देनेवाले दोनौंहैं यह व्यंगोक्ति अलंकारहै अब दोनोंके दुःखदेने में जो कारणसो आगे कहतहैं (शंका) साधुसमाज वो खल समाज के गुण कहि बंदना करिआये अब फेरिमिलाइकै बंदना करने में क्या हेतु (उत्तर) जब गोस्वामीजी संतसमाज के गुण कहि बंदना करे वो खल समाजके गुणकहि बन्दना करे तब यहजानागयाकि साधु कोईजातिहै वो खल कोई जातिहै वो इनका देश भिन्नभिन्नहै वो इनका परम्परा है कि साधुके साधु होतेहैं वो खल के खल होतेहैं सो यह सब बात के संदेह मिटावने क अर्थ दूनौ के मिलाइकै बंदना करि यह जनाये कि साधु असाधु के जाति नहीं केवल अपनीअपनी करनीते साधुखल होते हैं साधुखल एकैदेश एकैघर एकै मातापितासे होतेहैं वो इनकी परम्परा नहीं केवल सुसंग कुसंग पायकरि सुबस्तु कुबस्तुहोति है ताही ते संत असंतकी बंदना के द्वार होइकरि सुसंग कुसंगके गुण दोष प्रश्नोत्तर पूर्वक यह प्रकरण बन्दौ संत असज्जन से लेइ सम प्रकाश तम पाख दूहु यह दोहाताईं जानब ॥ १ ॥

बिछुरत एकप्राण हरिलेहीं मिलतएक दारुण दुखदेहीं २

टी० ।अब संत असंत जैसे दुःख देतेहैंसोकहतेहैं किसंतजोहैं सोबिछुरत प्राण हरिलेतेहैं वो खल मिलते दारुण दुःखदेतहैं देखियेतौ इसकहनिमें व्यंगकितना भराहै कि निंदा मिलि अस्तुति अस्तुति मिलि निंदा देखियेतौ जब कहा कि संतदुःखप्रदहैं तब यहनिंदाभयो परंतु जबकहा कि बिछुरत प्राणहरिलेहीं तब महत् स्तुतिभई कि इतना शुभगुण उनमें है कि जिनके बिछुरे प्राणांतकेसम दुःखहोतहै वोजब संतनकेसंग मिलाइके खलनकी बंदनाकरे तब स्तुतिभई जब कहाकि मिलते दुःख देतहै तब महत् निंदाभई कि इतना अवगुण खलनमेंहै कि जिनके मिलबेकी कोई इच्छानहींकरे काहेतेकि जिनकेमिलनेमे परिणामवर्त्तमानदुःखहै २

उपजहिंएक संग जगमाहीं जलजजोंकजिमिगुणबिलगाहीं३

अब जो कोई पूछै कि साधु असाधु कहां होते हैं तापर कहते हैं कि उपजहिं एकसंगजगमाहीं जो कोईकहै कि एकसंगहोतेहैं वो एक जगह होतेहैं तो गुणदुइकैसे तापर कहतेहैं कि जैसे कमल वो जोंक एकैसंगहोतेहैं एकैजगहरहतेहैं परंतुगुण बिलगबिलगहै कमलकेदेखत चित्तप्रसन्न होतहै सूंघनेसे शरीरमेंरुधिरकी वृद्धिहोतिहै वो जोंक देखते डरलागैवो जो लगिजाइ तौ शरीरकारुधिर खींचिलेतहै तैसे साधुअसाधुहैं ३ ॥

सुधा सुरासम साधुअसाधू जनकएक जग जलधिअगाधू ४

टी० । एक दृष्टांत कमल जोंक काकहिकरि फेरिदूसरादृष्टांतदेतेहैंकी सुधासुरासम साधु असाधू हैं सुधाको गुण साधुमें वो सुराको गुण असाधु में तौ जैसेअमृत औ मदिरा समुद्रही से उपजेहै एकै पितासे तैसे साधु असाधु जगत्में एकैपितासे उपजतेहैं ४ ॥

भलअनभलनिजनिजकरतूती लहतसुयशअपलोकविभूती५

टी० अबदृष्टान्त कहतेहैं किजैसे कमल वो जोंक वो सुधावो सुराएकै पितासे होतेहैं परंतु अपने अपने गुणनसे यश अयशके भागीहैं तैसे भल जो साधु अनभल जोअसाधु सो निज निज कही अपनी अपनी करतूतिते सुयशनाम सुन्दरयश अपलोकनाम अयश के विभूतिजो ऐश्वर्य तिसको लहतनाम प्राप्तिहोतेहैं ५ ॥

सुधासुधाकरसुरसरिसाधू गरलअनल कलिमलसरिब्याधू६

टी० । जो कोई कहै की साधुकी कैसी करणीहै जाकरि सुयशपावते हैं वो खलकी कैसी करणीहै जाकरि अयशपावतेहैं तापर कहतेहैं सुधासुधा कर सुरसरिसाधू इहांबाचक धर्मलुप्ता उपमाहै साधुकी करणी कैसी है जैसे सुधानाम अमृत अमृत में स्वाद तोष अमरत्व गुणहै तैसे साधुकी करणीमें रामनाम राम रूपस्वादहै वो इसी स्वादके पाइकरि सर्वसाधन से संतोष औ चारिउ मुक्ति प्राप्तिसो अमरत्व पुनः साधुकी करणी सुधाकर जो चन्द्र माताकीनाईं शीतलप्रकाश अहलादकारी है पुनः सुरसरि जो गंगाताकी नाई पावन वो सबको प्राप्ति ऊंचनीचको अपना स्वरूप बनाइलेना यहगुणन करिकै साधुयश को पावते हैं वोखलके गुण सुनो गरल नाम विषकी नाईं कटु मृत्यु देनेवाला पुनः अनलकीनाईं तप्त पुनः कलिमल सरि जो कर्मनासा ताकी नाईं सर्वशुभ कर्मके नासकहैं यह गुणनतेखल अयश पावतेहैं ६ ॥

गुणअवगुण जानत सबकोई जोजेहिभाव नीकतेहि सोई ७

टी० । जोकोई कहै कि गुण अवगुण पहिलेनहीं जानिपरत जोजानि परत तौ काहेकोकोई अवगुणको धारण करत तापरकहतेहैं कि गुण अवगुण को सबकोई जानतेहैं परन्तु जौन जिसको भावत है सोई तिसको नीकलागतहै ७ ॥

भलोभलाईपैलहहि लहहिनिचाईनीच ॥
सुधासराहियअमरता गरलसराहियमीच ८

टी० । पूर्व जो कहा कि भल अनभल अपनी अपनी करतूति ते यश अयश पावतेहैं सो उसीको फेरि पुष्ट करते हैंकि भले जो हैं सो भलाई कोलहहीं नामपावते हैं वो नीच जो हैं सो निचाई लहहिनाम पावतेहैं कैसे जैसे सुधाकी अमरत्व सराहाजात है वो विषकीमृत्युकी सराहना होत है यह कहनेका अभिप्राय कि साधु साधुतामें खुशी है औ खल खलईमें खुशीहै ८॥

खलअघअगुणसाधुगुणगाहा उभयअपारउदधिअवगाहा ६

टी० । खलनकी अघ अवगुणनकी गहनि वो साधुके गुण गहनि दूनौ अथाह अपार समुद्र के बराबरिहै ६ ॥

तेहितेकछुगुण दोष बखाने संग्रहत्यागनबिन पहिचाने १०

टी०। अब जो कोई कहै कि तुम्हैं किसूके गुण अवगुणते कौनकाम तुम तौ रामयश गावनेको संकल्प कियोहै तापर कहतेहैं कि हमैं किसूसे कुछकामनहीं हमतौ गुण दोष जाननेके लियेकहेहैं काहे कि गुणअवगुण जाने बिना संग्रह त्यागनहीं होतहै तौ गुण अवगुण गुणीके द्वारहोइकै जानाजातहै ताहीते गुण अवगुणको बखानिकै जानाचाहतहौं जातेराम यश गावतेमें सहायत्वरहैगो १० ॥

भलउपोचसबविधिउपजाये गनिगुणदोषवेदबिलगाये ११

टी०। अब जो कोई कहै कि यहगुण दोषका विलगकरना तुमहीं से चलाहै कि अवरकोई कहाहै तापर कहतेहैं कि यह परम्पराहै भल पोच दूनौ मिलाइकै ब्रह्माउपजाये तहांवेदगुणदोष गनिकैबिलगाइदीनहै११॥

कहहिंवेदइतिहासपुराना विधिप्रपंचगुण अवगुणसाना १२

दुखसुख पापपुण्यदिनराती साधुअसाधु सुजातिकुजाती १३

दानव देव ऊंच अरु नीचू अमिय सजीवन माहुरमीचू १४

मायाब्रह्म जीव जगदीशा लक्षि अलक्षि रंक अवनीशा १५

काशीमगहसुरसरिक्रमनासा मरुमालव महिदेवगवासा १६

स्वर्गनर्कअनुरागविरागा निगमागम गुण दोषविभागा १७

टी०। पुनःवेदपुराण इतिहासजोभारतादिसोकहतेहैं किविधिका प्रपंच गुण अवगुणसे सानाहै नाममिलाहै इहां दुइरीति दिखावा है एकभल पोच विधिके उपजायेकहे दूसरा विधिका प्रपंच गुण अवगुणसे साना कहे सोवेद पुराण इतिहास सबको गनिकै बिलगाइदीनहैयहपरम्परादिखाइ कै जो गुण अवगुण भलपोच वेदादि विलगकीन सो कहतेहैं इहांसेदोहा ताईं अक्षरार्थै जानब १२ ॥

जड़चेतनगुणदोषमय विश्वकीन्हकरतार ॥
सन्तहंसगुणगहहिंपय परिहरिवारिविकार १८ ॥

टी०। शंका माया ब्रह्मजीव जगदीश विधिके बनाये कैसे उत्तर सुनौ इहां बनाइबेमें तात्पर्यनहींहै गुण अवगुण साननेमें तात्पर्य है यहीबरे ऊपर दुइभूमिका कहेहैं भलपोच उपजावनेमें वो गुण अवगुण साननेमें सो माया ब्रह्मजीव जगदीशहै ब्रह्म गुणमाया अवगुणजीव प्रपंचके भीतर अवगुण जगदीश जो त्रिदेव सो गुण ये मिले मिलाये ब्रह्माकी सृष्टिमें हैं

ताहीते इनको गने कुछ बना बनानहीं कहे प्रश्न दोहा में लिखतेहैं कि (जड़चेतन गुणदोषमयविश्वकीन करतार) इस का कैसे कहौगे उत्तर सुनो जोविश्वकरतार कीन्हहै सो जड़ चेतन गुणदोष मयहै इहांकीनपद विश्वके साथहै सो यहपन्द्रह के अंकका अर्थ जानब दोहार्थ ॥ जड़ चेतन गुणदोषमय जो विश्वकोकरताकीनहै सो यद्यपि वेदगुण दोषको बिलगाइ करिकहा तथापि संतजो हैं सोई गुणग्रहणकरते हैं कैसे जैसे दूध पानी मिले हंसदूधको गहि जलको त्यागकरते हैं तैसेगुण जो है सो दूधहै वो अवगुण जोहै सो जलहै सोसंत जोहैं सो हंसहैं गुणरूपदूधकोगहिअवगुण रूप जलकोत्यागकरतेहैं १८॥

असविवेकजबदेइविधाता तबतजिदोष गुणहिंमनराता १६

टी० । ऐसा विवेक हंसको ऐसो जब विधातादेहि तबदोष को तजि गुणमें मन रतहोतहै १६ ॥

कालस्वभाव कर्मबरिआई भलेउप्रकृतिबस चूकभलाई २०

टी० । ऐसा विवेक पाइकरि दोषको तजि गुणको ग्रहणकीन सो काल स्वभाव कर्मकी बरिआई नाम जबरदस्तीसे वो प्रकृत जो माया तिसके वसहोइ भलेजोहैं सो अपनी भलाईसे चूकजातेहैं २० ॥

सोसुधारिहरिजनजिमिलेहीं दलिदुःखदोषविमलयशदेहीं २१
खलउकरहिंभलपाइसुसंगू मिटहिनमलिनसुभावअभंगू २२

टी० । अबजो कोई कहै कि चूक गये सो चूके रहै कि सुधरे तापर कहते हैं कि सो सुधारि हरिजन लेहीं जिमि जो वाचक है सो आगे की चौपाई के साथहै भले जो कालकर्मादिके वश भलाई से चूके सोभीतर भलाई बनीहै ताहीते हरिजन जो संत सो जब कबहुँ सन्तन का संग परा तब संत उसचूकको सुधारिकै विमलयश जो भगवत्यश सो देते हैं किमिजिमि(खलउ करहिंभलपाइ सुसंगू) जैसेखलजेहैं ते जोकहूं सुसंग में परे कालकर्मादिके बशते भलाईकरनेलगते हैं परन्तुवहजो मलिनता स्वभाव सो अभंगहै अभिप्रायकी भीतर मलीनता बनी है ताहीते जः फेरिअपने कुसंगिनमें परे तब वे भलाईको मिटाइकै निचाइदेते हैं तैसे यहपूर्वरूप गुणालंकारहै पूर्वरूपलै संगगुणतजि फेरिअपनोलेइ २१।२२॥

लखि सुवेष जग वंचक जेऊ वेषप्रताप पूजि अहितेऊ २३

टी० । देखिये तो जो ऊपर कहा है कि जो जेहिके भाया सो तेहिके नीकहै सो इहांतक भायाहै कि जग वंचक जो खल हैं सो सुसंगमें परि सुवेष बनाइ सुवेषके प्रतापतेपूजनीय भये २३ ॥

उघरे अन्त न होइ निबाहू कालनेमि जिमिरावणराहू २४

टी० । परंतु अंतमें वंचकता उघरिपरतहै भलाई नाहीं निबहत काहेते की सुवेषका भीतरसेनिष्ठा नहीं है केवल देखनमात्रकोहै क्योंकि उनको अवगुणभायाहै अब दृष्टांतदेतेहैं की जैसे कालनेमि रावणराहु ये सुवेषके प्रतापसे पूजनीयभये परंतु अंतमें निचाइपैप्रकट तैसे खलवेष प्रतापते पूजनीयहोतेहैं पर अंतमेंनीचता प्रकटहोतहै २४ ॥

कियहु कुवेष साधु सनमानू जिमिजगजामवंत हनुमानू २५

टी० । साधुको साधुता इहांतक भायाहै की जो काल कर्मादि के वश कुसंगिनमेंपरे वो कुवेषउ कि येतौ अपनीसाधुता भलाईको नहीं छोड़ते हैं किमि जिमि जगत्में जामवंत हनुमान् कि भालु वानरकावेष कियेहैं परंतु अपनीभलाईको नहीं छोड़े तैसे २५ ॥

हानिकुसंग सुसंगतिलाहू लोकहुवेदविदित सबकाहू २६

टी० । अब जो पूर्वगुणदोषका विभागकियाहै सो उनगुणदोषके धारण करनेवालेके संगतिमें जो हानिलाभहै सो कहतेहैं की कुसंगतिमें हानि सुसंगतिमें लाभ यह बात लोकमें विदितहै वो वेदहूमें विदित है सबके जानिबेको २६ ॥

गगनचढ़ैरज पवनप्रसंगा कीचहिंमिलै नीचजलसंगा २७

टी० । तापर दृष्टांतकहतेहैं की जैसेऊर्द्धगति जोपवनकीहै सोपवनका प्रसंगपाइकरि रज जो धूरि ऐसीनीच सोउ आकाश को चढ़िजातीहैफेरि जब नीचगति जो जल तिसकासंगपाया तबकीचमें मिलिजातीहै २७ ॥

साधुअसाधुसदनशुकसारी सुमिरहिंरामदेहिगनिगारी २८

टी० । यह जड़का दृष्टांतको एक देश हानिलाभ लेइकरि फेरिचेतन का दृष्टांतदेतहैं देखिये तौ साधुके सदनमें शुक वो सारी जो मयना सो राम नाम असमरण करते हैं वोही शुकसारो असाधु के सदन में गनि गनिगारीदेतहैं २८ ॥

धूमकुसंगति कारिख होई लिखियपुराणमंजुमसिसोई २९

टी० । अब जड़चेतन मिलाइकै दृष्टांत देतेहैं कि पूर्ब अवस्थामें धूम जड़पर अवस्थामें चेतन देखिये तौ धूम कुसंगतिमें कारिखाहोतहै कवन कुसंगति लकड़ीकंडाकी संगतिमें कारिखहोतहै वो सुसंगतिमें मंजुमसि होतहै तब पुराण लिखेजातेहैं पूजनीयहोतहै कवन सुसंगते तेल बाती दीवा सज्जी सोहागा लोध लाख २९ ॥

सोइजलअनलअनिलसंघाता होइजलदजगजीवनदाता ३०

टी० । फेरि सोईधूम शुभसाकल्यको संगपाइ वो अग्नि जल पवनका संघातनाम संघटते जदलनाम मेघहोतहै तब इतनीबड़ाईको प्राप्तिभयो कि जगत्को जीवनदाता होतभयो जीवन नाम जल ३० ॥

ग्रहभेषजजलपवनपट पाइकुयोगसुयोग ॥
होइकुवस्तुसुवस्तुजगलखहिंसुलक्षणलोग ३१

टी ०अबसमिष्ठी दृष्टांतदेतहैं कि जैसे ग्रहजो नवरवि१सोम२ मंगल३ बुध ४ बृहस्पति५शुक्र ६ शनिश्चर ७ राहु ८ केतु ९ सोयेऊंचनीच स्थान पाइकरि सुखदाई दुखदाई होतेहैं वो भेषजजोऔषध वोजलपवनवो पट जो बस्त्रये पांचो कुयोग सुयोग को पाइकरि कुवस्तु सुवस्तुहोते हैं परंतु इसबातको सुन्दर लक्षण मान जो प्राणीहैं सो लखतेहैं ३१ ॥

सम प्रकाश तम पाख दुहुँ नाम भेद विधि कीन ॥
शशिसोषक पोषक समुझि जगयशअपयशदीन ३२

इतिपंचमप्रकरणं ॥

टी० । पुनः जैसेएकमासमें द्वै पाख हैं सोदोऊपाख में प्रकाश वो तम समनाम बराबरि है कृष्णपक्ष की परिवा वो शुक्लपक्ष की चतुर्दशी एक घरीतम वो रात्रि भरि प्रकाश परन्तु नामका भेद जो विधि कीन है सो शशि को पोषक सोषक के संग समुझि कै यश अपयश दीन है शुक्लपक्षशशि पोषक को संगवो कृष्णपक्ष शशि पोषक का संग है यह कुसंग सुसंगका हानि लाभ पांच दृष्टांत देइ करि दिखायेवो जो यह प्रकरण उठाये की साधु असाधु दोउ दुःख प्रद हैं सो यहि में जो बीच रहा सो सब बिलगाइवो गुण दोषको गनि भेद समुझि दोउन को बंदे

यामें यह अभिप्राय है कि साधु जब मिले तब परमानंद भया सीता रामजी का नामरूप लीला धाम में मनलगा सब शोकादि छूटे तबसाधु के बंदेकी आपु मिलेई रहो जाते यह आनन्द बना रहै वो जब खल मिले तब अनेक विषय वार्त्ता करि उस आनंद को छुड़ाये जब खल बिछुरे तबफेरि श्रीरामजीकी सुधिभई तबखलनको बंदेकीआपु बिछुरेई रहो जाते भजन बने इति और यह प्रकरण में जो गुण दोष गनि साधु असाधुका पहिचान कियाहै सो यह अभिप्रायहै कि रामयश गावने लगै वो गुण अवगुण साधु असाधु पहिचाना नहीं तौ कहूं जो असाधुअवगुणका संगपरिजाइतौ रामयश गावनेमें विघ्नहोइ वो साधु गुणका संग होइतौ रामयशगावनेमें उत्साहहोइ यहीबरे पहिचान कीनकि साधुगुण का संगकरना वो खल अवगुण को संगछोड़ना यह बात अपने सहित जितनेरामयश के गावनेसुनने वाले हैं तिनसबकेउपदेशहै३२ ॥ इतिश्री रामचरितमानसेपरिचारिकायांसाधुअसाधुबन्दनानामपञ्चमकैंकर्य ५ ॥

जड़चेतनजगजीवजत सकलराममयजानि ॥
बन्दौंसबकेपदकमल सदाजोरियुगपानि १

अबषष्ट प्रकरण जड़ चेतनयह दोहासेलेइ वो(यहिप्रकार बल मनहिं दिखाई) यह चौपाईतक जानब शंका इसका पहिचानक्या कि इहां से उहां प्रयंत एकै प्रकरणहै समाधानसुनो इसग्रन्थमें प्रथम पैंतिस दोहा तकबन्दनाहैसोजहांसे बन्दना उठैअरुजहांताईं फेरिबन्दौं या प्रणवौं या करौं प्रणाम यहशब्दनमिले तहांताईं जानेकीसाभिप्राय एकही प्रकरणहै बीचबीच में शंका उठि आवती है कब कि जब विशेषण असहेतु पूर्वक बन्दनाकरै तब शंका खड़ीभई उस का समाधान करत फेरि शंका फेरि समाधान फेरि शंका फेरि समाधान यहीतरहसे जहां तक शंका समान समाप्ति नहीं तहांतकप्रकरणजबशंका समाधान पूराभयातब दूसराबन्दना उठा वोही प्रकरणहै यहबीचबीचके शंका समाधान का उदाहरण यही प्रकरणमें कहतेहैं ॥ इतिदोहार्थ (जड़चेतन जगजीवजत)सकल जड़कही श्वासारहित चेतनकही श्वासा सहित सो सबके राम मय जानिकै सदा पदकमल बन्दौं दोउ हाथ जोरिकै इहांअन्तरयामीकी बन्दनाजानना१॥

देवदनुजनरनागखगप्रेतपितरगन्धर्व ॥
बन्दौंकिन्नररजनिचर कृपाकरहुअबसर्व २

टी०।समिष्टीबन्दनाकरिअबवेष्टीबन्दनाकरतेहैंकिदेवजोबृहस्पतिइन्द्रा· दिवो दनुजजो प्रहलादादिवो नरजो स्वायम्भुवमन्वादि नागजोअनंतादि खग जो गरुड़ भुशुण्डि जटायु आदि प्रेत जो प्रेत राजधर्म राजादिपितर जो अर्यमादि गन्धर्व जो तुम्बुरादि किन्नर जो शुकादि रजनीचर विभीष· णादि एते भगवत्‌विभूति सबको मैं बन्दत हौं सब मिलि हमारे ऊपर कृपाकरहु २ ॥

आकर चारिलाख चौरासी जाति जीव नभजल थलवासी ३
सीयराममय सब जगजानी करों प्रणाम जोरि युगपानी ४

टी० । प्रश्न यह प्रसंग पुनुरुक्ति साजानि परतहै काहेकि दोहामें कहा किजड़ चेतन बन्दौं फेरि कहा कि चारि खानिके जीव बन्दौं सो दोबार कहनेका क्या हेतु उत्तर सुनौप्रथम दोहामेंकहा किसबको राममयजानि बन्दौं तबयह जानिपराकि गोसाई जी केवल रामउपासकहैं काहेकि जो जेहिकर उपासक होतहै तेहि मय जगत् देखतहैतौ यहतेकेते लोग ऐसे हैं कि केवल रामजीको ब्रह्म मानतेहैं सीताजीको जीवमानते हैं सो उन का मतसिद्धिभया वो गोसाईं जी का यही मतहै तानिवारणार्थ कहते हैं कि चारिखानि वो चौरासीलाख जातिके जीवजितने जलथल नभ कही आकाशके वासी सबको सीताराममय जानिकै प्रणाम करतहौं यहकहने से जानागया कि गोसाईंजी सीताराम युगलो पास कहैं वो दोनौ स्वरूप ब्रह्महैं वो यहजगत् सीता राममय है ताते पुनुरुक्तिनहीं ३ ॥ ४ ॥

जानिकृपा करकिंकरमोहू सब मिलिकरहु छाड़िछलछोहू ५

टी० । यहसंकेतको जनाइकरि अबजोदेवादिवेष्टीरूपकी बन्दनाकीनहै तिनप्रतिप्रार्थना करतेहैं कि कृपाकर जो श्री सीतारामजी तिनकर किंकर हमहूंको जानि करि कि जैसे तुमसब कृपाकरके किंकरहौ तैसे महूं ताते सबमिलि हमारे ऊपर छोहकरौ छलछोड़िकर शंका छलछोड़ना किसका समाधान दोनों तरफलगतहै कि हममें जो छलहै कि सीतारामके कहा वते हैं वो काम क्रोध लोभके किंकर होइरहे हैं यह छल छोड़िकृपा कर· हु अथवा जो कहा कि देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गन्धर्व किन्नर निश्चर एते समस्त कृपा करो सो इनमें परस्पर विरोध देखा तब कहा आपुसका विरोधरूप छलसो छांड़िकृपाकरो आशयकी आपुसमें तुमजस चाहौ तसरहौ परन्तु हमारे ऊपर मिलिकर कृपाकरौ ५ ॥

निजबुधिबल भरोसमोहिंनाहीं तातेविनय करौंसबपाहीं ६

टी० । हमकोअपनी बुद्धिकाबल भरोसा नहीं तातेसबके पास विनय करतहौं ६ ॥

करन चहौंरघुपति गुणगाहा लघुमतिमोरिचरितअवगाहा ७

टी० । जो कहौ कि तुम का चाहतेहौ तो सुनो श्रीरघुपतिके गुणन के गाहा नाम गाथा कीन चाहतहौं जो कहौ कि करोको रोंकत है तौ सुनौ हमारी मति जो बुद्धि सो लघुहै वो चरित अवगाह नामगहिरा जिसका थाह नहीं ७ ॥

सूझन एको अंग उपाऊ मन अति रंक मनोरथ राऊ ८

टी० । वो जितनी उपाय गुणगाथा करिबे की है तिनमें हमको एकौ अंग नाम अंक नाहीं सूझिपरत देखिये तौ मन तौ अतिरंक वो मनोरथ अतिराउ ८ ॥

मतिअतिनीचि ऊंचिरुचिआछी चहिय अमियजग जुरैनछांछी ६

टी० । वो मति अतिनीचि वो मति कि रुचि अतिऊंचि वो अति आछी है जैसे कोईके जगतुमें माठाका धोवन तौ मिलैनाहीं वो चाह अमृत कि करै तैसे हमारी मतिको है कि प्राकृत काव्यकरिबे की सामर्थ्य नही वो रामगुण गाथा कीन चाहतहौं सो ६ ॥

छमिहहिं सज्जनमोरि ढिठाई सुनिहहिं बालवचन मनलाई १०

टी० । यहमेरी ढिठाईको सज्जन क्षमाकरहिंगे मेरी बालक कि ऐसो वचन मनलगाइ करि सुनहिंगे १० ॥

ज्यौंबालककह तोतरिबाता सुनहिं मुदितमन पितुअरुमाता ११

टी० । ज्यों बालक तोतरि बात कहत है तौ माता पिता मुदित मन होइकरि सुनते हैं तैसे हमारे माता पिता सज्जन हैं सो मन मुदितहोइ मोरी तोतरी कही बावरी बानीको सुनहिंगे ११ ॥

हँसिहहिं कूर कुटिल कुविचारी जेपर दूषण भूषण धारी १२

टी० । शंका कबिकी प्रार्थना देवादि प्रतिवो कहतेहैं कि सज्जन हमारी ढिठाई छमिहहिं तौ बिनय और प्रीतिकरना क्षमा औरसे करावना इहां कहनारहा कि देवादि तुम सब हमारी ढिठाई क्षमाकरो सो न कहा वो

सज्जन ढिठाई क्षमहिंगे यह कहने में क्या हेतु समाधान सुनो जब गोसाईंजी देवादि प्रतिकहा कि हमारो मनमति रंकहै वो रघुपति गुण गावा चाहतहौं सो तुमसब मिलि कृपाकरो तब यह प्रश्नभयो कि तुम तौ साधु समाजके हेतुराम गुणगावतेहौ॥प्रमाण(साधु समाज भणित सनमान) तौ यह बड़ीभारी ढिठाई उनसे क्षमा करावो तापै कहाकि उधरकातौ हम भरोसहै की वे हमारी ढिठाई क्षमहिंगे कैसे जैसे अयोध्याजीमें भरतजी वशिष्ठादिक कि सभामें कहा कि दोहा (यद्यपि जन्म कुमातुते मैंशठ सदा सदोष वआपन जानि न त्यागिहैं मोहिं रघुवीर भरोष)चौपाई(तुमपै पांच मोर भलमानी। आयुष आमिष देहु सुवानी) तैसे गोस्वामीजी कहा कि सज्जनका हमैं भरोसहै तुमसब कृपाकरो यह प्रश्नलुता उत्तर है इत्यर्थः अवश्री गोस्वामीजी कहतेहैं कि जो हमारी ढिठाईको क्षमाकरिबो हमारी बालक कि ऐसीबानी सज्जन मुदितमन सुनहिंगे सो सुनिकरि जो क्रूर कुटिल कुबिचारीहैं तेहँसिहहिं काहेते वेपराये दूषणको भूषण कियेहैं राति दिन पराई बाणीको दूषणै देतेरहतेहैं तेहँसहिंगे १२ ॥

निजकवित्त केहिलागननीका सरसहोउ अथवा अतिफीका १३

टी०। यह कहनेसे यहवात पाई गई कि उनक्रूरकुटिल कुबिचारिनको अपनीबाणी बड़ी प्रियहै तापर कहतेहैं कि निज कवित्तनाम अपनीबाणी केहिको नहीं प्रियहोत नामसबको प्रियलागतहै जो कोई कहै कि अपनी बाणी सबको प्रिय लागतहै तौ अच्छीबाणी होगी तापर कहतेहैं कि सो नहीं चाहै सरसनाम अच्छीहोइ अथवा चाहै अतिफीकीहोइ अपनीबाणी सबको प्रियहै १३ ॥

जेपर भनित सुनत हरषाहीं तेबरपुरुष बहुत जग नाहीं १४

टी०। जेपरभणित औजेपर बाणीको सुनिकैहरषतेहैं तेवरनामश्रेष्ठपुरुष हैं वे जगत्में बहुत नाहीहैं थोरेहैं १४ ॥

जगबहु नर सरसरि समभाई जेनिज बाढ़ बढ़हिं जलपाई १५

टी०। जगत्मेंनदी तलावकीनाईं बहुतपुरुषहैं जैसेनदी तलावऊपरका जलपाइ करि अपनी बाढ़िसे बाढ़त हैं जो ऊपरका जल न पावहिं तौ न बढ़हिं काहेते कि पूरणनहीहैं ताते तैसे जेनदी तलावकीनाईं पुरुषहैं ते इधर उधरसे द्वैचारि बातसीखिकै बक्ताबनि जातेहैं फूले फूले फिरतहैं

कि हमारी बराबरि कोहै काहेते कि अपूर्ण हैं उनकेनिज अनुभवनहींहै ऊपरई कि बातैंसीखेहैं तेपराई बाणीको दूषणकरि अपनीबाणीको बड़ाई करते हैं १५ ॥

सज्जन सकृत सिंधुसम कोई देखिपूर विधु बाढ़हिं जोई १६

टी० । वोसिंधुके समतौ सज्जन सकृतनाम एककोईहैं जैसेसमुद्र आपु पूर्णहै वोजब चंद्रमा कि पूर्णत्व देखतहै तब बाढ़तेहैं तैसे सिंधु सम जो सज्जनहैं ते अपने अनुभव करिकै परिपूर्णहैं वो पराथेकी भणित जबसुने तब वहुत आनंद होतेहैं १६ ॥

भागछोट अभिलाषबड करौंएक विश्वास १७
पैहहिंसुखसुनि सुजनजन खलकरिहहिं उपहास ॥

टी०।श्रीगोस्वामीजी कहतेहैं कि देखिये तौ भागतो हमारा छोटाहै वो अभिलाषबड़ीहै भागनाम हिस्सासोतौ हमारा छोटानाम प्राकृत कविनमें बैठने लायक वो अभिलाष बड़हिस्साकोहै कि व्यास बाल्मीकिके बराबरि बैठें अभिप्राय कि यहजोमैं भणित करतहौं सो व्यास बाल्मीकिके बचन की बराबरि प्रमाणहोइ सोयह बातमें हमको एकदृढ़ बिश्वासहै कि सुनि कै सुजनजेहैं तेतो सुखपावहिंगे वो व्यास बाल्मीकिकी वचनकीबराबर मेरी भणित कोप्रमाण करहिंगे वो खलजे हैं ते उपहासकरहिंगे कि यह देखो ये व्यासबाल्मीकिकीबराबरी चाहतेहैं सो नहोगा काहेतेकोइनकी बाणी मोटीवो प्राकृतहै कैसे उनके बराबरि होगी १७ ॥

खलपरिहास होइहितमोरा काककहहिं कलकंठकठोरा १८ ॥

टी० । सोखलनके परिहासते हमाराहित होगा कैसेहित जैसेकीकाक जोहै कउवा सो कलकंठजो कोयलतिसको जोकठोरकहै तौ उसकाहित-कारहोइ कीजो सुनैतेकहै कि देखियेतो यह दुष्टकउवा कोकिलको कठोर कहताहै तैसे मेरीभणितकोजब खलहँसैंगे वोकहहिंगेकि यह तौ प्राकृत बाणीहै तबयहसुनि सज्जन कहैंगे कि देखिये तौ कैसी यहदिव्यबाणी को दुष्टप्राकृतकहेहैं सो सज्जनके मुखसे बड़ाईरूप हमारोहितहोइगो१८ ॥

हंसहिबकदादुरचातकहीं हँसहिंमलिनखलविमलबतकही १९

टी० । पुनःजैसेहंसको बकुलाहँसैंवोचातकजोपपीहातिसको दादुरहँसै तौहंसचातक की बड़ाईहै कि जबबकुलाकहै किहंसकौन विवेकीहैपत्थर

खाताहै ऐसा कहिहँ ते तो भले लोगकहैं कि यह मछरी का खानेवाला दगाबाजबकुला कैसा मोती खानेवाले हंस विवेकी को हँसताहै दुष्टहै वो दादुरकहै कि चातककी बोली अच्छीनहीं नेम प्रेमअच्छा नहीं राति दिन पीउपीउ करताहै यह सुनि भलेलोग कहैंगे कि देखो तौ यह दादुर आपुतौ उलटा टँगिरहाहै वो गलबल बोलताहै वो चातक को हँसताहै आखिर नीचैतौहै तैसै जब विमल बतकही जो भगवत्यश तेहिकेकहने वालेको मलिन मनवाले खल हँसहिंगे तब सुष्टजन जो भगवत् दासहैं ते कहैंगेकि देखिये तो खल रातिदिन बकुलाकीनाईं दगाबाजीवोविषय भोगिरहे हैं वो श्रीरामयश रूपमोती के चुगनेवाले जो विवेकी हंसरूप संततिनको हँसेहैं बड़ेदुष्टहैं पुनः ये खलकैसेहैं कि आपुतौ दादुरकीनाईं उलटे टँगिरहे हैं परलोकसे वृत्ति उलटि गईहै वो रातिदिन विषय वार्त्ता कल्लबल्ल करिरहे हैं वो चातकरूपी जो संत जैसे चातक का ऊपर मुख रहताहै तैसे यहराम यश विमलबतकहीके करनेवालेकीवृत्तिऊर्द्ध वोराति दिन भगवन्नामको रटन तिन को हँसतेहैं बड़ेदुष्टहैं यह सज्जननके मुख से बड़ाई रूपहितकार होगा कब जब खल हँसैंगे तब १६ ॥

कवितरसिक न रामपदनेहू तिनकहं सुखदहासरसएहू २०

टी० । यह अपना हितकारकहि अबहँसनेउ वालौंका हितकार कहतेहैं कि जे कबित्त के रसिक नहीं नाम काव्यका देशनहीं जानते वो न श्री-रामजीके पदकमल में प्रीतिहै तिनहू को मेरी भणितहास रूप सुखदाई होगी २० ॥

भाषाभणित मोरिमति भोरी हँसिबे योगहँसे नहिंखोरी २१

टी० । यह व्यंगोक्तिकहि अब अपनी कार्पण्यता रूपसाधुता कहते हैं कि एकतौ भाषाहमारी भणित दूसरे मेरीभोरीमतिकी तौ हँसिबेयोग्यहै हँसतेहँसनेवालेको खोरिनहीं नामदोष नहीं देखियेतौ भगवत् यशचाहै भाषाहोइचाहैसंस्कृतहोइपरंतु हँसतेदोषहोताहै सोगोस्वामीजो अपनी साधुतासे उनहूको निरदोष किये २१ ॥

प्रभुपद प्रीतिनसामुझिनीकी तिन्हैकथासुनि लागिहिफीकी२२

टी० । जो कोई कहै कि तुमतौ अपनी साधुता से अपनी भणित में दूषणदै उन्हैं निदेखि कियो परंतु उसभणितमें रामनाम रामयश जो है

तौनै करिदोष तौ होवैकरैगो तापर कहतेहैं कि जिनको प्रभु श्रीरामजी तिनके पदमें प्रीतिनहीं वो अच्छी समुझिनहीं तिनकोतो यहकथाफीकी लगिवे करेगी तौ जिन्हैं फीकी लगी ततौ हँसिवे करैंगे यामेंयह अभिप्रायहै किजैसे(हरि मायावश जगत भ्रमाहीं ॥ तिन्हैं कहतकछु अघटित नाहीं) तैसे जिनके रामपद प्रीतिनहीं व समुझि अच्छीनहीं ते तौआपै दोषके भागीहैं उन्हैं हँसतेक्या दोषहोगा २२ ॥

हरिहरपदरतिमतिनकुतरकी तिनकहँमधुरकथारघुबरकी २३

टी०। वो जिनके हरिहर पदमें प्रीतिहै वो समुझि अच्छीहै मतिमें कुतर्क नहींहै तिनको यह रघुवर की कथा मधुरनाम मिष्ठलगैगी आशय यह किये जो हँसै तौ इन्हैं दोषलगै काहे कि ये उसका स्वरूप जानते हैं तो तौ काहेको हँसेगे इन्हैं तौ मिष्ठलगतहै २३ ॥

रामभक्ति भूषितजियजानी सुनिहहिंसुजन सराहिसुबानी २४

टी०। जिन्हैं रामपदमें प्रीतिहै वो समुझि अच्छी है तेतौ श्रीरामभक्ति करिकै भूषित जानिकै हमारी भणितको ते सुष्टजन अपनी सुंदरिवाणीसे सराहिकै सुनहिंगे कवहु न हँसहिंगे २४ ॥

कवि नहोंउं नहिंचतुर प्रवीना सकलकला सबविद्याहीना २५

टी०। अब जो कहाकिजे काव्यको ढंगनहीं जानते तेहँसेंगे तौ यह कहने से सूक्ष्म यह पायागयाको येबड़े कविहैं तापर अपनी कार्पण्ययता कहतेहैं किनतौ मैं कविहौं नचतुराईमें वित्पन्नहौं औ चौंसठि कलावो चौदह विद्या तिनसबते हीनहौं २५ ॥

आषर अर्थ अलंकृत नाना छंद प्रबंध अनेक विधाना २६

आषरजोहै अक्षरन कि रचना वो तिन अक्षरन का अर्थ वो अलंकार नानाहैं वोछंद वो छंदनका प्रबंध सो अनेक विधानकाहै २६ ॥

भावभेद रसभेद अपारा कवित दोष गुण विविध प्रकारा २७

टी० भावनका भेद वो रसनका भेद अपार है वो कवित्त विषे दोष वो गुणविविध प्रकारकाहै २७ ॥

कवित विवेक एकनहिं मोरे सत्यकहौं लिखि कागद कोरे २८

टी०। सोकलाआदि वो दोषगुण अंतजो सबकहि आयेहैं सोयहसबकाव्य

के अंगहैं सोकवित्तका विवेकनाम अंग हमारे एकौनहीं यहबात को हम सत्य कोरे कागदपरलिखिकहतेहैं(शंका) गोसांईजी कहतेहैं कि कवित्तका विवेक एकौनहीं यह बात सत्यकोरे कागदपर लिखि कहतहौं सोझूंठ सौगंध क्यों करतेहैं इनकी काव्यमें तौ सब काव्यका अंग देखि परत है (समाधान)श्रीगोस्वामीजी जो कहा कि कवित्तका विवेक हमारे एकौनहीं सोयहकहा कि जैसे काव्य करनेमें कवित्तके अंगकाविचार होताहै कि गण अगण समुझिकै तब अक्षर धरतेहैं तैसन हमको नहींचाहै काव्यांग हमारे भणितमें आवै चाहै न आवै यहबात सत्य कहतहौं कोरे कागदपरलिखि मैंतौ श्रीसीताराम यश का गाथा करतहौं यहकहाहै यहबात आगे दोहामें स्पष्ट कहते हैं जो कहौ कि फेरि कैसे काव्यांग इनकी काव्यमें परा तौ सुनौ जहां रामयश आया तहां सब आबाच्य है काहे कि कवित्त की छंद प्रबंध कि सबकी मालिक सरस्वतीहैं वोतिनकर मालिक श्रीरामचंद्रजीहैं तौ जहां राम यश होइगो तहां सरस्वती आपैजाइंगी तब उनके पीछे सर्वकाव्यांग चले जाहिंगे तौ आपई सबआये (प्रमाण) शारददारु नारि सम स्वामी । राम सूत्र धर अंतर्यामी ॥ जेहिपर कृपा करहिं जन जानी । कविउर अजिरनचावहिंबानी ॥(पुनः इसका खुलासा) भक्ति हेतु विधि भवन बिहाई ॥ सुमिरत शारद आवत धाई ॥ इस प्रसंग में स्पष्ट है २८ ॥

भणितमोरि सबगुणरहित विश्वविदित गुणएक ॥
सोविचारिसुनिहहिंसुमति जिनके विमल विवेक २९

टी० । अबश्री गो स्वामीजी जिसबात का सौगंधकिया है उसीबातको फेरिपुष्ट करतेहैं कीभणित मोरिसबगुण रहित अर्थात् काव्यगुण रहित परन्तु एकजो विश्वविदित गुणहै सोमेरी काव्यमेंहै सोयहबातको बिचारि के जिनको विमल विवेकहै तेसुमती सुनहिंगे २९ ॥

एहिमहँरघुपतिनामउदारा अतिपावनपुराणश्रुतिसारा३०

टी० । जो कहौ वह कौन गुण है तौ सुनो यहिमहँ नाम मेरी भणित महँ श्रीराम नामजो बड़ा उदारहै सोईहै सो रामनाम कैसो है उदारहै अतिपावनहै वेद पुराण सबकासार भूतहै उदारकही बड़ेको सो रामनाम एताबड़ाहै कि जिसमें ब्रह्मा विष्णु महादेव चराचर सबको अवकाश है इस बातकी व्याख्यानामबंदनामें कहैंगे ३० ॥

मंगलभवनअमंगलहारी उमासहितजेहिजपतपुरारी ३१

टी०। पुनः श्रीरामनाम कैसोहै कि मंगलको भवन वो अमंगलको हरैया है वो जेहि को सहित उमा पुरारी जो श्रीमहादेव सो जपते हैं ऐसो रामनाम मेरी भणितमें है ३१ ॥

भणित बिचित्र सुकवि कृतजोऊ राम नामबिनुसोह न सोऊ ३२

टी०। देखिये तौ भणित विचित्र होइ वोसुष्टु कविका कियाहोइ परंतु राम नाम बिना सोऊनहीं शोभा पावति जोकहौकैसे तौसुनौ ॥

विधुबदनी सबभाँति सँवांरी सोह न बसन बिना बरनारी ३३

टी०। जैसे चन्द्र बदनी श्रेष्ठ स्त्री सब भूषण करि सँवांरी होइ वोएक वस्त्र न होइ तौ वहनारी शोभानदेइ तैसे सुकविको भणित सर्व काव्यांग रूप भूषणसे भूषित होइ परन्तु रामनाम रूप वस्त्र विनु नग्न नहीं शोभा देती ३३ ॥

सब गुणरहित कुकविकृत बानी रामनाम यशअंकितजानी ३४

टी०। सर्व काव्य गुणरहित वोकुकविकी बाणीका किया जो कवित्तसो राम नाम व राम यश अंकित जानिकै ३४ ॥

सादरकहहिं सुनहिंबुध ताही मधुकर सरिस संत गुणग्राही ३५

टी०। उस कवित्त को सादर कही आदर सहित बुध जो हैं पंडित सदसद्विवेकी तेकहते हैं वो सुनते हैं काहेते कि वे रसग्राही हैं कैसे जैसे मधुकर जो भँवरा रसग्राही है कि फूलचाहै काहूको होइ उत्तम मध्यम पर भँवराको रससे काम तैसे बुधभँवरारूप रामयशरूप रस जहाँ पावहिं तहांहीं लेंहिं काव्य चाहै उत्तमहोइ चाहै मध्यम ३५ ॥

यदपि कवित गुण एकौनाहीं राम प्रताप प्रकट यहिमाहीं ३६

टी०। जो कोई कहै कि जो यह तुमने उत्तम मध्यम फूलका दृष्टांत दीनहै सो तौ भाषा संस्कृत में घटत है कछू काव्यांगमें नहीं घटत तौ काव्यांगविना कैसे रसीली होइगी काव्य रसतौ हईनहीं तुम्हारे काव्य में तापर कहतेहैं कि यद्यपि हमारी काव्यमें कवित्तरस एकौ नाहीं तदपि श्री रामजीको प्रताप यहिमा प्रकटहै ३६ ॥

सोइ भरोस मोरेमन आवा क्यहि न सुसंग बड़प्पनपावा ३७

टी० । सोई हमारे मनमें भरोस है कि सुसंगमें किसने बड़ाई नहीं पावाहै नाम सब बड़ाई पावाहै । यह काकोक्तिहै तौ मेरी काव्य राम यशके साथ क्यों न बड़ाई पावैगो ज़रूर पावैगी यामें यह ध्वनि है कि जितने कविहैं सोसब काव्यांग प्राकृत में कहेहैं सो एकौन जाने केवल श्रीरामजीकी प्रेरणाते राम चरित गावै तौ जे सत्कवि पंडितहैं तेवोही श्री रामचरित्र में से सर्वकाव्यांग निकास लेतहैं कहतेहैं कि अच्छीकाव्य बनीहै । काहेते कि कौन ऐसा कवित्तका अंग वोरसहै कि जो रामचरित्र में न होइ सबै है स्वाभाविक काहेतेस्वभाविकहै कि सरस्वतीकीप्रसन्नताते सोई राम चरित हमगावतेहैं तौ क्यों न सुकवि पंडितकहैंगे जरूर कहैंगे यह हमें भरोसाहै ३७ ॥

धूमौ तजै सहज करुवाई अगरप्रसंग सुगंध बसाई ३८

टी० । अब जो कहा किसुसंगमें के न बड़ाई पाई तब यह प्रश्न भयो कि केबड़ाईपाईहै तापर कहत हैं कि देखिये तौ धूमजो है जड़ सो अपनी सहज करुवाई को छोंड़ि देताहै कब अगर आदि धूपका प्रसंग पावताहै तब सुगंधित होताहै जो एतो बड़ाई धूमने अगर आदिलकड़ी के संगमें पाई तौ मेरी भणित रामयश संग में क्यों न बड़ाईपावैगी ३८

भणितभदेस बस्तुभलिबर्णी रामकथाजग मंगलकर्णी ३९

टी० । यद्यपि भणित हमारी भदेसहै परंतु बस्तु भलीबर्णीगईहै कवनबस्तु बर्णीगई रामकथा सो रामकथाकैसीहै कि जगत्के मंगलकरनेहारी है ३९ ॥

मंगलकरणिकलिमलहरणि तुलसी कथारघुनाथकी
गतिकूर कविता सरित की ज्योंसरितपावनपाथकी ४०

टी० । श्री गोस्वामीजी कहतेहैं कि रघुनाथकी कथा जगत्के मंगल करनेवालीहै वो कलिमल जोपाप तिनके हरनेवालीहै अब जोकोईकहै कि रघुनाथकी कथा तौ जगमंगल करनेवारीहै परंतु जो सुंदरी काव्य में होइ तब तौ जो कुकाव्यमेंपरी तब कैसे जग मंगलकारी होइगी तापर चारि दृष्टांत देकरि दिखावतेहैं जो कहो चारिदृष्टांत क्योंदियेएकैमेंबोध होत तौ इसकी यहबातहै कि कबि संप्रदायहै कै कहूं दृष्टांत को एकदेश लेतहैं कहूं सर्बदेश तौजहां सर्बदेशलेनेकी इच्छाभई तहां एकदृष्टांतदिये

उसमें सर्वांग न मिला तब द्वै तीनि चारि जितनेमें पूराहो तितनादृष्टांत देतेजाहिं साभिप्राय इसबातका खुलासा दृष्टांतनके संगमें कहैंगेसो सुनो गोस्वामीजो कहतेहैं किकबिता सरिताकीगति कूरनाम टेढ़ीपरंतु रामयश सूधाहै कैसे जैसे पावनपाथकी सरितकी गतिठेढ़ी है अभिप्राय यह कि गंगाजीकी गतिटेढ़ीहै पर वहजो पावनपाथहै सो नहींटेढ़ाहै वहतौ आपन गुण टेढ़ाईउ में लियेहै पावनता सुंदरता ताहीते पावन के संगमें टेढ़ऊ पावनहोतहै तैसे जो कुकाव्यउहोइ तो रघुनाथकी कथा के संगमें सुंदर लागतहै व रघुनाथकी कथातोसुंदरैहै चाहेसुंदरकाव्यमें होइचाहै कुकाव्य मेंयहदृष्टांतमें एकदेशटेढ़ेसूधेकामिला ताहीतेदूसरा दृष्टांत फेरिदेतेहैं४०॥

प्रभुसुयशसंगति भणितभलि होइहि सुजन मन भावनी ॥
भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी ४१

टी० । श्रीगोस्वामीजी कहतेहैं कि प्रभुजो श्रीरामचंद्रजी तिनके सुयश के संगसे मेरीभणित भलिहोइहि सुजनन के मन भावनि होइहि कैसे जैसे भव जो महादेव तिनके अंगमें मसान जो चिता तिसकी विभूति सुमिरत नाम ध्यानकरतसंते सुहावनि वो पावनिहै तैसे मेरीभणित जो है सो मसानकी विभूति की नाईं अशोभित वो अपावनिहै वो प्रभुजोश्री रामचंद्र तिनका सुयश श्रीमहादेवके तनुकीनाईं है सो तिसमें लगिकरि मेरीभणित सुहावनि वो पावनि होइगी जो ऊपरकहा कि भलि होइहि सो सुहावनि वो सुजनमनभावनि सो पावनि यहजो भलि वो सुजनमन भावनि वो सुहावनि पावनिकहाहै तामें यह ध्वनिहै कि श्रीमहादेवजीके गौर शरीरमें लगेसे विभूति सुहावनि पावनि है वो जो कालाग्नि स्वरूप महादेवकाहै तिसमें लगेसे पावनितौहै परि सुहावनि नहीं तैसे श्रीराम जीके निर्गुणयशके संग काव्य पावनितौहै परि सुहावनि नहीं वो जबश्री दशरथनन्दन राजकुमार रामयश का संगपाया तौ सुहावनि वो पावनि दोनों भई ४१ ॥

प्रियलागिहिअतिसबहिमम भणित राम यश संग ॥
दारु विचारकि करइ कोउ बंदिय मलय प्रसंग ४२

टी० । दूसरेदृष्टांतमें द्वै देश मिला सुहावन असुहावन पावन अपावन अबहीकुकबाकीहै ताहीते फेरि दृष्टांतदेतहैं दोहामें कि मेरी भणित श्री रामयशसंगमें सबको अतिप्यारी लगैगी कैसे जैसे मलयागिरि चंदनके

संगमें सबकाठ वंदनीय होत है उत्तम मध्यम का बिचार नहीं तैसे श्री रामयशचंदनके संगमें मेरीभणित रूप काठका उत्तम मध्यम का बिचार कोई न करैगा सब गावैंगे ४२ ॥

दो० श्यामसुरभिपयविशदअति गुणदकरहिंसबपान ॥
गिराग्राम्य सिय रामयश गावहिंसुनहिंसुजान४३

टी० । श्याम सुरभि इति तीसरे दृष्टांतमें एकदेश उत्तम मध्यम का० मिला अबहीं किंचित् अवर रहाहै ताहीते फेरि दृष्टांत देतेहैं कि जैसेश्याम गऊहै वो उसका दूधविशद है पर अतिविशदहै वोगुणदाताहै तौ सबकोऊ गुणदाता दूधकेहेतु कालीगऊका सेवन करतेहैं तैसे मेरी गिरा जो भणित सो ग्रामनाम भद्दो गवांरू श्यामगऊरूप है परश्रीसीतारामजीके यशरूप विशदगुणदाता दूधसे भरीजानिकै सब सुजान सुनहिंगे वो गावहिंगे सोई सेवनाहै इहां दृष्टांतका सर्वांगमिला सब मिलिकरि पहिले में टेढ़ासूधा दूसरे में सुहावन असुहावन वो पावन अपावन तीसरे में उत्तम मध्यम चौथेमें गुणद अगुणद यह पांच अंगभये जब पहिले कहा कि सूधके संग टेढ़ऊसूध होतहै तब यह प्रश्नभयो कि सूधातौभया परन्तु सुन्दरतौ नहीं तापर कहा कि सुन्दरकेसंग सुन्दरहोइगो तब यह प्रश्नभयो कि सूधाभयो सुन्दरभयो पर पावन तौ नहीं तापरकहा कि पावनकेसंग पावनहोइगो तब यह प्रश्नभयो कि सूधाभयो सुन्दरभयो पावनभयो परि उत्तमतौनहीं तापैकहा कि उत्तमकेसंग उत्तमहोतहै तब यह प्रश्नभयो कि सूधाभयो सुन्दरभयो पावनभयो उत्तम भयो पर गुणदाता तौ नहीं तापर कहा कि गुणदाता के संग गुणदाता होइगो इहां प्रश्न पूराभया सर्वांग पाइ करि तब दृष्टांतकी इतिभई ४३ ॥

मणिमाणिकमुक्ताछबिजैसी अहिगिरिगजशिरसोहनतैसी ४४

टी० । अब इहांपर यहशंकाभई कि काव्यकरो तुम वो(गावहिंसुनहिं सुजान) यामें क्याहेतु है(समाधान)कुविनकी कविता कविनके इहां नहीं सोहत संतसमाज में सोहत है तापै दृष्टांत कि जैसे मणिमाणिक मुक्ता की जैसी छबिहै तैसी अहिगिरि गजकेशिरपर नहीं सोहतहै मणि सर्पते होती है माणिक पर्वतते मुक्ताहाथीसे परन्तु वहां शोभित तौ है पर जैसी शोभाहै तैसी नहींसोहत ४४ ॥

नृप किरीट तरुणी तनु पाई लहतसकल शोभा अधिकाई४५

टी० । वोही मणिमाणिक मुक्ता राजन के किरीटमें लगै वो सुन्दरी स्त्री के तनुमें तौ परम शोभाको प्राप्तिहोतेहैं सर्वप्रकारते जितनी उनकी शोभाहै तवनेउ ते अधिकहोतिहै ४५ ॥

तैसेसुकवि कवितबुधकहहीं उपजहिंअनतअनतछबिलहहीं ४६

टी० । अब दृष्टांत कहतेहैं कि तैसे सुकविकी कवित्तको बुधजो पंडित सो कहतेहैं कि उपजहिं अनत वो अनत छबिपावतहैं सुकविन के इहां उपजतहै संतसभामें शोभित होत है ४६ ॥

भक्तिहेतु विधि भवन बिहाई सुमिरत शारद आवत धाई ४७

टी० । प्रश्न । ऐसी मणिमाणिक मुक्तारूप कबित्त कबबने उत्तर जब सरस्वती कृपाकरैं प्रश्न सरस्वती कबकृपाकरैं उत्तर जबकबि रामयशगावैं देखिये तौ जब कवि कवित्त करनेलगें तब सरस्वती को सुमिरण करतेहैं तब सरस्वती श्रीरामचन्द्र की भक्तिके हेतु बूह्माजी को भवन छोड़िकै दौरी आवतीहै ४७ ॥

रामचरित सर बिनअन्हवाये सोश्रम जाइन कोटिउपाये ४८

टी० । जो श्रीरामचरित मानसर में स्नान न कराया तौ इतनी दूरि आवनेकाश्रम जो है थकासी सो कोटिहु यत्नते नहीं जातहै अभिप्राय कि वाणीरूपसरस्वतीहै तिसवाणीसे जो रामयश न गाया तौ वाणी कोटिहु यत्नसे सुफल नहीं होतहै ४८ ॥

कबिकोबिदअसहृदयबिचारी गावहिंहरिगुणकलिमलहारी ४९

टी० । यही बात विचारिकै कविकोविद जे हैं ते श्रीरामयश गावतेहैं कलिमलहारी जानिकै ४९ ॥

कीन्हेप्राकृतजनगुणगाना शिरधुनिगिरालगतिपछिताना ५०

टी० । वो जेकवि सरस्वतीको सुमिरिकै प्राकृतजननके गुणगावनेलगे तब सरस्वती माथापीटिकरि पश्चात्ताप करतीहै कि मैं केहि अपराधी के बुलायेसेआई काहेते सरस्वती पछिताती है कि सरस्वतीकेपति श्रीरामचंद्रजीहैं प्रमाण(सुमिरिगिरापतिप्रभुधनुपाणी)तो जो उनकेपतिको छोड़ि दूसरेकेसंग संबंधदेइ तौ बहुतपछितातीहै वो शापदेतीहै कि तेरीकविता का साधुसमाजमें आदर न होइ तौ जो साधुसभामें आदरनभया तौनिस्फलभया अशोभितभया वो जो श्रीसीताराम गुणगावै तौ सरस्वती प्रसन्न

होइकरि आशीर्वाददेतीहैं कि तुम्हारी कवित्तका साधुसमाज में सन्मान होइ तौ जो साधुसमाज में सन्मानभया तौ साफल्यभई ५० ॥

हृदयसिंधुमतिसीपिसमाना स्वाती शारदकहहिं सुजाना ५१

टी० । अब जो कहा कि मुक्तारूप कवित्त जब सरस्वती कृपाकरहिं तब होइ सो समरूपकालंकारकरि दिखावते हैं कि जैसे समुद्रमें सीपी होतीहै तामें स्वातीनक्षत्रका जलपरै तब मोतीहोतहै सो मोतीकोसरांग से वेधि डोरासेपोहि तब बड़ेलोग पहिरतेहैं तब शोभाहोतीहै तैसे हृदय जोहै सो समुद्र वो मतिसीपि सरस्वती स्वातीनक्षत्र के समान है यह सुजान कहतेहैं ५१ ॥

जो वर्षै वरवारि विचारू होहिकवित मुक्तामणिचारू ५२

टी० । सो सरस्वतीरूप स्वातीनक्षत्र जो श्रेष्ठविचार रूप जलवर्षहिं तब कवित्तरूप मोतीहोइ चारुनाम सुन्दर ५२ ॥

युक्तिवेधि पुनि पोहिहहिं रामचरितबरताग ॥
पहिरहिंसज्जनविमलउर शोभाअतिअनुराग ५३

टी० । तिस कवित्तरूपमोतीको युक्तिरूप सरांगसेबेधिकै तब श्रीरामचरित्ररूप श्रेष्ठताग जो डोरा तिसमेंपोहिकरि मालाबनावै तब उसमालाको जिनसज्जननका उरविमलहै तेपहिरहिं नामधारणकरैं तब अनुरागरूप शोभावड़ी अभिप्राय कि जैसे मोतीकीशोभा राजनके इहांहोतहै वो राजनहूंके अंगकीशोभा मोतीसेहोतहै यह अन्योन्या अलंकारहै तैसे कवित्तरूपमोती रामचरित तागसेपोहा माला संतसमाजमें सोहतहै वो रामचरित तागसेपोहा कवित्त रूप माला से संतनहूं की शोभा होतीहै काहेते कि संतनकीशोभा अनुरागहै जो अनुरागनहोइ तौ संतकी शोभा न होइ अनरागकही प्रीतिसोअनुराग रामचरितकवित्तसेहोतहै ५३ ॥

जे जनमें कलिकाल कराला करतब बायसवेषमराला ५४

टी० । अबजोकोईकहै कि क्या तुम्हारी काव्यमाणिकमुक्ता रूपबनीहै तापरकहतेहैं कि मैंतौसत् कविनको कह्योहै मैंतौऐसोहूं किजे कराल कलिकालमेंजन्मैंहैं तिनकर करतबतौ कउवाको ऐसा वो भेषहंसको ऐसाहै५४॥

चलतकुपंथ वेदमगु छांडे कपट कलेवर कलिमल भाँडे ५५

टी० । वो वेदको मार्गछोड़ि कुमार्गमें चलतेहैं । वोकपटके तौ कलेवर कही शरीरै धरेहैं । वो कलिमकके भाँडे नाम पात्रहैं ५५ ॥

वंचक भक्त कहाय रामके किंकर कंचन कोह कामके ५६

टी० । वो भक्ततौ श्रीरामके कहावतेहैं परभक्तिके बंचकनाम ठगहैं । काहेतेकि कामक्रोध लोभके किंकरनाम टहलू होरहे हैं ताहीतेभक्ति से बंचकहै (शंका)जेबंचकहैं वो कामक्रोध लोभके किंकरहैं तेश्रीरामचन्द्रजी के कैसेकहाये (समाधान) सुनों अपनी ओरसेतौ वे बंचकेहैं वो काम क्रोध लोभके किंकरहैं परंतु गुरुन करिकै पायाजो संस्कार माला तिलक छाप मंत्रनाम ताते रामजीके कहावतेहैं अथवा आपई जगत्के लोगनके ठगने केहेतु सुंदर भेषबनाइ लियेताते श्रीरामजीके कहाये ५६ ॥

तिनमहँप्रथमममरेखजगमोरी धिकधर्मध्वजधंधकधोरी ५७

टी ०। पुनः कैसेहैं धर्मध्वजी हैं धर्मध्वजी कही दिखावने के ऊपरसे आडंबर बहुत किये रहतेहैं भीतर निष्टा नहीं पुनः कैसे हैं धंधक धोरी हैं धंधककही व्यर्थ धंधातिनके धोरीनाम वृथाबोझा ढोवनेवाले एतेजे धिक्हैं तिनमें हमारी प्रथम रेखाहै मैंतौ असहौं ५७ ॥

जो अपने अवगुण सवकहऊं वाढ़ै कथा पार नहिंलहऊं ५८

टी० । जोमैं अपने अवगुण सवकहने लगौंतौ यहकथा वढ़िजाइ पारैन पावौं फेरि रामकथा कब करौं ५८ ॥

ताते मैं अति अल्प वखाने थोरेहि महँ जानि हैं सयाने ५९

टी० । ताहीतेमैं अतिअल्प नाम थोरेमें कहेउं सयानेजे चतुरहैं तेजानि लेहिंगे यामें यहभाव है किजे सबगुण परिपूर्ण होतहैं ते अपने मुखते आपनीन्यूनताही कहतेहैं परि यहबातको चतुरजन जानते हैं मूर्ख नहीं जानते ५९ ॥

समुझिविविधिविधविनतीमोरी कोउनकथासुनिदेइहिखोरी ६०

टी० । यह हमारी विविध प्रकार की विनयसुनि करिकोऊ कथा सुनि खोरिनाम दोषनदै इहि सबकोउ सत्कार पूर्वक सुनहिंगे ॥ ६० ॥

एतेहु पर जे करिहैंशंका मोहुंते अधिक ते जड़ मति रंका ६१

टी० । वो इतनिउँ विनती सुनि जोकोऊ शंकाकरी किक्या यहकाव्य

मुक्ता रूप बनीहै तातेहम हूं ते अधिक जड़हो मतिके दरिद्री हैं ६१ ॥

कबिन होहुँ नहिँचतुरकहावों मतिअनु रूपरामगुणगावों ६२

टी० । काहेते किमैं नतौ कबिहोऊं नचतुर कहावों केवल अपनीमतिके अनुरूप श्रीरामचन्द्रजीको गुणगावतहौं तौकाहेको शंकाकरना चाही६२॥

कहँरघुपतिकेचरितअपारा कहँमतिमोरिनिरत संसारा ६३

टी० जोकहौ कि फेरि इतना निहोरा काहेकोकरतेहौतौ सुनों देखिये तो कहां श्रीरघुपतिके अपार चरित वो कहां मोरिमति जो संसारके विषे मेंनिरत ह्वै रही है ६३ ॥

जेहिंमारुत गिरिमेरुउड़ाहीं कहहुतूलकेहि लेखेमाहीं ६४

टी० देखिये तौ जौनयमारुत में सुमेरुगिरि उड़िजाय तेहि के आगे तूल जो रुई सो कौन लेखे में है यह दृष्टांत है इसका दृष्टांतयह है कि तैसे जौन श्रीरामचरित्र शेषमहेश को अगम तौन मैं किया चाहतहौं तौ हमारा कौन लेखाहै ६४ ॥

समुझतअमितरामप्रभुताई करतकथा मनअतिकदराई ६५

टी० श्रीरामचन्द्रजीकी प्रभुताई अमित समुझिकै कथाकरते में मनअति कदरातहै ताहीते सबके प्रति निहोरा करतहौं कि सबकोई कृपा करो तब मन सूरमा होइ रामयशमें लगै ६५ ॥

शारदशेषमहेशविधिआगमनिगमपुरान ॥
नेतिनेतिकहिजासु गुणकरहिं निरंतरगान ६६

टी० शारद इति अब जो कोईकहै कि तुम श्रीरामजी की प्रभुताई अगम जानते हौ तौ क्यों श्रीरामगुण गावने को बैठेहौ तापर कहते हैं कि काहम रामगुण गावनेको बैठे हैं यहतो परम्पराहै कि शारदजोसरस्वती वो शेष वो महेश वो विधिकही ब्रह्मा वो आगम जो शास्त्र तंत्र वो निगम जो वेद वो पुराण ये सब कोई नइति नइतिकहि जा श्रीराम चन्द्रके गुण निरंतर गावते हैं तैसे हमहू अपने बूतभरिगावैंगे ६६ ॥

सबजानतप्रभुप्रभुतासोई तदपिकहेबिनुरहा न कोई ६७

टी० जो कहौकि वे सब श्रीरामजीकी प्रभुता जो अगम है तिसको नहीं जानतेहोहिंगे तापर कहतेहैं कि सो नहीं श्रीरामचन्द्रजीकीप्रभुता

जो अगम है सो तवनेकोसब जानत हैं परंतु बिनाकहेकोई न रहा६७॥

तहांवेदअस कारणराखा भजनप्रभावभांतिबहुभाषा ६८

टी० जोकहौ कि सब कोई जानतेहैं कि श्रीरामचन्द्रजीकी प्रभुताको पारनहीं तौ पार तौ पावैंगे नहीं फिरि क्योंगावते हैं तापर कहते हैं कि तहां वेद ऐसाकारण राखिदीन है कि भजन जो है भक्ति तिसका प्रभाव बहुत भांतिका है वो बहुत भाषासे है भांतिकही नवधा प्रेमा परा सो नव धा है विधिको इसीग्रंथमें है एक आरण्यकाण्डमें लक्ष्मणजीसे रघुनाथजी कहा कि(श्रवणादिक नवभक्ति दृढ़ाहीं)वो दूसर शबरीसेकहासो विदित है सो नवधाके अंग बहुतहैं यहतोभांतिहै अबभाषा सुनौ देवभाषानागभाषा नरभाषानरभाषामेंदेशदेशकीभाषा जैसेश्रीकोशलदेश तिरहुतिदेश बंगाला उड़ीसा तिलंगदेश द्राविड़देश माराष्ट्र गुजरात मुलतान पांचाल ब्रज देश इत्यादि सब अपनी अपनी भाषासे श्रीरामगुण गावते हैं यामें यह धुनिहै कि देवमनुजनाग सबकोऊजो श्रीरामगुणगावते हैं सो पार पावने को नहीं केवल अपनी अपनी वाणीसे श्रीरामगुणगाइगाइ भक्ति करते हैं तैसे हमहूं अपनी नर भाषा से श्रीराम गुणगाइ भक्ति करते हैं कछु पार पावनेको नहीं ६८॥

एकअनीहअरूपअनामा अजसच्चिदानन्दपरधामा ६९

टी० जो कोईकहै कि ज्ञान विज्ञान योगादि मुक्ति के साधनछोड़िभक्ति करनेसे क्याहोता है तापर कहते हैं कि एकही जेकरे समान और नाहीं ताहीते एक वो अनीह कही इहांजो अनेक तरहकी चेष्टा तेहिते रहित वो अरूपकही प्राकृत रूप रहित वो अनामकही गुण रूपानामन सेरहित वो अजकहीअजन्मा वो सत्‌चित्‌आनंदमय वोसबके परेहैंधामजाको ६९॥

व्यापकविश्वरूप भगवाना तेइधरिदेहचरितकृतनाना ७०

टी० पुनः कैसोहै सर्व में व्यापक है पुनः विश्वरूप है पुनः भगवान् कहीषड़ ऐश्वर्यमान है ऐसो जो ईश्वर तेहिदेह धरिकरि नाना चरित करतहैंदेह धरब कैसे जैसे प्राकृत मनुष्य कहते करते हैं तैसे कहन करनासोई देह धरबहै ७०॥

सोकेवल भक्तनहितलागी परमकृपालप्रणतअनुरागी ७१

टी० सो केवल भक्तन के हेतु भक्तकही जो ऊपरभक्तिका स्वरूपकहि

आयेहैं सो तिसमें कोई प्रकारकी भक्ति जेहिमें होइ सो भक्त तेहि भक्त हेतु ईश्वरदेहधारीकीनाईं नाना प्रकारके चरित्र करते हैं काहेते परम कृपालु हैं वो प्रणत जो हैं शरणागतवाले तिनके अनुरागी हैं ७१ ॥

जेहिजनपरममताअरुछोहू तेहिकरुणाकरकीन न कोहू ७२

टी० अब जो कोईकहै कि जब ईश्वर भक्तन के ऊपर इतनी ममता करतहैं तब कबहूं क्रोधऊ करत होई तापर कहते हैं कि सो नहीं जेहि जनके ऊपर ममता वो छोह करतहैं तेहिके ऊपर फिरि क्रोधनहींकरत क्रोधतौ ते करते हैं जे अपूर्ण हैं समर्थ नहीं हैं कि अपने भक्तका अपराध क्षमा करहिं ईश्वर तौ सर्व प्रकार ते परिपूर्ण हैं समर्थ हैं सो काहे को क्रोध करैगो ७२ ॥

गईबहोरि गरीबनेवाजू सरलसबलसाहिब रघुराजू ७३

टी० जो कोई कहै कि वह ईश्वर कस समर्थ हैं कवन कवन गुण हैं तापर कहते हैं कि गईवस्तु के बहोरि हैं वो गरीब निवाजहैं वो सरल हैं वो सबल हैं वो साहिब हैं वो रघुराज है यह छः विशेषणका उदाहरण सातौकांडमें देतेहैं सो सुनौ प्रथम बालकाण्डमें विश्वामित्र की यज्ञगई वो अहल्याकी पाती बृतगई वो राजा जनककी प्रतिज्ञा गई सो सबको बहोरि दिये वो अयोध्याकांड में निषाद ऐसो गरीब वो मगुग्राम वासिनो गरीब वो श्रीचित्रकूट निवासी कोलभील ऐसे गरीबनको निवाजे हैं सरलताआरण्यकाण्ड में देखौ कि सकल मुनिनके आश्रमन जाइजाइ सुख दीन वो सरलता विराध खर दूषण त्रिशिरा कवंध बालि रावण कुंभकरण इत्यादिको कौतुकहो मारे एतेबड़े बलीहैं वो साहिब कही जो दूसरेकी साहिबी सजै सो सुग्रीव विभीषण की एतीबड़ी साहिबी सजी कि जो इंद्रादिको दुर्लभहै यहसबलता वो साहिबी चारिकांडहैं आरण्य किष्किंधा सुंदरलंका वो रघुराजत्व उत्तर काण्ड श्रीराजलीला में देखि लेव ७३ ॥

बुधबरणहिंहरियशअसजानी करहिंपुनीतसुफलनिजबानी ७४

टी० ऐसे समर्थ शीलमान् जानिकै बुधजोहैंपंडित ते हरियश गावते हैं गाइगाइ अपनी वाणीको पावन वो सुफलकरतेहैं काहेतेवाणीके पावनता वो सुफलता सत्य बोलना है सो हरियश जेता बढ़ाइ कै गाव्वो तेता थोरैहै ताते सत्यभया वो अपकारका यश गायातौ जेतागाया तेतासमाई उसमें नाहींतौ असत्य भयातबवाणीनिष्फलभई ७४ ॥

तेहिबलमैंरघुपतिगुणगाथा करिहौं नाइरामपद माथा ७५

टी० तेहिबलनाम प्रभुकाशील समर्थता समुझिकरिमैं भी श्रीरघुपति गुणगाथा करिहौं श्रीरामचन्द्रजीको माथा नवाइकरि ७५ ॥

मुनिनप्रथमहरिकीरतिगाई तेहिमगुचलतसुगममोहिंभाई ७६

टी० अबजो कोई बूझै कि भला प्रभुके शीलसमर्थ्य ताके बलते तौ तुम रघुपतिगुण गावोगे परि किस रीति से तापर कहतेहैं कि जौनीरीति से मुनिन प्रथमही हरिकीरति गायाहै उसी मगमें चलत हमको सुगम है जो कहौ कौनीरीति से मुनिन गाया सो सुनौ जो अति अगमराम-चरित मानस तिस में से लेकरिकै अपनी अपनी रुचि मति माफिक मुनिनने गाईहै नामकोई जन्म प्रसंग बहुतकहा कोई विवाह प्रसंगकोई वन प्रसंग कोई रण प्रसंग कोई राज प्रसंग कोई बालपौगंड किशोर की लीला औ अयोध्याजीमें बहुत कहाहै इत्यादि सब प्रसंग रामचरित मा-नसमें गतहै तैसेमैंभी अपनी रुचिमति माफिक कहौंगो इस विधि से मन दृढ़किया कुछ मुनिनकी कही कहिबेको नहींकहा है उसी रास्ता में चलनको कहा है कि जैसेअगम रामचरित मानसमेंमुनिगाइ करिरास्ता करि दीन है कि समस्त रामचरित मानस गाइबेको समर्थनहीं किसू की जहांतक जिससे गाया जाय तहांतकगावो ७६ ॥

अतिअपार जे सरितवर जौं नृप सेतु कराहिं ॥
चढ़िपिपीलिकापरमलघु बिनुश्रमपारहिंजाहिं ७७

टी० अब जोकहा कि मुनिनकाकियाजोरास्ता तिसमेंहमचलेंगे तिसको वाचकलुप्ता दृष्टांतकरि दिखावतेहैं कि जैसे अति अपारजे सरितवरहैं वर कहीश्रेष्ठ यमुनागंगा आदि ताकोएकदेश कि जोमनुष्यनको विनुश्रमपार जाइवे योग्यनहीं सोवही जोकोई राजासेतु कराइदेइ तौ पिपीलि जो चिउँटी तिसको तौ अति अपारहै पिपीलिका जोपरमलघु सो विनाश्रम पार चलीजाइ तैसे श्रीराम यश बड़े बड़ेको अवसाननहीं तिसमें मुनिन गाइगाइ सेतुकरि दीन उसीरस्तामें हमको चलत सुगम है ७७ ॥

एहिप्रकार बलमनहिंदिखाई करिहौं रघुपतिकथासुहाई ७८

इति षष्ठप्रकरणम् ६ ॥

टी० यहि प्रकारनाम जोप्रथम प्रश्नभया कि किसप्रकार करौगे तिसका दृष्टांत देकरि कहा कि यहि प्रकार जैसाकहि आये हैं वो यहि प्रकारसे मनको बलदिखाइकरि श्रीरामकथा कहौंगो कैसी श्रीरामकथाहै अति सुहाई नामसुंदरीहै ७८॥इतिश्री रामचरित मानस परिचारिकायां देवादि दश प्रति प्रार्थना पूर्वकसाभिप्राय बंदनामनसमुझावनोनामषष्टःकैंकर्यः६॥

व्यास आदिकविपुंगवनाना जिनसादर हरिचरितबखाना १

टी० अब श्रीगोस्वामीजी कविन की बंदना करते हैं कि व्यासजी आदिजे मुनीश्वर कवि हैं पुंगव नामबड़े बड़े जिनने आदरसंयुक्त हरिचरित्र कोबखानाहै १ ॥

चरन कमल वन्दौ तिन केरे पुरवहु सकल मनोरथ मोरे २

टी० तिनसबके चरण कमल बंदतहौं सबकोई मिलिकरि हमारा मनोरथपर्ण करौ २ ॥

कलिके कविन करौं परणामा जिन वरणे रघुपतिगुण ग्रामा ३

टी० व्यासादि तीनि युगके कविनके कहि कलिके कविनको कहते हैं कि कलिके जितने कविहैं तिनके प्रणाम करत हौं अबकलिके कविनका विभाग करतेहैं कि जेश्रीरघुपति गुणग्राम वरणेहैं ३ ॥

जे प्राकृत कविपरम सयाने भाषा जिन हरि चरितबखाने ४

टी० वो जेप्राकृत कविहैं परंतु परम सयाने नाम चतुरहैं प्राकृतकही सामान्य देवता वो राजनके गुण कहने वाले वो भाषा करि जिनने हरि चरित्र बखानेहैं ४ ॥

भयेजे अहहिंजेहोइहहिंआगे प्रणवौं सबहिंकपटछलत्यागे ५

टी० यह तीनि विभाग कहि अब भूत भविष्य वर्त्तमानके कहतेहैं कि भयेजे नाम हमारे पूर्वभयेहैं व जेवर्त्तमानमेंहैं वो जे आगेहोहिंगे तिनसब कोप्रणाम करतहौं कपटछल छांड़िके ५ ॥

होउ प्रसन्न देहु बर दानू साधु समाज भणित सन मानू ६

टी० होउ प्रसन्ननाम सबकोई प्रसन्न होइ करि हम को यह वरदान देहुकिसाधुनके समाजमें हमारी भणितका सन्मानहोइ ६ ॥

जोप्रबंध बुधनहिं आदरहीं सोश्रम बादि बाल कविकरहीं ७

टी० जोकहोकि जोसाधु समाजमेंभणितका सन्मान भयातौ क्याहोगा

सोसुनो जोप्रबंधको बुध जोपंडित पंडितकही जोसत् असदका विवेकीहो सोई साधुसो जो आदर न करै तौ सोकाव्य करनेमें जो श्रमसो श्रमबादि कही मिथ्या बालकवि करतेहैं बालकहीमूर्ख ७ ॥

कीरति भणित भूतिभलिसोई सुरसरि समसबकरहितहोई ८

टी०। पुनः काहेको साधु समाजमें भणितकासन्मानचाहतहौं कि कीरति वो भणित वो भूतिसोई भलीहै जो सुरसरिकीनाईं सबको हितहोइ कीरतिकही यश भणितकही कवित भूतिकही ऐस्वर्य सो गंगाजीकेबराबरि सबको हितकारीहोइ तौभलीहै जैसे गंगाजीको भगीरथजी अपने कल्याणके हेतुलाये परंतु गंगाजी उनकाभीकल्याणकिया वो त्रैलोक्यका कल्याणकिया तैसे जबकवित ऐस्वर्य अपनो कल्याणकरि सबको कल्याण कारीहोइ तौभलीहै जो आपनै भरेको भई तौ भलीनहीं येहीबरे कहत हौं कि जोसाधु समाजमें सन्मानभयो तौ सबको हितकारी होइगो ८ ॥

राम सुकीरति भणित भदेशा असमंजस असमोहिंअँदेशा ९

टी०। तहांश्रीसीतारामजीकी सुंदरीकीरति तौसबको हितकारीहै परंतु हमारी भणित जोकविताई सो भदेश भदेशकही गँवारू अच्छीनहीं तिस कविताईसे श्रीरामजीकी कीरति सुंदरि कहतहौं सो इसबातका हमको अँदेशा नाम चिंताहै कि ऐसा न होइ कि हमारो भणितके संग श्रीराम कीरति अशोभितहोइ जाइ सो इसचिंताका असमंजसहै कि कविताई करूं कि न करूं ९ ॥

तुम्हरी कृपा सुलभसबमोरे सियनि सुहावनिटाटपटोरे १०

टी०। सो हेकविजनो तुम्हारी कृपासे हमको सबप्रकारते सुलभहोइगो नाम तुमसब जो कृपा करो तौ मेरी भदेश भणितमें श्रीरामजी की कीरति शोभित होइगी कैसे जैसे पटोर की सियनि टाटपर शोभितहोत है तैसे मेरी भणितरूप टाटपर श्रीरामकीरतिरूप पटोर शोभित होइगी यह बाचकलुप्ताहै १० ॥

करहुअनुग्रहअसजियजानी विमलयशहिअनुहरैसुबानी ११

टी०। जो ऐसा अपनेजियमें जानो कि देखौतौ यह तुलसीदास बड़ो अनारीहै कि कैसाटाटमें पाट सीवैहै तौ आपनजानिकै अनुग्रहकरौजाते अनुग्रहकरिकै पाटकै लायक पटदेहु अभिप्राय कि विमलयश जो श्रीराम कीरतितिसकै अनुहरितनाम योग्यसुष्टवाणीदेहु ११ ॥

सरलकबितकीरतिबिमल सोइआदरहिंसुजान ॥
सहजबैरबिसरायरिपु जोसुनिकरहिंबखान १२

टी० । अब श्रीगोस्वामीजी जो पूर्वकहा कि प्रसन्न होइ वरदान देहु जाते साधु समाजमें भणितका सन्मानहोइ उसमें एक शंकाभई सो समाधानकरि प्रसंग मिलावनेहैं कि जो कहा कि साधु समाजमें भणितका सन्मानहोइ सो कहतेहैं कि सरल तो कवित्तहो सरलकही जिसमें बहुधा दुत्तअक्षर न होइ वो जमक अनुप्रास साधारणहोइ वो बांचत में जीभ स्खलेत चलीजाइ ऐसो तो कवित्तहोइ वो उस कवित्तमें कीरति विमल होइ तब सुजान आदर करते हैं जो कदापि कबित्त सरलभयी वो कीर्त्ति बिमल न भई वा कीर्त्ति बिमलभई कबित्त सरल न भयी टेढ़ोभयी तौ साधु आदर नहींकरते जब दोनों अच्छे होयँ तब सुजान आदर करैं वो सहजबैरी जोहै तेउ बैर बिसराइ बखान करते हैं सहज बैरी भाषा के संस्कृत वाले हैं परंतु जो सरलकवित्त वो कीर्त्ति बिमलहोइ तो वे भी बखानतेहैं १२ ॥

सोनहोइबिनुबिमलमति मोहिमतिबलअतिथोरि॥
करहुकृपाहरियशकहौं पुनिपुनिकरौंनिहोरि १३

टी० । सो ऐसी भणित बिनुबिमल मतिनहीं होतहै औ हमको मति काबल थोरा है सो आपसब व्यासादि मुनीश्वर वो कवीश्वर कृपाकरहु विमल मतिदेहु जाते श्रीरामयश कहौं सो आप सबसे पुनि पुनि नाम बारबार निहोरा करतहौं १३ ॥

कवि कोविद रघुवर चरित मानसमंजु मराल ॥
बालविनयसुनिसुरुचिलखिमोपरहोहुकृपाल १४

इतिसप्तमप्रकरणम् ७ ॥

टी० । हे कविजन वो हे कोविदजन आपसबकैसेहैं कि श्रीरामचन्द्रजी को चरित जोहै सो मंजुनाम निर्मल मानसरहै तिसकेमरालनाम हंसहौ सोहमारीबाल विनय सुनिकरि वो हमारी सुंदरिरुचि लखि करिकै हमारे ऊपर कृपाकरो १४ ॥

इतिश्रीरामचरितमानसपरिचारिकायांसमष्टी
कविबन्दनानामसप्तमकैंकर्यः ७ ॥

बंदौं मुनिपदकंज रामायणजेहिनिर्मयो ॥
सखरसकोमलमंजुदोषरहितदूषणसहित१

टी०। अब श्रीगोस्वामीजी महाराज कहतेहैं कि मुनिपद कमल बन्दौं कवनमुनि रामायण जिन्हने निर्मयो अर्थात् श्रीवाल्मीकिजी जो कहौ कि रामायण तौ बहुत मुनिनकीनहै तुम वाल्मीकिको कैसेकहतेहौ तहां अपर मुनिन जो रामायणकीन्हहै सो गौणहै काहेते कोई पुराणके संगमें कोई संहिताके संगमें कोई स्मृतिनके संगमें इत्यादि पीछेपीछे रामायणप्रसंग पाइकरि कीनहै वो श्री वाल्मीकिजी मुख्य रामायणै कीन्हहै अपर ग्रन्थ करबै न कीन ताहीते मुनिनमें रामायणके कर्त्ता मुख्यवाल्मीकि हैं तिनके पदबन्दौं वो रामायण कैसोहै कि सखर नाम खरके सहित परन्तु नाम-मात्र खरहै काहे नाममात्र कि खरनाम राक्षस सो तवन नामकसहै कि सकोमल नाम सुनतमें बहुत प्रियलगतहै पुनः कैसो रामायणहै कि मंजु-नाम निर्मल है पुनः रामायण कैसो है कि दूषणके सहितहै वो निर्दोष है अभिप्राय यह कि जो काव्य होतीहै तिसमें थोरा बहुत दोषदूषण परतैहै परन्तु श्रीवाल्मीकि रामायण काव्य दोष दूषणसे रहितहै दोषदूषण नाम मात्रहै जो खरदूषणकी कथा सो कथा कैसी है कि मंजु नाम निर्मल कि जेहिके सुनेते जन्म मरण छूटिजाइ ऐसी रामायण है अथवा पुनः कैसी रामायण है कि जिसमें पांच रसभक्तिके परिपूर्णहैं कौन रस तहां सखके आगे जो है रस सो सब अक्षरन को बोधकहै जा रामायणमें सखरस है सखरसकही सखारस वो कोमलरसहै कोमलकहीवात्सल्यरस वोमंजुरस है मंजुरस कही शृंगाररस वो दोषरहित रसहै दोषरहित रसकही शान्त रस वो दूषणसहित रसहै दूषणसहित रस दास्य (शंका) दास्यरस दूषण सहित कैसे (उत्तर) सुनो पूर्ण दास्यरस तौ तबहोइ जब स्वामी जिस राहमें पदसे चलै तहां सेवक शिरसे चलै तब दूषण रहितहोइ सो तौ होनेकोनहीं ताते दूषण सहितहै परंतु इस दूषणको जो दास समुझे रहै तौ स्वामी पूर्ण मानिलेतहैं (दूषणकाप्रमाण चौ०) (शिरभरजाउँउचि-तअसमोरा । सबतेसेवकधर्मकठोरा) ऐतेपंचरस भक्तिके जिस रामायणमें ठौरठौर भरेहैं सो ऐसो रामायण जिनने कीन्हहै तिनके पदबंदौं १ ॥

बंदौं चारिउवेद भवबारिधि बोहित सरिस ॥
जिनहिंनसपनेहूँखेदवरणतरघुवरबिमलयश२

टी० । बंदौंचारिउवेद अबश्रीगोस्वामीजी कहतेहैं कि ऋगयजुर साम अथर्वण चारिउवेदको बंदौं कैसेहैं वेदकीभवसमुद्रके वोहितनाम जहाजहैं जीवन के पारकरिबेको जो वेदकी कही जेकरैं ते भवसागर तरैं इसमें संदेहनहीं फेरिवेदकैसेहैं कि श्रीरामयश वरणतेमेंजिनको सपने खेदनहीं निःखेद रामयश वरणतेहैं २ ॥

बंदौंविधिपदरेनुभवसागरजिन्हकीन्हयह॥
संतसुधाशशिधेनुप्रकटेखलविषवारुणी ३

टी० । विधि पदरेणु बंदौंविधि जो ब्रह्मातिनकेपदकी धूरिबंदौं कैसेविधि हैं कि जिनने यह भवसागरकीन सागरमें चौदहरत्नप्रकटे तामें कछुनीक कछू बिकारहै तैसे भवसागरमें संतसुधा शशिधेनु एतेनीक वो खल विष-वारुणी एते विकाररत्न प्रकटे ३ ॥

विबुधबिप्रबुधग्रहचरणबंदिकहौंकरजोरि ॥
है प्रसन्नपुरवहु सकल मंजुमनोरथ मोरि ४

टी० । अबयह दोहामें समष्टी बंदनाकरतेहैं कि विबुधजो तेंतीसकोटि देवतावो बिप्र जोसर्व ब्राह्मण बुध जो पंडित वो ग्रह जो सूर्य चंद्र मंगल बुध वृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु येते नवसो सबको बंदिहाथ जोरि कहतहौं कि सबकोई प्रसन्न होइकरिमेरे मंजु मनोरथको पूर्ण करौ ४ ॥

पुनि बंदौं शारद सुरसरिता युगुल पुनीत मनोहर चरिता ५

टी० । पुनः शारदसरिता जो कविताई वो सुरसरिता जो श्रीगंगाजी तिनको बन्दौं कैसी हैं युगुल पुनीतहैं वो युगुल का चरितमनोहर है ५ ॥

मज्जन पान पाप हर एका कहत सुनत एक हर अविवेका ६

टी० । एक सुरसरिता जो हैं सो मज्जन पानते पाप हरती हैं वो एक शारद सरिता कविताई जो है ते कहत सुनत अविवेकहरिलेतहै ६ ॥

गुरु पितुमातु महेश भवानी प्रणवौं दीन बंधु दिन दानी ७

टी० । हमारे गुरुमातापिता रूप जो महेश भवानी हैं तिनको प्रणाम करतहौं कैसे हैं महेशभवानी दीनबंधु हैं वो दिन दानी कहिये रोज रोज़ देनेका स्वभावहै ७ ॥

सेवकस्वामिसखासियपीके हितनिरुपधिसबविधितुलसीके ८

टी० । पुनः कैसे हैं महेशभवानी कि सियपिय जो श्रीरामचन्द्रतिन्ह के सेवक हैं स्वामीहैं सखाहैं ॥ लक्ष सेवकका॥ (बारबार वरमांगो हर्षिदेहु श्रीरंग पदसरोज इत्यादि) ॥ लक्षस्वामीका॥ (लिंगथापि विधिवत करिपूजा) लक्षसखाका॥ (शंकरप्रियममद्रोही शिवद्रोहीममदास । तेनरकरहिंकल्पभरि घोरनर्कमहँबास) अथवा जबशिवजीकेबिवाहकी अगुवई किया यह भी सखत्वपायाजातहै वोतुलसीके तौ सर्वविधिते निरुपाधि हितकारीहैं ८ ॥

कलिबिलोकिजगहितहरगिरिजा शावरमंत्रजालजिनसिरिजा ९

टी० । देखिये तौ यह कराल कलिकाल जामें मंत्र यंत्र तंत्र सब निष्फलहोइगये काहेते कि इनमें विधिनिषेध बहुतहैं सो कलिमेंहोइनाहीं सकते ताहीते सो ऐसो कलिबिलोकिकै जगत्के हितहेतु हरगिरिजा जो महेशभवानी ते शावरमंत्र का जाल नाम समूह सिरिजा ९ ॥

अनमिलि अक्षर छंद न जापू केवल प्रकट महेश प्रतापू १०

टी० । सो वह शावरमंत्र कैसो है कि अनमिल तौ अक्षर है वो छन्द प्रबंध नहीं वो जापनहीं जैसे अपरमंत्रनमें जापकी विधि है कोई लक्ष कोईसहस्र कोईशत कोई एकइस ऐसे सबमंत्र जानौं सो तस शावरमेंनहीं केवल श्रीमहेश भवानीको प्रताप प्रकटहै नाम एकवार कहिदेने सेजिस कार्य के बरेकहौ वहतुरंत सिद्धिहोतहै ऐसे दयालु हैं महेशभवानी १० ॥

सो महेश मोपर अनुकूला करौं कथा मुद मंगल मूला ११

टी० । सो महेश भवानी हमारेऊपर अनुकूलहैं ताहीते मुदमंगल की मूल श्रीरामचन्द्र की कथा सो करतहौं यामें यह अभिप्राय है कि जेहि महेशभवानी की कृपाप्रतापते अनमिलअक्षर विनाछंद को सो सर्व कार्य साधेहै तौ श्रीरामजीकी कीरति तौ सर्व सिद्धि दाता स्वतः है रही मेरी भणितभदेस सो भी सर्वकार्यसाधक होइगी काहेते महेशभवानी मोरेऊपर अनुकूलहैं ताहीते ११ ॥

सुमिरि शिवा शिव पाइ पसाऊ वरणौंरामचरितचितचाऊ १२

टी० । शिवा जो पार्वती शिव जो महादेव तिनको सुमिरि कै उनकी पसाउ जो प्रसन्नता सो पाइकरि चित्तमें चाउ नाम आनंद होइकै श्रीरामचरित वरणौं १२ ॥

भणितमोरिशिवकृपाविभातीशशिसमाजमिलिमनहुँसुराती १३

टी० । श्री शिवजीकी कृपाते मोरि भणित विभाति नाम शोभित होइ गी कैसे जैसे समाजके सहित चंद्रमा को मिलिकरि रात्री शोभित होती है चंद्रमाकी समाज नक्षत्र है तैसे मेरी भणित रात्रीहै शिवकृपा चंद्रमाहै अपर व्यासादि कवि कोविदन की कृपा नक्षत्र है तिनको मिलिकरि शोभित होइगी १३ ॥

जे यहिकथा सनेहसमेता कहिहहिंसुनिहहिं समुझिसचेता १४

टी० । अब श्रीगोस्वामीजी महेश भवानीके बलसे अपनी भाषाभणित-का फल कहतेहैं कि जे कोउ यह कथाको कहैंगे सुनैंगे समुझैंगे ते सचेत होहिंगे १४ ॥

होइहैंरामचरण अनुरागी कलिमलरहित सुमंगलभागी १५

टी० । वो श्रीसीतारामचरण के अनुरागी होहिंगे कलि मल से रहित होहिंगे सुन्दर मंगलके भागी होहिंगे होइहहिं सबपदनकी क्रियाहै १५॥

सपनेहुँसांचेहुमोहिंपर जोहरि गौरिपसाव ॥
तौफुरहोइजोकहेउँसब भाषाभणितप्रभाव १६

इत्यष्टमप्रकरणम् ८ ॥

टी० । अबजो फलकहि आयेहैं तिसको दृढ़करतेहैं कि सपनेहुँ नामस्वप्न अवस्थामें वो सांचेहुँ नाम जाग्रत अवस्थामें जो हरगौरिकी हमारे ऊपर पसावनाम प्रसन्नताहै तौ भाषा भणितकही कविताई जो मेरीहै सो तिसका प्रभाव जो कहेउँहै सो फुरनाम सांचहोइगो सपनेमें वो जाग्रत में हरगौरिकी प्रसन्नताकाप्रसंग महात्मनसे अससुनाहै कि श्रीगोस्वामीजी प्रथम श्रीअयोध्याजी संस्कृत करिकै मानस रामायण जो अपने गुरुसे सुना सो कहने लगे तबमनमें यहकरुणाभई कि संस्कृत सबजीवन के हितकारी न होइगो जो भाषाहोइ तौ सब जीवनको हितकारीहोइ तब विचारे कि मानस रामायणके आचार्य श्रीमहादेवजीहैं तौ उनकी सलाह लेइकरि करौं तब काशीको गये सो श्रीमहादेवजी परमदयालुगोस्वामी जी की सब जीवनपर करुणा समुझि करि सन्यासीको रूपधरि गोस्वा-मीजीके पासजाइकरि कहा कि तुम्हारा किया जो रामायण सो हमदेखैं तबगोस्वामीजी दीन्ह सो लेइकरि गुप्तकरि दीन्ह जब दुइ तीनिदिन

बीते तब गोस्वामी विचारेकि मैं किसके पास जाउँ तबमहादेवजीके पास जाइ करि अनसन ब्रतकिया तबशिवजी सपनेमें कहा कि तुम्हारीपोथी हमले आयेहैं काहे कि तुम इसग्रंथको भाषाकरो जाते सब जीवनको सुलभहोइ तब श्रीगोस्वामीजी जागिकरि प्रार्थनाकीन कि हेशंभो भाषा भणित कौन पछैगो तब शिवजी प्रत्यक्षहोइकरि कहा कि तुम भाषाकरो इसको सबकोई ग्रहणकरैगो वो सबको सुखदाई वो कल्याणकारी होइगो तब श्रीगोस्वामीजी प्रसन्नहोइ करि फेरि श्री अयोध्याजीको आये भाषा प्रबंध प्रारंभकीन श्रीरामनौमीके दिन कुछकथा करिफेरि कुछकाल बीते काशीजीको गये यह सपने सांचेका प्रसंग जसकुछमहात्मनसे सुना सो लिखा अथवा गोस्वामीजीके ऊपर तौ शिवजी सहजैमें सपने सांचे प्रसन्नहैं काहेते कि उनकी कथाका भाषाकरि प्रचारकरतेहैं ताते जोकहौ कि शिवजीके प्रचारको अपेक्षाकैसेजानी तौ सुनो॥ शिवउवाच ॥ (पूछेहु रघुपति कथाप्रसंगा । सकललोकजगपावनिगंगा) तौ शिवजीआपैकहा कि गंगाकी नाईं सबको पावनिहै सो गोप्यजानि शिवजीकी अपेक्षा भई सो संस्कृतमें तौ गंगाकीनाईं पावनिरहबैभई परन्तु अब श्रीशिवजीकीवाणी सांचहु सांचभई कब जब भाषारूपप्रवाहचली तब इत्यर्थः १६ ॥

इतिश्रीरामचरितमानसपरिचारिकायांसमष्टी
बन्दनानामअष्टमकैंकर्यः ८ ॥

बंदौं अवधपुरी अतिपावनि सरयूसरि कलिकलुषनशावनि १

टी० । इहांताईं श्रीगोस्वामीजी श्रीरामजीकी यावत्चिदाचिद् विभूति है तिनसबको बन्दनाकरि अबधाममें प्रवेशकरतेहैं श्रीअयोध्यापुरी अति पावनि तिनको बन्दौं अतिपावनिकहो जो पावनहूकोपावनकरै पनः श्री सरयूजी को बन्दौं कैसी हैं सरयू कि कलि कलुष जो पाप तेहि की नशावनिहारीहैं १ ॥

प्रणवौं पुरनर नारिबहोरी ममता जिनपर प्रभुहि न थोरी २

टी० । वो श्रीअयोध्याजीके नरनारि जेहैं पुनः तिनको बन्दौं नाम नमस्कार करौं कैसेहैं अयोध्यावासी कि जिनके ऊपरप्रभुकी थोड़ी ममता नहीं नाम बहुत ममताहै २ ॥

सिय निंदक अघ ओघनशाये लोक विशोक बनाय बसाये ३

टी० । जो कहौ कि कहांदेख्यौ है ममता तापर कहते हैं कि जानकी

जीकी निन्दारूप पापका समूह तिसको श्रीरामजी नशाइ करि विशोक लोक जो अपनाधाम तहांबनाइकरि बसाये अथवा उनके नवीन विशोक लोक बनाइकरि बसाये॥ विनयमें लिखा॥ (निजनै नगरबसाये तियनिन्दक सब पुरवासी) वाल्मीकिजी लिखा॥ अथवा धोबी प्रसिद्ध सबजानतहैं३॥

बंदौं कौशल्या दिशि प्राची कीरति जासु सकलजगमाची ४
प्रकटे जहँरघुपति शशिचारू बिश्व सुखद खलकमलतुषारू ५

टी० । श्रीकौशल्या महाराणीको बन्दौं कैसीहैं प्राचीदिशारूपहैं प्राची कही पूर्व सो जैसेपूर्वदिशा में चन्द्रमा उदयहोतहै सो सबको सुखदायी होतेहैं वो कमलको तुषार रूप दुःखदायी होतहै तैसे श्रीकौशल्या रूप पूर्वदिशामें श्रीरामचन्द्र चन्द्रमारूपप्रकटे नामउगे सो कैसेहैं कि विश्वके सुखदायी वो खलरूपकमलके दुःखदाई तुषाररूप प्रतापहै इहां विपर्यय अलंकारहै चन्द्रके योगकरि खल कमलहै कहे ४ । ५ ॥

दशरथ राउ सहित सबरानी सुकृत सुमंगल मूरति जानी ६

टी० । सातौसै रानिनके सहितश्रीदशरथ महाराजको बन्दौं सर्वसुकृत के वो सुन्दर मंगलके मूर्त्ति जानिकै ६ ॥

करौं प्रणाम कर्म मन बानी करहु कृपा सुत सेवक जानी ७

टी० । मन वचन कर्मते प्रणाम करतहौं अपने सुतको सेवक जानिकै मेरे ऊपर कृपाकरौ अथवा आपन सुत सेवक हमको जानिकैकृपाकरहु७॥

जिनहिंबिरचिबड़भयेउबिधाता महिमाअवधिरामपितुमाता ८

टी० । कैसेहैंमहाराज दशरथजी रानिन सहितकि जिनको विरचिनाम बनाइकै ब्रह्मांजी बड़भये काहेते कि सर्व महिमाकी अवधि नाम मर्याद श्रीरामतिनके माता पिताको का कहिये तिनकेबनावन हारेब्रह्माजीहैं ८॥

बंदौं अवध भुवाल सत्य प्रेम जेहिरामपद ॥
बिछुरतदीनदयालप्रियतनतृणइवपरिहरेउ ९

टी० । रानिनके सहित महाराजको प्रणामकरि अबमहाराजैको प्रणाम करतेहैं कि श्रीअवध भुवाल जो श्रीदशरथजी महाराज तिनको बन्दौंकैसे हैं महाराज कि श्रीराम पदमें जिनका सत्यप्रेमहै कैसे जानिये कि दीन-दयाल श्रीरामचन्द्र तिनके विछुरत संते अपने प्रियतन को तृणकी नाई परिहरेनाम छोड़ि दिये ९ ॥

प्रणवौं परिजन सहितविदेहू जिनहिं रामपद गूढ़सनेहू १०

टी० । परिवारके सहित विदेह जोहैं श्रीराजाजनकजी तिनके प्रणाम करतहौं कैसेहैं विदेह महाराज कि जिनको श्रीरामपदमें गूढ़स्नेहहै गूढ़ कही छिपायमान १० ॥

योग भोग महं राखेउ गोई राम बिलोकत प्रकटेउ सोई ११

टी० । कैसेजानी कि योग वो भोगको डब्बाबनाइ रामस्नेह रत्नरूप गोइराखे योग नीचेकाफाल भोग ऊपरकाफाल जबरामरत्न पारखी को देखे तबप्रकट करिदीन स्नेहरूप रत्नको ११ ॥

वंदौं प्रथम भरतके चरणा जासु नेम व्रत जाइन वरणा १२

टी० । अब चारिउ भाइनमें प्रथम श्रीभरतजी के चरण वन्दौं ज्यहि भरतजीको नेम धर्म व्रत बरणानहीं जाइहै १२ ॥

राम चरण पंकज मनजासू लुब्ध मधुप इव तजैन पासू १३

टी० । श्रीसीतारामजीको चरण कमलके जिनकामन लोभी भँवरा की नाईं रात्रिदिन पासनहीं छोड़ैहै १३ ॥

वंदौं लक्ष्मण पदजलजाता शीतल सुभग भक्तसुखदाता १४

टी० । अबश्रीलक्ष्मणजीके पद जलजात जो कमल तद्वत् सो वन्दौं कैसेहैं लषणलाल जी शीतल हैं सुखदाता हैं भक्तनको वो शुभनाम बड़े सुन्दर हैं १४ ॥

रघुपति कीरति बिमल पताका दंडसमानभयोयशजाका १५

टी० । श्रीरामचन्द्रको कीर्त्ति विमल पताकारूप है तिसके खड़ाकरिबे को लषणलालको यश दण्डरूपहै कि रावणादि वधरूप कीर्त्ति श्रीरामजी की मेघनाद के वधे बिनुवह कीर्त्तिरूप पताकाको उठनाअशक्यरह्योसो श्रीलक्ष्मण जी मेघनाद को मारे तब रावण विजय का यश श्रीराम जी को भयो १५ ॥

शेष सहस्र सीस जगकारन जो अवतरे भूमिभयटारन १६

टी० । पुनः श्रीलक्ष्मणजी कैसेहैं कि सहस्र शीशके शेषजो हैं तिन के वो जगत्के कारण रूपहैं सो भूमिजोहै पृथ्वी तिसको भयजो रावणमेघ-नाद करिकै डर तिसके टारन नाम छुड़ावनेके हेतु जो ऐसेलक्ष्मणजीसो अवतरेनाम अवतीर्णभये परधामसे आइकै १६ ॥

सदा सो सानुकूल रहु मोपर कृपा सिंधु सौमित्रिगुणाकर १७

टी० । सो श्रीलक्ष्मणजी हमारेऊपर सदाअनुकूलनाम प्रसन्नरहौ काहे कि कृपाके समुद्रहौ सुमित्राके पुत्रहौ सुमित्राके पुत्रकहिबे को यह भाव कि जिनका कारण सुष्ठु मित्रहै तौ कारणको गुण कार्यमें परतहै वो शुभ गुणनके आकरनाम खानिहोते प्रसन्न रहौ १७ ॥

रिपुसूदन पद कमल नमामी शूरसुशील भरतअनुगामी १८

टी० । रिपुसूदनजो श्रीशत्रुहनजी तिनके पदकमलको नमस्कारकरत हौं कैसेहैं शत्रुहन लाल बड़ शूरबीर हैं वो बड़े सुशील हैं वो भरतजी के अनुगामीहैं नामपीछे चलनेवाले १८ ॥

महाबीर बिनवौं हनुमाना राम जासु यश आपु बखाना १९

टी० । अबमहावीरको बिनवतहौं कौनमहाबीर हनुमान् कैसे हैं हनुमान् कि जिनके यशको श्रीरामचन्द्रजी आपु बखाने १९ ॥

प्रणवौंपवनकुमार खलवनपावक ज्ञानघन
जासुहृदयआगारवसहिंरामशरचापधर२०

टी० । श्रीहनुमान्जीको अपना सहायकजानि फेरि नमस्कार करतेहैं कि पवनकुमारको नमस्कार करतहौं कैसे हैं कि खलनके गण सो बन तिनके जराइबेको पावक नाम अग्निरूपहैं वो ज्ञानकेघननाम समूह जा पवनकुमारकेहृदयस्थानमें श्रीरामजी धनुर्बाणलिये सर्वकालबसतेहैं २०॥

कपि पतिरीछनिशाचरराजा अंगदादि जे कीस समाजा २१

टी० । कपिपति जो सुग्रीव वो ऋक्षराज जो जाम्बवन्त वो निशाचर राजा जो विभीषण वो अंगदादि जितनी कीसनकी समाजहै २१ ॥

वंदौं सबके चरण सुहाये अधम शरीर राम जिन पाये २२

टी० । तिन सबके चरण स्वहायमान बन्दौं काहेते कि अधम शरीर में जिनने श्रीरामजीको पायाहै २२ ॥

रघुपति चरण उपासक जेते खग मृगसुरनरअसुरसमेते २३

टी० । अब श्रीगोस्वामीजी समष्टी श्रीराम उपासक जितनेहैं तिनके नमस्कार करतेहैं कि श्रीरघुपतिके चरण कमलके उपासक जेते हैं खग

नामपक्षी मृगचौपाये सुर देवता असुर दैत्यनरमनुष्यसबके सहित २३॥

वंदौं पद सरोज सब केरे जे बिनु काम राम के चेरे २४

टी०। तिनके चरणकमल बंदौं काहेते कि जे बिनुकाज नाम स्वारथ रहित श्रीरामजीके चेरेनाम गुलाम होइ रहेहैं २४॥

शुक सनकादि आदिमुनिनारद जेमुनिवरविज्ञानविशारद २५

टी०। शुकदेव सनकादिक नारद मुनि आदि अपरजे मुनिवर हैं विज्ञानमें बड़े विशारदनाम प्रवीण २५॥

वंदौं सबहिंधरणिधरिशीशा करहु कृपा जनजानिमुनीशा २६

टी०। तिन सबके नमस्कार करतहौं पृथ्वीमें माथाधरिकै। हे मुनीश्वरौ हमको अपना जनजानिकै कृपाकरौ २६॥

जनकसुताजगजननिजानकी अतिशयप्रियकरुणानिधानकी२७

ताकेयुग पद कमल मनावौं जासु कृपा निर्मलमतिपावौं २८

टी०। पहिले बाहर आवरण की जितनी चिदाचिद विभूति तिनको नमस्कारकिये फेरि भीतर आवरणके जितने नित्यपार्षदहैं ते वो मुक्तकैवल्यसबको नमस्कार करे अब युगलसरकार जो श्री सीतारामजी तिन को नमस्कार करतेहैं कि श्रीजनक महाराजकी सुता जोहैं तिनके युगनामदोनोंपद कमल मनावौं काहेते कि जिनकी कृपाकटाक्षते निर्मल मतिपावौंगो जनक सुता पदमें अतिव्याप्तीजानिकै कौनअति व्याप्तीकी जनकमहाराजके चारिसुताहैं॥ सो न जाने कौनसुताको मनायेहैं यह अति व्याप्ती दूरिकरिबेके हेतु कहे जग जननी सो एहू शब्दमें अतिव्याप्तीपाये कि जगत्की जननीभी बहुत पाई जातीहैं ता हेतुकहे कि कृपानिधान जो श्रीरामचन्द्र तिनके जानकी अतिशय प्रियजोहैं तिनको अब श्रीराम के जानकी अतिशय प्रियकहनेसे श्री सीताजीको छोड़ि अपरमें यहशब्द नहींजातहै प्रियहोता तो बहुतन में पायाजाता अतिप्रियहोता तौभी क्वचित् क्वचित् पायाजात परंतु जानकी अतिशयप्रिय यहशब्द एकश्रीसीतै मेंहै ताही श्री सीताजी को मनावते हैं (इत्यर्थः) द्वै चौपाई का एकही अन्वयहै २७।२८॥

पुनि मनबचनकर्मरघुनायक चरण कमलबंदौंसबलायक २९

टी०। (पुनः) मन बचन कर्मते श्रीरघुनायकजो श्रीरामचन्द्र तिनके चरणकमल बंदौं कैसे रघुनायकहैं कि सबलायकहैं २६॥

राजिव नयनधरेधनुशायक भक्तविपतिभंजनसुखदायक ३०

टी०। (पुनः) राजीव जो कमल तद्वत्नेत्र हैं। वो धनुष बाण धरे हैं काहेतु कि भक्तनके विपत्तिभंजिकै सुखदेतेहैं याहीहेतु ३०॥

गिरा अर्थ जलबीचि सम कहि यतभिन्न न भिन्न
बंदौं सीतारामपद जिनहिं परमप्रिय खिन्न ३१

टी०। पृथक् पृथक् श्रीसीतारामको बंदि अबमिलाइकै बंदना करते हैं कि श्री सीताराम पदबंदौं कैसेहैं श्री सीताराम कि जिनको खिन्न जो दीन सो परमप्रियहै नामदीनन पर दयाहै वो सीता राम कैसे अभेदहैं कि जैसे गिरा जोवाणी वो अर्थकहनेके द्वै पर बस्तु एक (पुनः) जैसे जल वो बीचोजो लहरि सो देखने मेंवो कहने में द्वै ताहीते भेद भासतहै परंतुहै अभेद बस्तु ते बस्तु दूसरी नहीं तैसे गिरा अर्थजल बीचीकी नाइँ सीतारामकहनेमें द्वैहैं तत्त्वएकहै (शंका) पृथक् पृथक् तौ सीतारामकी बंदना करिआयेहैं अब मिलाइकै बंदनाकरने में क्या हेतु (समाधान) सुनों पृथक् पृथक् बंदना करनेमें यहपायाजात कि जैसे भर तादिक भ्राताहैं तैसे श्रीजानकिउ जीहैं यह संदेह छुड़ावने के गिराअर्थ जलबीचीका दृष्टांत देकर सीतारामजीको अभेद दिखाय यहीहेतु फेरि बंदे जो कहो कि क्या भरतादिक भ्रातासे वो श्रीरामजीसे तत्त्वका भेदहै सो नहीं तत्त्वतो एकही है परंतु अंशी अंशका भेद है वो श्रीसीताराम में अंशी अंश भेदनहीं केवल ब्रह्महैं यह बातका खुलासा गो स्वामीजी स्वायंभुवमनु के तपके प्रसंगमें लिखा जब स्वायंभुवमनु संकल्पकीन कि सत् चित्आनन्द मयजो ब्रह्मपरम प्रभुतिनको हमदेखें वोहब्रह्म कैसोहै कि निर्गुणहै अखंडहै अनन्तहै अनादिहै परमारथवादीजिनको चिंतवन करतेहैं वो वेदनेतिनेति कहि निरूपण करतहै वो निरुपाधिहै अनूपहै वो जेहिके अंशते ब्रह्मा विष्णु शिव नाना उपजतेहैं ऐसो ब्रह्मसेवकके बसहै भक्तनके हेतुलीला अपनेतनुमें ग्रहणकरतेहैं लीलाकही प्राकृत मनुष्य की नाइँ देखिपरै वो इसेबचन बोलै सो लीला जो ऐसा वाक्य वेद सत्य कहाहै तौ हमारा अभिलाष पूर्णहोइगा जबऐसा संकल्पकीन तब उन्हका तपदेखि ब्रह्मा विष्णु शिव बहुतबार उनके पास आये वो कहा कि बर

मांगो परंतु राजाकी अखंड वृत्ति परब्रह्ममें लगीरहै तातेउनके बचनै न सुने तब वोहपर ब्रह्म परमात्मा अपना अनन्य दासजानि ब्रह्म बाणी बोले कि हे राजन् बर मांगा तब वोहबाणी सुने तब तपकरि जो क्षीण शरीरभया रहा सो ब्रह्मवाणी सुनि तेई पुष्टभये तब राजा बोले कि हे सेवकके कल्पतरु कामधेनु हम तुम्हारे स्वरूपको नहींजानते कि कैसा स्वरूप आपकाहै परंतु जो स्वरूप आपका शिवजीके मनमें बसतहै वो भुशुण्डीके मनमें बसतहै वो जौने स्वरूपको परमार्थबादी जो तत्त्ववेत्ता चिन्तवन करतेहैं वो जौन स्वरूपको वेद निर्गुण सगुण कहि निरूपणकर तहैं ऐसा स्वरूप जो आपकाहै सो हम यहनेत्रनसे देखहिं यह राजाकी बाणी सुनि परब्रह्म प्रकटे सो युगल स्वरूपहैं सो इहां जैसा कछू ब्रह्म का स्वरूपहै अखंड सो दिखाये वो यह स्वरूप छोड़ि जो एक ब्रह्म की उपासनाकरतेहैं ते सखण्डब्रह्मकी उपासनाकरतेहैं जो कहौ कि ब्रह्मको तौ वेदएक अनीहकहतेहैं तुमयुगलकहांसे कहतेहौ तहां हम ब्रह्मयुगल नहींकहते ब्रह्मका स्वरूप युगल कहतेहैं ब्रह्मतौएकैहै एकै ब्रह्मदै स्वरूप दिखातहै इहि हेतु गो स्वामीजी दोहामें सीतारामको वंदे । इति । अब दूसराहेतु सुनों यह (दोहा) दीप देहरीके न्यायकरि दोनौ तरफ बोधकहै पहिले ऊपरकी शंकाको समाधानकरि अब नीचेकी शंका को समाधान कहतेहैं कि आगे श्रीगोस्वामीजी नामबन्दना करैंगे तहां कहैंगे कि बन्दों नाम रामतब यहशंकाहोइगी कि गोसांईजी केवल रामउपासकहैं युगल उपासकनहींहैं काहेकि जो युगल उपासकहोते तौ कहते कि बंदौं सीता राम नाम यहशंका दूरि करिबेके हेतु पहिलही दोहा में दोनों नामकी एकताकरि वंदे कैसे एकताकिये कि जैसे गिरा अर्थ जलबीची यह दोनों नाम सनातनहै दोनों नामका तत्त्व एकहै गिरा कहने से अर्थका ग्रहण अर्थ कहनेसे गिराका ग्रहणहोतहै वो जल कहनेसे बीचीको ग्रहणहोतहै काहेते कि जहां जलहै तहँई बीचीहै वो बीची कहनेसे जलको ग्रहण होतहै ताते बस्तुतौ एकहै नाम द्वै हैं परि सनातनहै जबसे गिराहै तबसे अर्थहै जबसे जलहै तबसे बीची है तैसे सीतापद वो रामपद यह नाम सनातन है दोनो नामका तत्त्वएकैहै दोनोनामका तत्त्वक्याहै तहां बेदमें तत्त्वमसी महाबाक्यहै सो तत्पद ब्रह्मबाचकहै वो त्वंपदजीवबाचक वो असी पद मायाबाचक है (प्रमाण महारामायणे श्लोक) ब्रह्मेतितत्पदं विद्धित्वंपदोजीवनिर्मलः॥ईश्वरोसिपदंप्रोक्तंततोमायाप्रवर्त्तते॥इति ॥ सो

तत्वमसि रामनाम वो सीतानामसे सिद्धिहोतहै रकारसे तत्पद सिद्धिहै वो रकारके आगे जो दीर्घ अकार तासे त्वं पद सिद्धि होतहै वो मकारसे असिपद (प्रमाण महारामायणे श्लोक) रकारस्तत्पदोज्ञेय स्त्वंपदाकार उच्यते ॥ मकारोसिपदंत्वंजंतत्वंअसिसुलोचने इति ॥ अब सीतापदसे कहतेहैं सीतानाम तीनिबार कंकनाकारलिखै तप चित्रकाव्यहोतहै तब जौन अक्षरसे चाहे तौनसे उठावै तहां सीताको तासीभयो तहां तकारसे तत्पदसिद्धिहोतहै वो तकारकेआगे जो अकारहै सो अकारसे त्वंपदसिद्धि होतहै वो दीर्घसी जोहै तासे असिपदसिद्धि होतहै (प्रमाण महासुन्दरी तंत्रे श्लोक) लिखितंत्रिविधंसीताकंकनाकृतिशोभितम् ॥ चित्रकाव्यंभ वेत्तत्रजानातिकविपण्डिताः १ तकारोतत्पदंविद्धित्वंपदाकारउच्यते॥ दीर्घं ताचअसीप्रोक्तंतत्वंअसिमहामुनेश॥इति(पुनः) दोनोनामनकी एकताकैसेहै किरेफ विसर्गहोइकरि सकारभयो वो मकार अनुस्वारहोइकरितकारभयो तबरामकर सीताभयो वो जबसकार बिसर्ग होइकरि रेफभयो वो तकार अनुस्वार होइकरि मकार भयो तब सीताकर राम भयो यही तरहसे दोनौनामकी तत्वएकहै परंतुनामदोनो सनातन एकरस अखंड हैं जबसे रामनाम तबसे सीतानाम जबसे सीतानाम तबसे रामनाम गिरा अर्थ जलबीचीके दृष्टांत करि जानो (पुनः शंका) द्वै दृष्टांत देबेका क्या हेतु काहे कि प्रयोजन अभेदका है सोतौ एकै दृष्टांत में बनत है कि तौ गिरा अर्थका कितौ जलबीचीका द्वै किस हेतु (समाधान) सुनौ जो कदापि एकै दृष्टांत देते कि सीता राम कैसे अभेद हैं कि जैसे गिरा वो अर्थ तौ तत्वाभेद तौ होत परंतु सूक्ष्मते कारणकार्य पायाजाता कि जैसे गिराको विकारअर्थहै तौ गिराकारणहै वो अर्थकार्यहै गिरास्त्रीलिंगहै अर्थपुल्लिंग है तैसेसीताकारणहै वो रामकार्यहैं तौ यहिमें महाविरोधपरत सर्वशास्त्र में एक वाक्यमत सिद्धि होत सोतो एक देशी इनको कहना नहीं है जो कहौ जलबीचीको दृष्टांतदेते तौ तत्वका अभेद तौ होत परंतुकार्यकारण भेद इसमेंभी परत कि जैसे जलकारणहै वो बीचीजलका विकार है ताते कार्यरूपहै जल पुल्लिंगहै वीची स्त्रीलिंग है तैसे रामसीता है राम जल स्थाने कारण रूपहै वो सीतावीची स्थाने कार्यरूपहैं ऐसा पायाजाता तौ इसमेंभी दोष आवता काहेते कि बहुत वचनन में विरोध परत वो एक पुरुषवादीका मत सिद्धि होत सोभी एकदेशी होइजात यहजानिके श्री गोस्वामीजी दो दृष्टान्त दिये कि जो एककहैं कि गिराअर्थ के दृष्टांत से

सीताकारणहैं वो राम कार्यहैं तब दूसरा कहैगा कि जलवीचीका दृष्टांत तोहै वो जब एक कहैगा कि जलवीचीके दृष्टांतसे रामकारणरूपहैं सीता कार्यरूप तब दूसरा कहैगा कि गिराअर्थतोहै ताते सर्वकामत यहीहै कि नतौ सीतासेरामहैं वो न रामसे सीतहैं दोनौ स्वरूप अखंडहैं दोनोनाम सनातनहैं इसमें कार्यकारण भेदनहीं दोनौं स्वरूपकेवल ब्रह्महैं वोदोनों नाम ब्रह्म तत्त्वकर वाचकहैं यहीभरे गोस्वामी दृ दृष्टांतदिये (तत्र प्रमाण श्रीरामतापनि योपनिषद् श्रुति) सीतारामौतन्मयावत्र अस्यार्थः अत्ररेफः यद्वाग्निबीजःसीतारा मैतन्मयौ इति १ (पुनःविष्णुपुराणेश्लोक) द्वौनि त्यंद्विधारूपंतत्त्वतोनित्यमेकता ॥ राममंत्रेस्थितासीता सीतामंत्रे रघूत्तमः यद्वा शब्दात्मकोरामोसीता शब्दार्थरूपिणी ॥ यद्वाणीभवेत्सीता रामःश ब्दार्थरूपवान् (पुनःश्रुति) रामःसीताजानकीरामचन्द्रोनित्याखण्डोचप श्यन्तिधीराः ३१ ॥ इत्यर्थः ॥

इतिश्रीरामचरित्रमानसपरिचारिकायांश्रीसीतारामजीधामरूप
परिकरबंदनानामनवमःकैंकर्यः ६ ॥

वंदों नाम राम रघुबरको हेतु कृशानु भानु हिम कर को १

टी० । अबश्री गोस्वामीजी रामजीको चारि जो नित्य हैं नामरूपली लाधाम (प्रमाण वशिष्ठसंहिता श्लोक) रामस्यनामरूपंच लीलाधाम परात्परम् एवंचतुष्टयंनित्यंसच्चिदानन्दविग्रहम् १ सो लीला गावनेके हेतु प्रथम धाम बन्दना करे फेरि स्वरूप बन्दनाकरे अब नाम बन्दना करतेहैं की बन्दौं नाम कौन नाम राम कौन राम रघुवर को नाम जो रघुकुल में प्रादुर्भाव हैं तिन रामके नामको बन्दतहौं (शंका) परमेश्वरके अनेक नामहैं सो रामैनाम बन्दनेमें क्याहेतु समाधान सुनो परमेश्वरके जितने नामहैं तिन सबका रामनाम आत्माहै प्रेरकहै प्रकाशकहै तौ जबआत्मा को प्रणामकिया तब सब शरीरको होइचुका जो कहौ रामनाम सब नाम नको आत्मा कौनरीतिसे है व तुम्हरेई मतसे सब नामको आत्मा है की और केहूके मतसे तौसुनौ रामनाममें पंचपदार्थहैं रेफरेफकी अकारदीर्घा कार मकारकी अकार हल मकार बिन्दुरूप यह तीनि अकार व रेफबिंदु ये पांच बिनु एकौ मंत्रनाम ऋचा सूत्र एकौनहींबनैहै यही पांचौसे सब सिद्धिहोतेहैं यही रीति से सबकर आत्माहै व सबके मतसेहै वेदपुराण स्मृति रामायणके (प्रमाणश्रीराम तापनियोपनिषद श्रुति) स्वभूर्ज्यो तिर्म

योनंतरूपीस्वेनैवभासते ॥जीवत्वेनेदमोयस्यसृष्टिस्थितिलयस्यच १ कारण त्वेनचिच्छक्त्यारजःसत्वतमोगुणैः॥यथैववटवीजस्थःप्राकृतश्चमहाद्रुमः २ तथैवरामवीजस्थंजगदेतच्चरचरम्॥ रेफारूढामूर्त्तयःस्युःशक्तयस्तिस्रएवचे ति ३ (पुनः महारामायणे शिव वाक्यं श्लोक) परमेश्वरनामानिसंत्यने कानिपार्वती॥परन्तुरामनामेदंसर्वेषामुत्तमोत्तमः १ नारायणादिनामानिकी र्त्तितानिवहून्यपि ॥आत्मातेषांचसर्वेषांरामनामप्रकाशकः २(पुनः मनुस्मृ तौ)सप्तकोटिमहामंत्राश्चित्तविभ्रामकारका॥एकएवपरोमंत्रोरामइत्यक्षर द्वयम् १ ॥पुनःहारितस्मृतौचतुर्थोध्यायः) रामायणमोह्य तत्तारकंब्रह्मना मकं ॥नाम्नाविष्णोःसहस्राणांतुल्यएवमहामनुः१ अनंताभगवन्मंत्रानानेन तुसमाकृताः ॥अयोरमणसामर्थ्यातुसौंदर्य्यगुणताकरात् २ श्रीरामइतिना मेदंतस्यविष्णोःप्रकीर्त्तितम् ॥रमणान्नितययुक्तत्वाद्रामइत्यभिधीयते ३(पुनः पद्मपुराणेशिववाक्यम्) रामरामेतिरामेतिरमेरामेमनोरमे सहस्रनामत त्तुल्यंरामनामवरानने १ अब श्रीगोस्वामी जी जो नाम बन्दना प्रकरण उठाया है सो पहिले नामका स्वरूप कहैंगे फेरि अंग कहैंगे फेरि फल कहैंगे नवदोहा करिके सो सूक्ष्मते प्रथमै दोहामें स्वरूप अंगफलकहिफेरि विस्तार पूर्वक आठ दोहामें कहैंगे सो प्रसंगके साथ कहैंगे प्रथमदोहाका सुनौ जो रामनाम बन्दौं कहा सो रामनामका स्वरूप कहतेहैं कैसोराम नामहै की कृशानु भानु हिमकरको हेतु है हेतुश्लेष है दुइवस्तकाबोधक है हेतुकही कारणको फेरि हेतुकही प्रियको प्रथम कारणसुनौ कृशानुजो अग्नि तेहिकर कारण रकार है भानु तो सूर्य्य हैं तेहिकर कारण अकार है वो हिमकर जो चन्द्रमा तेहिकर कारण मकार (प्रमाणश्रीमन्महारा- मायणे शिववाक्यं श्लोक)रकारोरवनलवीजस्याद्येसर्वेवाडवादवः ॥कृत्वा मनोमलंसर्वंभस्मकर्म्मशुभाशुभम् १ अकारोभानुवीजंस्याद्वेदशास्त्रप्रका शकः॥ नाशयत्येवदीप्तायत्तविद्याहृदयंतमः २ मकारश्चन्द्रवीजंचसदम्या परिपूरणम् ॥त्रितापंहरतेनित्यंशीतलत्वकरोतिच ३ जो कहोकी रामनाम कृशानुभानुहिमकर को वीजहै तौ जैसे वीजवृक्ष को उत्पत्ति करि उसीमें लीन होइजातहै तब कारण मिटिगयो कार्यमात्र रहिगयो तैसे रामनाम कृशानुभानु हिमकर को उत्पत्ति करि फेरि आप उनहीं में लीन होइ गयो तब राम नाम की बन्दनाकैसेबने चाहीकी कृशानु भानु हिमकर को बन्दौं तहां ऐसा नहीं है कारण दोविधिके हैं एक सामान्य व एक विशेष तौ सामान्य कारण कार्य में लीन होइजातु है व विशेषकारण

कितनहु कार्य को उत्पत्तिकरि आपु पूर्णबनो रहत है जैसे एक बूटी होती है सो तांबामें परै तौ उसको गलाइकरि सोना करिदेतु है आपु भी उसी में लीन ह्वै जातु है सो सामान्य कारण है व पारस अनन्त मन लोहा को सोना करिदेतु है आपु जैसा का तैसा पूर्ण बना रहत है तैसे श्रीरामनाम विशेष कारण है अनेक अग्नि सूर्य चंद्रमाको उत्पत्ति करि आपु जैसाका तैसा पूर्णबना रहतहै अबजो कहौ कि रामनामको एतौ बड़ो विशेषण देकरि बंदनेमें क्याहेतु तौ सुनो श्रीगोस्वामीजी अनेक बंदनाकरि आये तब विचारो कि मैं तुरित शुद्धी चाहतहौं सो तुरित शुद्धी नतौ ज्ञानसे होइगी न वैराग्यसे न भक्तिसे न योगसेइनसबसे देरमेंशुद्धी होइगी व मैं तुरित शुद्धी चाहतहौं काहेते कि बिना शुद्धी श्रीरामचरित गावनो अशक्यहै तब विचारो कि रामनाम जो अग्निसूर्य चंद्रको कारण है तिसमें मनबचन कर्मसे अभिनिवेशकरे से तुरित शुद्धीहोइगी काहेते कि एक रकारको कार्यजोहै अग्नि तिसमें इतना प्रभावहै कि शुभाशुभ जो कछू उसमेंपरै सो दोनोंको जराइकरि अपनो स्वरूपकरि देत है तौ जब इतनो गुणकार्यमेंहै तौ कारणमें न जानेकेतौ गुण महत्वहोइगो औ अपनेको अनेक शुभाशुभकर्मकरि ग्रस्तदेखै तौ जबतक शुभाशुभ कर्म बनेहैं तबतक श्रीराम चरित गावनेमें चित्त प्रवेशनहीं करता यह जानि तब श्रीरामनाम जो अग्नि सूर्य चंद्रको कारण है तिसमें मन बचन कर्म से अभिनिवेसकरे कि रामनाम शुभाशुभ कर्मनको जराइकरि तुरित अपनो स्वरूपकरि देइगो तब श्रीरामचरित गावनेके योग्यहोउँगो अब जो कोई कहै कि शुभाशुभ कर्मतौ एक रकारै जो अग्निबीज है तिससे जरिगये फेरि अकार मकार बंदनेमें क्याहेतु तहां सुनौ रकार अग्निबीज करिकै शुभाशुभ कर्मतौ जरे परंतु अग्निबीज ते प्रकाश थोरा पाये तौ पूर्ण प्रकाशबिना दूरितक नहीं देखि परत केवल नेत्रके सामने प्रकाश होतहै सो शुभाशुभ कर्म जरने से स्वरूप व परस्वरूप देखिपरत है सो ध्यानकिया करो व रामचरित्र पूर्ण प्रकाश बिनुनहीं देखिपरत व श्रीगो-स्वामीजीकोअभिमत रामचरित्र गावनेकोहै जो स्वस्वरूपपरस्वरूप जाने का फल है तिसहेतु अकार जो सूर्यका कारणहै तिसको बंदै देखिये तौ कितनहू अग्नि बारिदेहु परंतु सूर्य्य बिना रात्रिनहीं जात तैसे सूर्य्य को बीज जो अकार तिस बिना अविद्या रूप रात्रि नहीं जाय यावत् अविद्या रूप रात्रि बनी है तावत् वेद शास्त्र की तत्व यथार्थनहीं देखि

परत तौ जो वेद की तत्व यथार्थ जानि परी तौ रामचरित्र कैसेगाया जायगा काहे कि यह मानस वेद के निचोड तत्व है (प्रमाणं) बरणौं रघुपति विशदयश श्रुतिसिद्धांत निचोरि ॥ सोशिवजी कहाहै जो कहौ कि अच्छा रकारसेशुभाशुभजरो व अकारसे अविद्या रात्रिमिटी मकार किस हेतु बंदे तहां सुनौ जब श्रीगोस्वामी जी रकार अकार बंदे तब विचारो कि रकार अग्नि बीजहै सो अग्नि व वैराग्यकी एक क्रियाहै जैसे अग्नि शुभाशुभ बस्तुको भस्मकरि देतुहै तैसेवैराग्यशुभाशुभ कर्मनकी वासना को जराइ देतुहै औ रकार वैराग्यको उपादान कारणौहै तौ जहांरकार आयो तहां वैराग्य आवैगो व जब अकारबंदे तबविचारो कि अकार भानु को वीजहै सो भानु व ज्ञानकी एकक्रियाहै जैसेभानु उदयमें रात्रिदूरि होतिहै तैसे ज्ञानउदयमें अविद्यारात्रि दूरिहोति है व अकारभी ज्ञानका उपादान कारणहै तौ जहां अकार आयो तहां ज्ञानभी आवैगो तबजैसे कृशानु भानुमें उष्णताहै तैसेवैराग्य ज्ञानमें उष्णताहै क्या उष्णताहै कि अहंवैराग्यमान व ब्रह्मास्मि तौ जहां अहंकारहै तहां श्रीरामचरित्र कैसे गाया जायगा यहजानि मकारजोचंद्रबीजहै तिसकोबंदे व चंद्रमा व भक्ति कीएकक्रियाहै कि जैसे चंद्रमा कृशानुभानुके तापको शांतिकरि देतहै तैसे वैराग्य व ज्ञानके तापजोहैं अहंकार तिसको भक्ति शांतिकरि देतु है व मकार भक्तिको उपादान कारणहै तौ जबमकार आयो तब भक्ति आवैगी तबजो बैराग्य ज्ञानकी अहंकार रूप उष्णता सो आपै शांतिहोइगी तब श्रीरामचरित्रमें चित्त अच्छीतरहसे प्रवेशकरैगो अबजो कहौ कि जोतुमने कहा कि जैसे अग्नि सूर्यकी उष्णता चंद्रमा शांति करिदेतु है तैसे रकार जो वैराग्यरूप व अकार जो ज्ञानरूप तिसकी उष्णता को मकार रूप भक्ति शांति करतुहै तौ चंद्रमाके प्रकाश में सूर्यको अभावहै तैसेमकारके उदय में अकारको अभाव होइगो सो नहीं दृष्टांतको एकदेश लेना पुनः जैसे एक चंद्रमणि होतिहै सो उसको अग्निसूर्य के सामने करिदेइ तौ अग्नि सूर्यको प्रकाश तौ बनो रहतहै परंतु उष्णता हरिलेत है तैसेरकार अकार मकार कारण वो वैराग्य ज्ञान भक्ति एकसंग बनेरहत हैं रकार अकारके कार्य जो वैराग्यज्ञान तिसके अहंरूप उष्णताको मकारका कार्य जो भक्ति सो शांतिकिये रहतहै जो कहौ कि रामनाम वैराग्यज्ञानभक्तिको कारणहै तिसका (प्रमाण महारामायने श्लोक)रकारहेतुवैराग्यंपरमंयच्च कथ्यते॥ अकारो ज्ञान हेतुश्च मकारो भक्तिहेतुकम् १ अथवा यद्यपिरकार

के वंदौं शुभाशुभकर्म जरिगये शुद्धोभई तदपि श्रीरामदासजेहैं तेपूर्णनाम कहतेहैं याहीते पराभक्तिकोलहि श्रीरामचंद्र के समीप को प्राप्ति होते हैं प्रमाणं महारामणे श्लोक)रकारो योगिनांध्येयोगच्छंतिपरमंमदं॥ अकारो ज्ञानिनांध्येयस्ते सर्वेमोक्ष रूपिणः १ पूर्णनाम मुदादासा ध्यायंत्यचल मानसा ॥ प्राप्नुवंतिपरां भक्तिं श्रीरामस्य समीपकं २ अब जो कहाकि हेतु श्लेषहै सो कारणको अर्थकहि आये अबप्रियको अर्थ सुनौं रामनामकैसो है कि हिमकर को जैसे कृशानु भानु हेतु है इहां उपमेय वाचक लुप्ता उपमालंकारहै जड़ता वो रामनाम उपमेय कृशानुभानु हिमकर उपमान जैसे वाचकहेतुधर्म यह पूर्ण उपमाहै रामनाम वो जड़ता उपमेय वो जैसे वाचक सो नहीहै ताते उपमेय वाचक लुप्ताहै कि जैसे हिमकरकोकृशानु भानु हेतुनाम प्रियहै हिमकर कहो जो हिम को करै हिमकही जाड़ सो जाड़को हिमऋतु जो अगहन पूस तिसमें कृशानु वो भानु बहुत प्रियहै तैसे अहंममरूप अगहन पूस तिसमें जड़तारूप जाड़लगिरह्योहै (प्रमाण) जड़ता जाड़ विषम उरलागा ॥ तिस अहंमम में जो जड़ता जाड़ तिसमें कृशानु भानुरूप रामनाम सो हेतुनाम प्रियहै जैसे कृशानु भानु जाड़ को शांतिकरि देतुहै तैसे रामनाम अहंममरूप जड़ताको शांतिकरि देतुहैतैसे रामनाम ऐसो श्रीरामनामहै ताको वंदौं इत्यर्थः ॥ १ ॥

विधिहरि हरमयवेद प्रानसो अगुणअनूपम गुण निधानसो २

टी० । श्रीरामनामको स्वरूपकहि अब अंगकहतेहैं किजो रामनामकृशानु हिमकर को हेतुहै सो रामनाम फेरि कैसो है कि विधि हरिहरमयहै व वेदको प्राणहै मयकही तदात्मक कही गुणस्वरूप एक व प्रचुरात्मककही गुण स्वरूप भिन्न भिन्न सो जबत्रिदेव रज सत तमसे पारहैं तब रामनाम तदात्मक विधि हरिहरमयहै वो जबत्रिदेव गुणाभि मानी हैं तब रामनाम प्रचुरात्मक विधि हरिहरमयहै कवनी रीतिसे तदात्मक प्रचुरात्मकहै तहां रकार जोहै सोविधि जो ब्रह्मा तन्मयहै वो अकारजोहै सोहरि जो विष्णु तन्मयहै वो मकारहर जोमहादेव तन्मयहै कैसे है कि ये तीनिहू रूप सूक्ष्म गुणकीसाम्यता शुद्धरूप प्रणवमें लक्षिहोतहैं सो प्रणव रामनामके अंगते सिद्धि होतहैं कैसेहोतहै तहां रामनामषट् पदार्थते आवृतहै रेफ रेफको अकार दीर्घाकार मकारको अकार विंदुनाद सो येछवों वस्तुते प्रणवसिद्धि होतहै वेदकहतहैं कि दीर्घाकार उकार रूपहै सो अकार उकार मिलिओ-

काभयो वो मकार की अकार सवर्णीमानिसोभी मिलिगयो रेफ अंतर-
भूतभयो विंदु अनुस्वारभयो नादरूप प्रणव सिद्धिभयो(प्रमाणं महारामा-
यणे श्लोक) अंशांसि रामनामनस्त्रयस्सिद्धाभवंतिहि ॥ वीजमों कारसोहं
चसूत्र मक्कमिति श्रुतिः १ रामनाम महाविद्यंषडवस्तु भिरावृतं ॥ अर्धर
कार गुरुराका रस्तथा वर्णविपर्ययः मकारं व्यंजनंचैव प्रणवंचाभि धीयते
मस्यासवर्णितंमत्वा प्रणवेनाद रूपधक् ॥ अंतरभूतो भवेद्रे फः प्रणवेसिद्धि
रूपिणी ३ वो रामनाम की तारकसंज्ञा है वो प्रणव ब्रह्मकर आत्मा है
ताहीते प्रणवकीभी तारकसंज्ञाहै वो प्रणव त्रिदेवको आत्मा है अब जवनी
रीतिसेहै तवनी आगे श्रुतिकहतहैं सुनों (प्रमाणं) तारकंदीर्घानलं विंदु
पूर्बकंदीर्घानलं पुनर्मायनमश्चन्द्रायनमोभद्रायनमः इत्योंतद्ब्रह्मात्मिका
सच्चिदानन्दाख्यं इत्युपासितव्यमकारः प्रथमाक्षरोभवत्युकारो द्वितीया
क्षरोभवति मकारस्तृतीयाक्षरोभवत्यर्द्धमात्रा श्चतुर्थाक्षरोभवति विंदुःपंच
माक्षरोभवति नादःषष्ठाक्षरोभवति तारकत्वात्तारकोभवति तदेव तारकब्र-
ह्मत्वंविद्धि तदेवोपास्यमितिश्रुतिःश्रीरामतापिन्योपनिषदि ॥ यहरीतिसे
रामनाम तदात्मकविधि हरि हर मयहै अब प्रचुरात्मक सुनों श्रीरामचंद्र
की एकपाद विभूतिमें अनंत ब्रह्मांडहैं वो ब्रह्मांड ब्रह्मांडप्रति ब्रह्मा।विष्णु
शिवहैं सो जो प्रणव रामनामका शरीरहै सो त्रिगुण साम्यरूप प्रणवमेंहै
सोतो निर्गुण तीनिउं अक्षरनसे उत्पत्तिहोतहैं अकारसेसत् उकारसे रज
हलमकारसे तम तब श्रीरामजीते जाय मान जो ब्रह्मा बिष्णु शिव सो
एकएक गुणनकोलेइ अनेक ब्रह्मांडकी उत्पत्ति पालन संहारकरतेहैं (प्र-
माणं श्रीमन्महारामायणे शिव वाक्यं श्लोक) अकारःप्रणवेसत्व मुकार
श्चरजोगुणः ॥ तमोहलमकारस्यात् त्रयोहंकारमुद्भवः १ त्रियेभगवतो
रूप त्रिविधोजायतेपिच ॥ विष्णुर्विधिरहंचैव त्रयोगुणविधारिणः २ ॥
इस रीतिसे रामनाम प्रचुरात्मकविधिहरिहरमय है अब वेदप्रमाणसुनों
जैसे शुद्ध पंचतत्वमय ब्रह्मांड समिष्टीरूपहै तैसे पंचतत्वके विकार मय
अंडकही शरीरहै मनुष्यादिक वेष्टीरूपहैं ताते अंड ब्रह्मांड दोउ पंचतत्व
बेष्टित विग्रहहैं तिनके पंचप्राण हैं प्राण अपान उदान व्यान समान एते
पंचप्राण शुद्धरूप विराटमेंहैं अरु पंचप्राणके पंच विकार रूप प्राण सोई
मनुष्यादिकनमेंहै तैसे वेदनकेप्राण दिव्यरूप रामनामहै वेदको मूल एक
ओंकार ताते वेदचारि पुनिपांच ऋग यजुर साम अथर्वण सुरम महाभा-
रतादि पांचहुवेदके जे अक्षर सो स्थूल विग्रहजानिये अरु पांचहूसिद्धांत

अर्थजोहै सोईपंचप्राण रामनामहै रेफ रेफकीअकार दीर्घाकार हलमकार मकारकी अकार येपांचों वेदकेप्राणहैं जैसे प्राणस्थूल शरीरको त्यागिदियो तब शरीर मृतकभयो तैसे जेहि वेद स्मृति पुराण इत्यादिक सूत्र ऋचा श्लोक पद अक्षरनमें रेफ विसर्ग अकार अनुस्वार न होइ ते सब मृतक रूप होइजाइं अरु बेदको सिद्धांतजोहै एकतत्व तेहिमयहै रामनामताते बेद प्राणकहा (प्रमाणं महारामायणे श्लोक) रामनाम्नःसमुत्पन्नः प्रणवोमोक्ष दायकः ॥ रूपंतत्वंमसेश्चासौ बेदतत्वाधिकारिणः १ पुनि श्रीरामनाम कैसो है अगुण कही गुणातीतहै अनूपम जाकी उपमाको कछूनहीं अरु अनेक दिव्यगुणन को निधान नाम स्थानहै अथवा अगुण अनूपम गुणजोहैं योग वैराग्य ज्ञान शांति संतोष शील दया क्षमा करुणा आदि एते गुण अगुण अनूपमहैं मुक्तिकेउपहित आत्माके गुण हैं प्राकृति के गुणनहीहैं तिनगुणनके निधान रामनामहै जैसे धनकेनिधानकुबेरहैं २॥

महामंत्र जेहि जपत महेशू काशी मुक्तिहेतु उपदेशू ३

टी० । स्वरूप अंककहि अब फल कहतेहैं कि सो रामनाम फेरिकैसो है कि महामंत्रहै जेहि रामनाम महामंत्रको महेश जपतेहैं आपु वो सर्व जीवनके मुक्तिहेतु काशीमें रामनाम महामंत्रको उपदेशकरतेहैं ३ ॥

महिमा जासु जान गणराऊ प्रथमपूजियतनामप्रभाऊ ४

टी० । श्रीरामनामकी महिमा गणेशजी जानतेहैं वोरामनामके प्रभाव ते प्रथम पूजनीयहैं ४ ॥

जान आदिकबि नाम प्रतापू भयेउ शुद्धकरि उलटाजापू ५

टी० । पुनःश्रीराम नामकोप्रताप आदिकविजो बाल्मीकते जानते हैं कि उलटानाम मरामराजपिकरि किराततें महामुनिभये इतनाशुद्धभये ५॥

सहस नाम सम सुनि शिववानी जपिजेईं पियसंगभवानी६

टी० । पुनः श्रीराम नामको महादेवके मुखसे विष्णु सहस्रनामके सम सुनि पार्वती शिव के संग जपि जेंवती भईं एक समय श्रीमहादेव जी भोजन करनेको बैठे वो पार्वतीजी से कहा कि हे प्रिये आवो हम तुम संग भोजनकरैं तब पार्वती जी बोलीं कि आपु भोजनकरिये हमअबहीं सहस्रनामका पाठकरि तब जेवेंगी तब शिवजी कहाकि (रामरामेतिरामे तिरमेरामेमनोरमे॥सहस्रनामतत्तुल्यंरामनामबरानने)सो यही शिवजीके

मुखते सुनि रामनाम को जपि संग जेंवती भईं यहकथा पद्म पुराण में प्रसिद्धहै ६ ॥

हरषे हेतु हेरि हर हीको किय भूषण तिय भूषण तीको ७

टी० । जब शिवजीके कहते पार्वती सहस्रनामछोंड़ि राम नाम जपेउ तब शिवजी पार्वतीजीके हृदयको हेतु जो रामनाममें प्रीति सो हेरिनाम देखिके हर्षे हर्षिके तियजोहैं पार्वती तिनको सर्व तियन को भूषण नाम शिरोमणि करतभये अथवा कियभूषणतिय नाम तियभूषण जो शिव जी सो तियको भूषण करतेभये नाम अबतकतियके भूषण आपुरहे अबतिय को आपन भूषण बनाये अथवा किय भूषणतिय नाम शिवजी तियको भूषणकियो परन्तु भूषण तियको अर्थात् राम नामके प्रभावते भूषणकिये कछू स्त्री भावसे नहीं अथवा किय भूषणतिय नाम शिवजी विचारो कि जीको हम उपदेशकीन तीको तिय भूषण कियो कैसी तिय है कि सर्व तियन को भूषणरूपहै ७ ॥

नाम प्रभाव जान शिव नीको कालकूट फल दीनअमीको ८

टी० । पुनः श्रीरामनामके प्रभावको नीके शिवजी जानते हैं नाम और कोऊ खंडमंड जानते हैं शिवजी नीके जानतेहैं कि जेहिराम नामकेप्रताप ते कालकूट जो हलाहल विष मृत्युका देनेवाला सो अमी को फलदेत भयो अथवा कालकूट शिवजीके मारनेको गयो सो शिवजी रामनाम के प्रभावकरि येते शीतलभयेहैं कि इतनेबड़े शत्रुको अमी को फलदेते भये अपने कण्ठमें बास देकरि रामनामको रक्षक करिदियो ८ ॥

दो० बर्षाऋतु रघुपति भगति तुलसी शालि सुदास ॥
रामनाम बरबर्ण युग श्रावण भादौं मास ६

टी० । सूक्ष्मते रामनामको स्वरूप अंगफलकहि अब स्थूल स्वरूप अंग फल कहतेहैं प्रथम स्वरूप सुनो (दोहार्थ) वर्षाऋतु रघुपति भगतियह कहि यह जनाये कि जैसे षट्ऋतुहैं तिनमें वर्षाऋतु करि सब शोभित हैं एक वर्षाऋतु न होइतौ सबऋतु अशोभित होइजाहिं काहे ते कि वर्षा-ऋतु सब ऋतन की पोषकहै तैसे षट्भक्ति में रघुपति भक्ति वर्षा ऋतुहै कौन षट्भक्ति शैव वैष्णव शाक्त सौर्य गाणपत्य रघुपति की ये षट्भक्तिमें रघुपतिभक्ति वर्षा ऋतुहै काहेकि सबभक्तिनकी पोषकहै रघुपतिकी भक्ति बिन सब भक्ति अशोभित हैं तौ जैसे वर्षाऋतु में शालि जो है धान सो

आनन्दरहतहै तैसे रघुपतिभक्ति बर्षाऋतुमें सुछुदास जोहैं रामरसिकतेईं धानहैं आनन्दरहतेहैं वो जैसे बर्षाऋतुमें दोमास होतेहैं श्रावण वो भादौं तैसे रघुपति भक्तिमें रामनामजो द्वैबर्ण नाम अक्षर सोई श्रावण भादौं मासहैं यामें यहध्वनिहै कि जैसे श्रावण भादौं द्वै मासकी बर्षाऋतुहै तैसे रामनामजो युग अक्षर सोई रघुपति भक्तिहै वो अपरदासजोहैं ते अपर अन्नहैं जव गेहूं चना जे कुछबर्षाको जलमिलै तौ कूप तलाव नदीशीत से पाकते हैं तैसे वो दासकिंचित्रघुपतिको नामले अपर देवकी उपासना व ज्ञानादि साधनते अपनाभला चाहते हैं वो सुदास जो श्रीसीताराम जीकेअनन्यहैं तेधानहैं कि जो केवल बर्षाकेजलसे पाकते हैं अपरसे नहीं तैसे वो सुदासकेवल रामनामसे अपना भलामानतेहैं अपरकी ओर तकिबेनहीं करतेइहांते युगाक्षरकी मैत्री वर्णनकरते हैं दोहा ताईं ९ ॥

आखर मधुर मनोहरदोऊ बर्ण बिलोचन जनजियजोऊ १०

टी० । दोऊ आखर जो रामनाम सो मधरनाम मिष्ट वो छोटे छोटेहैं ताहीते मनोहरहैं मनको हरिलेते हैं वो सर्व बर्णजोअक्षर तिनके विशेष लोचननाम नेत्रहैं जैसे सर्वशरीरमें नेत्र मुख्यहैं जो नेत्रनहोहिं तौ सूर होइ जाइ फिरि कोईशरीर नसूझै तैसे रामनाममें अकारहै सो स्वराधिप है तेहीविना सबअक्षर अंधेहैं यहबातको हेजन सर्वप्राणियो अपने अपने जियमें जोऊ नामदेखौ १० ॥

सुमिरत सुलभसुखदसबकाहू लोक लाहुपरलोकनिबाहू ११

टी० पुनः रामनामकैसोहै किसुमिरतसंते वड़ो सुलभहै नाम अटपट नहींहै कै व्याकरण आदिकोईका सहाइस्वलेइ तब शुद्ध उच्चारणहोइ सोनहीं बड़ोसुलभहै वो सबको सुखदाताहै वो लोकमें लाभ रोटीलूगा परलोकमें इहां तक निर्वाहहै कि जो रामनाम एकौवारकहै तो श्रीराम समीपको प्राप्तिहोइ जो मुनिनको दुर्लभहै (प्रमाणं वाराहपुराणेश्लोक) दैवाच्छूकरशावकेननिहतो म्लेछोजराजर्जरो हारामेतिहतोस्मिभूमिपतितो जल्पँस्तनुंत्यक्तवान् ॥ तीर्णोगोष्पदवद्भवार्णवमहोनाम्नःप्रभावात्पुनः किञ्चित्रंयदिरामनामरसिकाः तेयांतिरामास्पदं १ । ११ ॥

कहत सुनतसमुझतसुठिनीके रामलषण समप्रियतुलसीके १२

टी० । फेरि रामनाम कैसोहै कि कहतमें सुनतमें समुझतमें सुठिनाम अतिनीकोहै वो गोस्वामीजी कहतेहैं कि हमके तो श्रीरामलक्ष्मणकेसम

नाम बराबरि प्रियहैं काहेते रकार रामरूपहै वो मकार लक्ष्मणरूप अथवा जैसे रामजीके लक्ष्मणजी प्रियहैं तैसे हमको रामनामप्रियहै अथवा जैसे लक्ष्मणजीके रामजीप्रियहैं तैसे हमको रामनाम प्रियहैं १२ ॥

वर्णतवर्ण प्रीतिविलगाती ब्रह्मजीव इवसहजसँघाती १३

टी० पुनः रामनाम कैसो है कि वर्ण जो दोऊ अक्षर सो वर्णत संते तौ प्रीतिविलगातीनाम छूटीसी जानिपरतहै कि रकारकोस्थान मूर्द्धन्यहै वो मकारको ओष्ठ वो नासिकाहै परंतुहैं दोऊ ब्रह्मजीवकी नाईं सहज सँघाती जैसे जीवके अंतर्यामी ब्रह्मअनादिहै कवहूं वियोगनहीं तैसे रामनाम सहज सँघातीहै कोईकाल बिलग नहीं अथवा वर्णतवर्णनाम वर्णनकरतसंते बरनाम श्रेष्ठहै वो न प्रीतिविलगाती नाम प्रीतिकवनेउ कालमें विलगनहीं होत ब्रह्मजीवकी नाईं अथवा बर्णत वर्णनाम राम नामको जो वर्ण करि बर्णनकरै तौ प्रीति विलगाइ जातीहै काहेते कि दोनों वर्ण के बीचमें यकार अक्षरपरतहै तौप्रीति छूटिजातीहै वोये दोनों वर्ण की प्रीति कोईकाल नहीं अभिप्राय कि रामके जो युगवर्ण हैं सोय वर्गीरकार वो पवर्गीमकार नहीहैं इनसेपरेहै तिसरामनामके संसर्गपाइ करि ये दोऊअक्षर ऊर्ध्वगति को पावतेहैं स्वरनष्टभयेते(प्रमाणं अन्येच) यन्नामसंसर्गवशाद्विवर्णौ नष्टस्वरौमूर्द्धगतौस्वरानां । तद्रामपादौहृदि संनिधाय देहीकथंनोर्ध्वगतिंप्रयांति ॥ १३ ॥

नरनारायण सरिससुभ्राता जगपालक विशेषजनत्राता १४

टी० । पुनः रामनाम कैसो है कि नर नारायणके सदृश सुष्ठ भ्राता है नर नारायण जगत्को पालन करतेहैं वो रामनाम जगत्को पालन करत है वो अपनेनाम जापकजनको विशेषत्रातानाम रक्षाकरतेहैं १४ ॥

भक्तिसुतियकलकर्णविभूषण जगहितहेतुबिमलविधुपूषण १५

टी० । भक्ति रूपा सुन्दरि स्त्रीको कलनाम सुन्दर कानके भूषण हैं अभिप्राय कि जैसे स्त्रीको कानको भूषण सुहाग सूचकहै तैसे भक्ति रूपा सुन्दरि स्त्रीको रामनाम सुहागहै जिसभक्तिमें रामनाम नहीहै तौनभक्ति विधवाजानौ हनुमन्नाटकमें मुक्तिरूपा स्त्रीको कर्णभूषण लिखा सो फल क्रियाकी एकता जानौ भक्तिक्रिया मुक्तिफल सोमुक्तिकोभी रामनामभूषणहै (प्रमाणं हनुमन्नाटके श्लोक) मुक्तिस्त्रीकर्णपूरौमुनिहृदयवयः पक्षती तीर भूमी संसारापारसिंधोः कलिकलुषतमस्तोमसोमार्कबिम्बौ उन्मी-

लितपुण्यपुंजद्रुमललितदललेलोचनेचश्रुतीनां कामंरामेतितवर्णौसमिहक-लयतांसंततंसज्जनानाम् ॥ १ (पुनः) जगत्केहितहेतु रामनाम विमल विधुजो चंद्रमा वो विमल पूषण नाम सूर्य हैं जैसे सूर्य्य अपनी किरण करिजलवर्षते हैं तब अनेक औषधी उपजती हैं वो चंद्रमा अपने किरण करि औषधिन कोपोषते हैं पर ये सूर्यचंद्रमा समलहैं काहेते कि पोषण शोषण दोनोहैं वो रकाररूपसूर्य वोमकाररूपचंद्रविमलहैं कि रकार सूर्य्य अनेक गुणनको उत्पत्ति करतहैं वो मकार चंद्रपोषण करतहै फेरि शोषत नाहीं दिनदिन पोषतहैतातें विमलहै १५ ॥

स्वादतोषसम सुगतिसुधाके कमठशेषसमधरवसुधाके १६ ॥

टी० पुनःरामनामकैसोहै कि सुगतिरूप सुधाजो अमृत तिसके स्वाद वो तोषरूपहै जैसे अमृतमें स्वाद वो तोषसार हैनाम जहां स्वाद तोष है तबनैअमृतकहावतहैजोकहौ स्वादबहुतनमेंहैतहांस्वाद तौहै परतोषनहीं तैसे सुंदरिगतिमें रामनामसारहै कि जहां रामनामहै तहंई सुंदरि गतिहै रकाररूपस्वाद वो मकाररूप तोषनाम जैसे अमृतभोजन करनेसे दूसरी चीज खानेको मन नहीं फेरिदूसरेदिनके उपाइनहीं तैसेरामनाम कहते सुगतिके हेतु फेरि दूसरेकीसाधनरूप स्वाद वो अपर उपाइरूप तृष्णासे पूर्णहोइ जातहै पुनःरामनामकैसोहै कि कमठ शेष समधर्मरूप वसुधाके धारणकरनेमेंसमर्थहै अथवावसुधेके कमठ शेष समधरहै रकाररूप कमठ मकार रूप शेष जैसेकमठशेषके आधारहैतैसेरकारमकारके आधारहै१६ ॥

जनमन मंजुकंजमधुकरसे जीहयशोमतिहरिहलधरसे १७

टी० । पुनः रामनामकैसोहै किजनजोहैं भगवत्दासअथवा सर्ब प्राणी तिनकामन मंजुकंज नामकमलहै तिसके आनन्ददेबेको दोउअक्षर कैसे हैं कि मधु नाम जल. वो कर नाम सूर्य है इहां जो मधु कर भवँर का अर्थकियाजाइ तौ भवँर आपु तौ सुखीरहत है पर कमलको खेदकारी है तैसे रामनामनहींहै राम नाम तौ जननके मनको आनन्दकारी है रकार जलरूप उत्पत्ति करतहै मकार सूर्यरूप पोषण करत है मधुको जलनाम अनेकार्थमेंलिखाहै ॥ मधुजल मधुपय मधुसुधा मधुसूदन गोविंद॥ वो कर नाम सूर्यके किरणकाहै सो सूर्यका गुणहै तौ गुणगुणी अभेद है इहां गुण करि गुणीको ग्रहणभयो पुनः श्रीरामनाम कैसोहै कि जिह्वारूप यशोदा को आनंददेबेको हरि जो श्रीकृष्णचन्द्र वो हलधर जो बलभद्रजी तिनके

समानहै अभिप्राय कि जैसे श्रीयशोदा जी दिन राति हलधर के लालन पालनमें लगीरहैं वो हरि हलधर करिकै जातिकी अहीरिनी सो ब्रह्मादिकनकरि पूजनीयभई तैसे जो जीभ रातिदिन रामनाम में लगी सो है तौ चमड़ी पर यह भी ब्रह्मादिक करि पूजनीय होती है राम नाम के प्रभावसे १७ ॥

एकछत्रकएकमुकुटमणिसबबरणनपरजोउ
तुलसीरघुबरनामकेबरणबिराजतदोउ १८

टी० । श्रीगोस्वामीजी कहतेहैं कि रघुबर नामके जो दोउबरण हैं सो एकजो रकार सो रेफरूपछत्र वो एक जो मकार सो अनुस्वाररूप मुकुट मणिहोइकरि सब बर्णनके माथेपर शोभितहै तैंतीसबर्ण अथवा छत्तीस बर्ण वो सोरह स्वर सबके माथेपर बिराजमान हैं सो जोउ नाम देखौ (प्रमाण महारामायणे श्लोक) निर्वर्णरामनामेदं केवलंचस्वराधिपम् ॥ मुकुटौछत्रसर्वेषां मकारोरेफव्यंजनम् १ । १८ ॥

समुझत सरिसनामअरुनामी प्रीतिपरस्परप्रभुअनुगामी १९

टी० । युगाक्षरकी मैत्री कहि अब नाम नामी को अभेद कहते हैं कि समझतसन्ते नाम व नामीकही रूप सो सरिसनामबराबरिहै काहेते कि दोनोंकी प्रीति परस्परहै नामकी प्रीति नामीसे वो नामीकी प्रीति नाम से कैसे जैसे स्वामी सेवककी प्रीति परस्परहै जो कोई कहै कि फेरिको स्वामी व को सेवक नाम स्वामी नामी सेवक की नामी स्वामी नाम सेवक तहां नाम नामीमें स्वामी सेवकभाव नहीं केवल दृष्टान्त को एक देश परस्पर प्रीति स्वामी सेवककी जैसीहै तैसे नाम नामी की प्रीतिहै लक्ष स्वामी सेवककी प्रीतिका (पाहिनाथकाहि पाहिगुसांई । भूतल परे लकुट की नांई ॥ उठेरामसुनि प्रेमअधीरा । कहु पट कहु निषंगधनुतीरा) ऐसे प्रसंगरामायणमें ठौर ठौर देखिलेव १९ ॥

नामरूप दोउईशउपाधी अकथ अनादिसुसामुझिसाधी २०

टी० । नामरूप दोउईशउपाधी जोऐसा अर्थकरैंकि नाम और रूपदोनों ईशजोहै ब्रह्म तिसमें उपाधिहै नाम जो ब्रह्म नामरूप रहित है सो देव महि गोब्राह्मणके हेतु नामरूप ग्रहण करतहै ताते उपाधि है तौ इसमें बहुतसे बिवादहैं परन्तु इहां यह प्रकरणे नहीं इहांतो नाम नामी का

प्रकरणहै सो सुनौ कि नाम वो रूप दोनोईश जो परमात्मा तिसकेउप-नाम समीपअधीनाम प्राप्तिहै नामईशैके नामरूप दोनोहैं ताहीतेबरोबरि है वो नामरूप दोनोंअकथहैं वो अनादिहैं जबसेनाम तबसेरूप वो जबसे रूप तबसे नाम आगे पाछे कोई इस बात को सुष्ठ सामुझि है जिनकी तिन साधी है अथवा नाम रूप दोउईशउपाधी नाम वो रूप दोनो ईश जो परमात्मा तिनके उपाधि है कि जो ईश्वरका नाम जपै अथवा स्व-रूप का ध्यान करै तौ ईश्वर अपनो परधाम छोड़ि कै चलो आवत है यह उपाधि है पर नाम रूप दोनो अकथ अनादि हैं सुष्ठ सामुझि करि साधेजातहैं यह दोनोअर्थमें नामरूपकी अभेदता तौ भई परन्तु सूक्ष्मते नामरूप ते ईश कोई तीसरा पायाजातहै कि जिसके नामरूप उपाधिहैं इसहेतु तीसराअर्थ निर्विरोध करतेहैं कि नाम रूप दोउ ईशनाम समर्थ है यहां नाम वो रूपका प्रकरणहै यहां ईश तीसरापद कहनेका कुछप्रयो-जननहीं ताते ईशशब्दकाअर्थ समर्थमेंहै कि नाम वो रूप दोनो ईशनाम समर्थहैं व नाम रूप दोनोके बीचमें उपाधी अकथहै नाम कोईनामरूप में उपाधी कहबे योग्यनहीं काहेते कि दोनो अनादि हैं यह बात को सु सामुझिवालौंने साधीहै नाम जिनकी सुन्दरिसामुझिहै को शिव काकभुशु ण्डि अगस्त्य नारद शुकदेव इनसबनेसाधीहै कि नामरूप निरुपाधिहैं २०

कोबड़ छोट कहतअपराधू सुनिगुण भेद समुझिहहिंसाधू २१

टी० । अब जो कोईकहै कि नामरूप निरुपाधि तौ हैं पर इनमें को बड़ाहै को छोटहै तापरकहतेहैं कि कोबड़ा कोछोट नामनामबड़ो नामी छोट कि नामीबड़ो नामछोट सोईकहत अपराधहोतहै जोकहो फेरिकुछ कहौगे तापर कहतेहैं कि सुनिगुण भेद समुझिहहिं साधू हम बड़ाछोटा नहीं कहतेहैं नाम वो रूपका गुण कहतेहैं गुणके द्वार भेद साधु समुझैंगे जो कहो कौनगुण सोतो आगे चौपाइनमें कहतेहैं पर सूक्ष्मते इहां कहि देतेहैं कि साधन अवस्थामें रूप नामकेआधीनहै व सिद्धिअवस्थामें नाम रूप एकैहै २१ ॥

देखिये रूप नाम आधीना रूप ज्ञान नहिं नाम विहीना। २२

टी० । अब जोकहै कि गुणसुनि भेद समझैंगे सोगुण कहतेहैं कि रूप नामकेआधीनदेखिपरतहै काहेते कि नामबिहीन रूपकाज्ञाननहींहोता२२

रूप विशेष नामबिनुजाने करत लगत नपरत पहिचाने २३

टी० । देखिये तौ रूप विशेषनाम साक्षात करतलमें गतनाम प्राप्तिहै परनाम जानेबिनु पहिचान नहींपरतहै २३ ॥

सुमिरिय नाम रूप बिनुदेखे आवत हृदय सनेह विशेषे २४

टी० । वो रूपदेखे बिनैनाम कोस्मरणकरै तौ रूप आपै चलाआवतहै काहेते कि नामके ऊपर नामी की हृदय ते विशेष स्नेहहै ताहीते चलौ आवतहै २४ ॥

नाम रूपगुणअकथकहानी समुझत सुखद नपरतबखानी २५

टी० । देखिये तौ जब कहा कि साक्षात रूप प्राप्ति है परनाम बिना पहिचाननहीं वो नामके सुमिरतैरूप चलौआवतहै तब यह जानिपर्यो कि नाम रूपसे बड़ाहै व जबकहा कि नामकेऊपर नामीकी बड़ीप्रीतिहै हृदयसे तब यह जानिपरा कि छोटेके ऊपर बड़े का स्नेह होताहै ताते नामी बड़ाहै यहबातको समुझि गोस्वामीजीकहतेहैं कि नाम वो रूपके गुणन की कहानी अकथ है समुझते बनतहै बखानिकै नहीं कहाजाइ है काहेते कि कहनेमें न्यूनाधिक भासतहै ताहीते समुझते सुखद है देखिये तो श्रीगोस्वामीजी नाम स्वरूप कहनेमें नामनामीका प्रकरण उठाये सो पहिले सरिसकहे फेरि गुणभेद कहे फेरि अकथकहानी कहि नाम नामी को अभेदकहै सो इसमें जो चमत्कारहै सो आगे शंकाकेसाथकहैंगे२५ ॥

अगुणसगुण बिचनामसुसाषी उभयप्रबोधकचतुरदुभाषी २६

टी० । यहांतक स्वरूपकहि अवअंग कहतेहैं कि अगुण जो निर्गुणब्रह्म अन्तर्यामी वो सगुणजो विष्णु विराट वो सबअवतार सोसगुणब्रह्म तिन दोनौ ब्रह्मकेबीचमें रामनाम सुन्दरसाषीहै नाम पक्षपात नहींकरते ज्यों की त्यौं कहिदेतेहैं वोदोनौ ब्रह्मके प्रबोध करिबे में चतुर दुभाषी हैं जैसे दक्षिणदेशमें दुभाषिया होतेहैं ते उत्तरदक्षिण दोनोंदेशकी वाणीपढ़ेरहते हैं जब दोनौदेशके मिलावनेकोभये तब उनकीवाणीमें उनको वो उनकी वाणीमें उनको समुझायकै मिलायदेतेहैं सो दुभाषीहैं व नाम चतुर दुभाषीहै काहेते कैएकशब्दमें दोनोंब्रह्मको मिलाइदेतहै कैसे कि जबकहा कि राम तब निर्गुणब्रह्म अन्तर्यामीको बोधभयौ कि रमनाद्राम इत्यपि सबमेंरमैसोराम वो सगुणब्रह्मको बोधभयो कि रमक्रीड़ाधातुहै सो विष्णु विराट अवतार सबक्रीड़ाकरतेहैं ताते राम वो रघुबरकेरामकोतो साक्षात् बोधभयो २६ ॥

रामनाम मणि दीपधरु जीहदेहरीद्वार
तुलसीभीतरबाहिरोजौंचाहसिउजियार २७

टी० । श्रीगोस्वामीजी कहतेहैं कि रामनामरूप मणिदीप जीभरूपद्वार की देहरीपर धरु मणिदीप कहिबे को यह भाव कि तेलदीपकसउपाधि होतहै पवन पाँखीकी उपाधिहै वो मणिदीपनिरुपाधिहोतहै कि जेहिको काम क्रोधादि पवन पाँखो नहीं बुझाइसकै है ॥ जो भीतरबाहर उजियार चाहसि भीतर का उजियार चतुष्टअंतःकरण समहोते हैं बाहरका उजियार दशौइन्द्री वशहोतिहै फेरि कामादि चोरन की नहीचलै अथवा इहां सगुण निर्गुण का प्रकरण है ताते ऐसा अर्थ करना कि रामनाम मणिदीपजिह्वा मुखरूपद्वारके देहरीपर धरु जो भीतरबाहर उजियार चाहसि तौभीतरका उजियार निर्गुणब्रह्म अन्तर्य्यामी देखिपरतहै वो बाहरका उजियार सगुण ब्रह्मके जे चरित वेदपुराण शास्त्र संहितन में सो सब देखिपरतहैं वो स्वरूप देखिपरतहै २७ ॥

नामजीहजपि जागहिंयोगी बिरतिबिरंचिप्रपंचबियोगी २८

टी० । श्रीगोस्वामीजी नामकास्थूलस्वरूप कहि स्थूल अंगकहनेलगे कि निर्गुण सगुणदोऊ नामाधीनहैं यहअंगकहते समयदेखा कि चारिप्रकारके भक्त जोहैं ज्ञानीजिज्ञासू अर्थार्थी आर्त्त वो पांचवा प्रेमी यह पांचौकेनामै आधारहैं सो यहभी नामको अंगहै ताते इहां अगुण सगुण कि बीजधरि दीन आगे विस्तार पूर्वक कहैंगे बीचमें पांचौ भक्तन की नामाधार वृत्ति सुनहु प्रथम ज्ञानी भक्तकी कहतेहैं कि योगी जोहैं योगी कही अचंचल चित्तकी वृत्तकी आत्मा परमात्माका योगनाम मिलाप कियाहै जिननेसो योगीते योगी नामहीको जीभतेजपि संसाररूप रात्रीमें जागतेहैं(प्रमाण) यहजगजामिनि जागहिं योगी ॥ पुनः गीता॥या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्त्तिसंयमी ॥यस्यां जागर्ति भूतानि सानिशा पश्यतो मुने॥ पुनः नाम को जीभिते जपि योगी वैराग्यमें आरूढ़ह्वै करिविरंचिके प्रपंचतेवियोगी नामरहितहैं २८ ॥

ब्रह्म सुखहि अनुभवहिंअनूपा अकथअनामयनामनरूपा २९

टी० । पुनः वे योगीनामजपि ब्रह्मसुखको अनुभव करतेहैं वोह ब्रह्मसुख कैसोहै कि अनूपहै जाकी उपमाको कछूनहींहै पुनः अकथहै नाम कहबे

में नहीं आवैहै पुनः अनामयहै आमय कही रोगषट् विकार काम क्रोध लोभ मोह मद् मत्सर एतेरोग से रहित है पुनः प्राकृत नाम रूप से रहितहै २९ ॥

जाना चहहिँ गूढ़ गतिजेऊ नाम जीह जपिजानहिं तेऊ ३०

टी०। अवजिज्ञासू भक्तकी कहतेहैं कि गूढ़ गतिकोजोजानाचहै तेराम नाम जिह्वाते जपिकै जानैं गूढ़ गति कही आत्मा परमात्माकी गति बड़ीगूढ़है ते रामैनाम के जिह्वाते जपेते जानी जातहै शंका अंतःकरण ते जपने को न कहा जिह्वा ते जपने को कहा इस में क्या हेतु काहे की सब करतूति को अंतःकरणैसे करनेका विधानहै वो ये वारवार जिह्वाते जपने को कहते हैं समाधान सुनौ सब करतुति अंतःकरण से करने का विधान है वो राम नाम भी अंतःकरण से जपने का विधान है परंतु अंतःकरण के जपनेसे जीवन मुक्तहोतहै भक्ति नहीं मिलत वो श्रीरामसमीपकोनहीं प्राप्तिहोत वो जिह्वा के जपे ते प्रेमापराभक्ति प्राप्तिहोतिहै वो नित्य श्री सीतारामजी के समीप को प्राप्तिहोत है ताहीते वारंवारजिह्वा से जपने को कहतेहैं (प्रमाण महारामाणे श्लोक) अंतर्जपंतिजेनाम जीवन्मुक्ता भवंतिते ॥ तेषांनजायतेभक्तिर्नचरामःसमीपकाः १ जिह्वयाप्यंतरैर्वर्णैं रामनामजपंतिये ॥ तेचप्रेमापराभक्तो नित्यंरामसमीपकाः २ । ३० ॥

साधक नामजपहिंलयलाए होहिं सिद्धअणिमादिकपाए ३१

टी०। अवअर्थार्थी भक्तकी कहतेहैं कि साधक जोहैं सिद्धिन केसाधने वाले ते लय लगाय के रामनाम जपहिं तौ अणिमादि आठौ सिद्धिन को पाइ करि सिद्धहोइ जाहिंलय कही सहजा वृत्ति सोवत जागत उठत बैठत बोलत चलत एकरस रामनाम में लगेरहैं ३१ ॥

जपहिं नामजनआरतभारी मिटहिं कुसंकटहोहिंसुखारी ३२

अवआर्त्त भक्तकी कहते हैं किजनजो भक्तजन अथवा सर्वजन सोभारी आर्त्तमें जो रामनामजपहिंतौ सर्बकुसंकट मिटिजाहिंवोसुखीहोहिं३२ ॥

राम भक्त जग चारिप्रकारा सुकृती चारिउअनघउदारा ३३

टी० । अवचारिउ भक्तनको मिलाइकरि कहैहैं कि श्रीरामभक्त जगत्में चारिप्रकारकेहैं जो ऊपर कहि आयेहैं सो चारिउ सुकृती वो चारिउ अनघ वो चारिउ उदारनाम बड़ेहैं ३३ ॥

चहुं चतुरनकहँ नाम अधारा ज्ञानी प्रभुहिविशेषपियारा ३४

टी०। चारिउचतुरनकेश्रीरामनामकोआधारहै चतुरकहनेकायहभावहै कि आपन सकाम तौ रामजीते याचतेहैं दूसरेते नहीं याचते ताहीते चतुर परंतु चारिउ में ज्ञानी भक्त जोहै सो प्रभु जो श्रीरामचंद्र तिनको विशेष प्रियहै काहेते कि निष्कामीहै जो कहौ और भक्त नहीं प्रिय हैं सो नहीं प्रिय तौ सबहैं परंतु तीनिभक्त सकामीहैं जिज्ञासुअर्थार्थीआर्त ताते प्रिय तौ हैं परसामान्य वो ज्ञानी निष्काम है ताते विशेषप्रियहै ३४ ॥

चहुँयुग चहुंश्रुतिनामप्रभाऊ कलिविशेषनहिंआनउपाऊ ३५

टी०।अबजोकोईकहै कि चारिउ भक्तनकीगतिनामके आधारहै कलियुगै में है कि औरौ युगन में तापर कहते हैं कि चारिउ युगन में वो चारिउ वेदनमेंश्रीरामनामको प्रभाव जगमगाइ रह्योहै वो रामनामैको अधारहै परंतु कलिमें विशेष काहेते कि और युगन में सात्विक गुणहै तातेअवर उपाइ भी होइ सकै रहैं वो कलियुग जो मलकर मूल तमोगुण मय सोतिस में दूसरा उपाय नहीं होइसकत केवलनाम को प्रभावहै ताते कलिमें रामनाम छोड़ि दूसरा उपायनहीं ३५ ॥

सकल कामना हीन जे रामभक्तिरसलीन
नामसुप्रेमपियूषह्रदतिनहुँकियेमनमीन३६

टी० । चारिउ भक्तनकी कहि अब प्रेमी जो पांचवें भक्त तिनकोकहते हैं कि सकल कामनातेहीन ह्वैकै जे श्रीरामचन्द्रकी प्रेमाभक्ति रसमेंली न ह्वैरहेहैं तिनहूंने रामनामको जो सुष्टुप्रेम सो पियूषनाम अमृत को ह्रद नाम कुण्ड तिसमें अपने मनको मीनकरि दियोहै ३६ ॥

अगुण सगुण दुइब्रह्मस्वरूपा अकथअगाधअनादिअनूपा ३७

टी० । अबजो पूर्व अगुण सगुणकावीज बोये हैं सो विस्तारकरिकहते हैं कि ब्रह्मके दो स्वरूप एक निर्गुण अन्तर्यामी एक सगुणविष्णु विराटवो सब अवतार तिनमें मुख्य श्रीदशरथनन्दन स्वरूप सो ब्रह्मके दोनों स्वरूप कैसेहैं कि अकथहैं कोई कथिकै पारनहीं पावत तातेअकथ वोअगाध हैं जाकीथाहसे शेषमहेश नहींपावें वो अनादिजाकीआदिमध्य अन्तनहीं जानाजाइ वो अनूप जाकी उपमाको कोईनहीं ३७ ॥

मोरे मत बड़नाम दुहूते कियेजेहि युग निजबसनिजबूते ३८

टी० । पर श्रीगोस्वामी जी कहते हैं कि मोरे मतमें तौ नाम निर्गुण सगुण दोनोंते बड़ोहै काहे कि जेहि नामने अपने बूतकही अपने बलते दोनोंको बस कियोहै ३८ ॥

प्रौढ़सुजनजनजानहिंजनकी कहउँप्रतीतिप्रीतिरुचिमनकी ३९

टी० । अब जोकोई कहै कि क्या व्यास बाल्मीकि अगस्त्य जैमिनि शांडिल्य गौतम पराशर इन सबते तुम्हार न्यारा मतहै तापर कहतेहैंकि नहीं प्रौढ़ सुजन जनजेहैं व्यासादि ते जनजो हूं मैं सो तिसकी जानतेहैं क्या जानतेहैं कि जो मैं अपनेमनकी प्रीति वो प्रतीति वो रुचि कहतहौं कि रामनाम अगुण सगुण ते बड़ो है सो समस्त प्रवीणन को मतहै यह जानतेहैं ३९ ॥

एक दारु गत देखियेएकू पावक सम युग ब्रह्म विवेकू ४०

टी० । अब जौने रीतिसे अगुण सगुण ते रामनाम बड़ो है सो कहते हैं कि युग ब्रह्म जो निर्गुण सगुण तिनका विवेक पावक सम है कि जैसे एक पावक दारुकहो काष्ठ तिसमें गतनाम प्राप्ति है वो एक प्रत्यक्ष देखि परतहै तैसे निर्गुण ब्रह्म सर्व में व्यापक है गुप्त वो सगुण ब्रह्म प्रत्यक्ष देखि परतहै ४० ॥

उभय अगम युग सुगम नामते कहउंनामबड़ब्रह्मरामते ४१

टी० । परन्तु उभयनाम दूनौ अगमहैं जानिबेको फेरि दूनौ रामनाम ते सुगमहै ताहीते ब्रह्म जो निर्गुण वो रामजोसगुण तिनते श्रीराम नाम को बड़ो कहतहौं ४१ ॥

व्यापक एक ब्रह्म अबिनाशी सत चेतन घनआनंदराशी ४२

टी० । व्यापक एक ब्रह्मकही वृहत्वो अविनाशी वो सतकही एकरस कबहूं बिनसै नहीं वो चेतनजो सबको चेतन कियेहैं वो सघन आनन्द की राशि यह सात विशेषण निर्गुण ब्रह्मकेहैं ४२ ॥

असप्रभुहृदयअछतअबिकारी सकलजीवजगदीनदुखारी ४३

टी० । सो ऐसो सातो विशेषण के युक्त प्रभु समर्थ अविकारी सबके हृदयमें अछतनाम रहते वोसकल जीवजगमेंदीन दुखारी ह्वैरहेहैं काहेते कि ऐसे ब्रह्मके जानेबिना ४३ ॥

नामनिरूपणनामयतनते सोउप्रकटतजिमिमोलरतनते ४४

टी० । जो ऐसो ब्रह्म सबमें प्राप्त वो जानेबिनु सब जीव दुःखीसोऊ नाम निरूपणकही नामको अर्थ समुझै अथवा नाम यतनते कही अह-र्निश रामनामके जपेते प्रकटत नाम प्रत्यक्ष होत है तब दुष्टमिटिजातहै कैसे प्रकटतहै जैसे रतनते मोल मोलकही द्रव्य रतनके परखे ते रतन को मोल प्रकटतहै अथवा रत्नको व्यापार करते करते रतन को मोल प्रकटतहै तैसे रामनामको निरूपण जो अर्थ सो पारिखहै वो जपनासो व्यापारहै वो मोलकही द्रव्य सो निर्गुण ब्रह्मसो प्रकटतनाम प्रत्यक्षहोत है तब जीव सुखी होतहै ४४

निर्गुणतेयहिभांतिबड़नामप्रभावअपार ॥
कहउँनामबड़रामतेनिजविचारअनुसार ४५ ॥

टी० । अब श्रीगोस्वामीजी कहतेहैं कि निर्गुण ब्रह्म ते यहीभांति राम नाम बड़ोहै जो कहौ रामनामका इतनै प्रभाव है तापर कहतेहैं किनाहीं नामका प्रभाव अपारहै अब जैसे रामसे नाम बड़ोहै सो अपने विचार के अनुसार कहतहौं सो सुनौ (शंका) पूर्वनाम वो नामीके प्रकरण में कहा की को बड़छोट कहत अपराधू वो इहां कहतेहैं कि कहौ नामबड़ रामते सो यामें क्याहेतु (समाधान) सुनौ इहां श्रीगोस्वामीजी श्रीराम जीके द्वै स्वरूप दिखावाहै दोनो प्रकरणमें जब नामकोस्वरूप कहा तब नाम नामीको अभेदकाहा वो जब नामको अंग कहनेलगे तव कहते हैं किरामते नामबड़ोहै तहां श्रीरामजीके द्वै स्वरूपहैं एकपरएक अवर पर-स्वरूपकवनहै जवन स्वायंभुवमनु केहेतु अवतार भयोसो पर काहेते कि ज्यौंकात्यौंप्रादुर्भावहै वो तिनहीके नाम को बंदना करते हैं स्वरूपअंग फलकहिकरिवा अवर स्वरूपकी कौन जौन जैबिजै वो जलंधरके वो नारद के शापकेहेततीनिकल्पमें जो अवतारसो अवरकाहेते कि चतुर्भुजक्षीरसाई श्रीमन्नारायण वो बैकुण्ठवासी बिष्णुसो दुभुज श्रीरामस्वरूपअवतरे यह बातको आगेविस्तार पूर्वक कहैंगे इहां सूक्ष्मते जनाये जोकहौ हमकैसे जानैकी दोस्वरूपदिखाये तहांसुनौ जबकही की रघुबर को रामवंदौं वो फेरि कहाकिनामनामी समुझतमें सरिसहैं तवएक स्वरूप दिखाये वो जब कहा कि अगुण सगुणते नामबड़ाहैसो अगुणते जैसेनामबड़ाहै सोक हे जबसगुणते नामको बड़ाकहनेलगे तबकहतेहैं किकहौं नाम बड़राम

ते तहां सगुणरामजोहैं तिनतेनामको बड़ाकहे सगुणरामकवन जो क्षीरसाई वो बैकुण्ठबासी राम अवतार सो सगुण राम यह दूसरे स्वरूप दिखाये जो वोही राम जिनके नाम के बंदना करतेहैं तिन्ह रामते नाम को बड़ाकहै तोनहींबनै याम्रे द्वै बिरोध परत हैं एकतौ पूर्व नामनामी को सरिस कहेसो दूसरे अगुण सगुणते नामको बड़ा कहतेहैं तौ प्रकरण अगुणसगुणकाहे इहां वोह रामका कुछ प्रयोजनै नहीं इहांतौ सगुणराम से बड़ाकहेहैं ताते दो स्वरूप सिद्धि भये ॥

राम भक्त हितनरतनुधारी सहिसंकटकियसाधु सुखारी ४६
नामस प्रेम जपतअनयासा भक्त होंहिं मुदमंगल बासा ४७
ऋषिहितरामसुकेतुसुताकी सहित सेनसुतकिये बिवाकी ४८
सहितदोषदुखदासदुराशा दलयनामजिमिरबिनिशिनाशा ४९
राम एक तिय तापस तारी नामकोटि खल कुमतिसुधारी ५०
भंजेउ राम आप भव चापू भवभय भंजन नाम प्रतापू ५१
दंडकवनप्रभु कीन्हसुहावन जनमनअमितनामकियपावन ५२
निशिचरनिकरदलेरघुनंदन नामसकलकलिकलुषनिकंदन ५३

शवरी गीध सुसेवकन्हि सुगति दीन्ह रघुनाथ ॥
नाम उधारे अमित खल वेदविदितगुणगाथ ५४

राम सुकंठ बिभीषण दोऊ राखे शरण जानि सबकोऊ ५५
नाम अनेक गरीब निवाजै लोक वेद वर बिरद बिराजै ५६
रामभालु कपिकटक बटोरा सेतुहेतु स्रम कीन्हन थोरा ५७
नाम लेत भवसिंधुसुखाहीं करहु बिचार सुजनमनमाहीं ५८
राम सकुल रण रावणमारा सीयसहितनिजपुरपगुधारा ५९
राजा राम अवधरजधानी गावत गुण सुरमुनिवरवानी ६०
सेवक सुमिरतनामसप्रीती बिनुश्रमप्रबलमोहदलजीती ६१
फिरत सनेह मगनसुखअपने नामप्रसादशोचनहिसपने ६२

टी० । अबजौनेप्रकारसे सगुणरामतेनामबड़ाहै सो कहतेहैंपरंतु इहांभी

ग्रंथकारचमत्कारी दिखावतेहैं कादिखावतेहैं कि निर्गुणको नामाधीनकहि नामकोबड़ोकहे वो सगुणते बड़ो कहते हैं नामको परि नामाधीन नहीं काहेते रामस्वरूपहै वो रामैनामहै ताहीते गुणकृपाको तार तवकहिराम ते नामको बड़ोकहतेहैं कवनगुण कृपाकीभक्तहित कारी दोनौंहैं राम वो नाम परि भेदकाहै कि सहि सकट वो अनायास एक वो अनेक यही विधि से द्वै दोहा ताईं गुण कृपा का भेद जानौ इहां से द्वै दोहा ताईं अक्षरार्थैसिद्धिहै ४६ ॥

ब्रह्म राम ते नाम बड़ बर दायक बर दानि ॥
रामचरित शत कोटि महँ लियमहेशजियजानि ६३

टी० । दोहार्थ) श्री गोस्वामीजी कहतेहैं कि यहि विधिसे ब्रह्म जो है अंतरयामीनिर्गुण तिनते वो राम जो सगुणतिनते श्रीरामनाम बड़ाहै वो फेरि रामनाम कैसोहै को बरदायकवरदानि नाम जितने बरदेने वाले हैं तिनहुंकोबरदानीहै ऐसो श्रीरामनामको अपने जियमेंजानिकै महेश जो श्रीमहादेवजी सोसौकोटि राम चरित्रमेंसे ग्रहणकरिलीन जब सौकोटि रामायणको बाँटा कीन्ह तव द्वै अक्षर बचे तीनि भागकरेसे वोही आपु लैलीन्ह६३(शंका)सगुणरामसे नामबड़ाहै यह प्रकरणमें चापभंगसे दंडक बनपावनकहे सो इसमेंकांडक्रमभंगभयो यामें क्याहेतु (समाधान) सुनौ यह सब तरहको चरित्र गावनेका तौ कुछ कामै नहीं केवल भक्तहित कारित्ववोपुरुषत्व कहनाहै सो अयोध्या कांडमें नपायेताते कांड क्रमभंग भयो जोकहौकी निषादसे चरण धुवाये वो ग्राम बालिनी गँवारितिन पर कृपाकरेचित्रकूटके कोलकिरातनको सनाथ किये यहतौ भक्तहितकारित्व देखिपरत है तहां सुनौ यह चरित्र श्रीसाकेत विहारीको है जिन्हके नाम की बन्दना करतेहैं कुछ नारायण राम वो विष्णु रामको यहचरित्र नहीं है काहेते कि यह चरित्र मानसरामायणमें है सो मानसरामायण श्रीसा केतबिहारी रामके चरित्रको प्रतिपादकहै अपरग्रंथमें यहचरित्रनहींसुनि परतहै सो इहांभी श्रीगोस्वामीजी गुप्तसे द्वै स्वरूप दिखाये कि अयोध्या कांड का भक्तहितकारी जो चरित्र सो नामैका है काहेते कि नामनामी अभेदहै वो जौनरामसेनामबड़ाहै तिनका चरित्र अयोध्याकांडमें भक्तहित कारित्व नहींहै ताहीते कांडक्रम भंगकिये अबजो कोई कहै कि यह जो तुम द्वै राम कहतेहौ कि एक साकेतबिहारीराम जो स्वायम्भुवमनुके हेतु

अवतरे वो एकनारायण वो विष्णुराम जो जय विजय जलंधर नारदशाप हेतु अवतरे सो यहबात इसीग्रंथमेंहै कि औरकोई ग्रंथमें तहांसुनो राम द्वै नहीं रामतो एकहैं पर क्षीरसाई वो बैकुंठबासी रामस्वरूप धरते हैं ताते द्वै कहनेमें आवतेहैं वो जो तुमनेकहा कि यहबात इसीग्रंथमेंहै कि औरकहूं सो हमको तो इसीग्रंथका विश्वासहै परंतु अपरके बोधहेतु अपर ग्रंथका प्रमाण लिखते हैं सो सुनो ॥ शिवसंहिता में लिखा ॥ श्लोक ॥ ज्ञात्वास्वपार्षदौपातौ राक्षसौप्रबरौप्रिये । तदानारायणःसाक्षाद्रामरूपेण जायते १ प्रतापीराघवःसखाभ्रातावैसहरावण । राघवेणतदासाक्षात्साकेता दवतीर्य्यते २ अथ वार्त्तिक ॥ श्रीमहादेवजी कहतेहैं कि हे प्रिये ज्ञात्वा नाम जानिकै कि स्वपार्षदौ नाम अपने पार्षद जो हैं जय विजय ते जब बिप्रशापते राक्षसहोतभये रावण कुम्भकर्ण तदानाम तब साक्षात्नारायण जो हैं सो श्रीरामस्वरूपह्वै अवतरे १ वो जब श्रीरामइच्छाते प्रतापी वो बलवर्यनामे रामसखा सो रावण वो कुम्भकर्ण होतभये तदानाम तब साक्षात्राघव साकेतसे अवतीर्ण होते भये अवतीर्ण नाम उतरिआये २ (पुनः) स्कन्दपुराणेनिर्वाणखंडेरामगीतामेंलिखा (श्लोक) भार्गवोयंपुरा भूत्वास्वीचक्रे नामतेविधिः । विष्णुर्दाशरथीभूत्वा स्वीकरोत्यधुनापुनः १ संकर्षणस्ततश्चाहंस्वीकरिष्यामिशाश्वतं। एकमेवत्रिधायातं सृष्टिस्थित्यंतहेतवे२अथवार्त्तिक ॥ श्रीरामचन्द्रजीसेमहादेवजीकहतहैं कि हेश्रीरामचन्द्र येजोविधिहै बह्मा सो पूर्वभार्ग व जोहैं परसुराम सो परसुरामरूप ह्वैकरि आपका रामनामस्वीचक्रे नाम ग्रहण करतभये पुनः विष्णुजोहैं सोदाशरथी स्वरूपह्वैकरि तुम्हारोनाम स्वीकारनाम ग्रहणकियेहैं अधुनानाम इस कालमें १ वो हमजोहैं सो संकर्षणनाम बलभद्रस्वरूपह्वै करि आपकानाम स्वीकरिष्यामिनाम ग्रहणकरत हैं परि एकदांईनाहीं सास्वतं नामनिरंतर वारवार काहेते कि एकजोहैं आप सो उत्पत्तिपालन प्रलयके हेतु तीनि स्वरूप भयेहो इस शंकाको समाधान अपनी मति माफिक लिखे ६३ ॥

नामप्रसाद शंभुअविनाशी साजअमंगल मंगल राशी ६४ ॥

टी० । अबनाम को फलकहतहैं कि नामके प्रसादते अविनाशी शंभु जोहैं सोअमंगल साजमें मंगलकी राशि भयेहैं ६४ ॥

शुकसनकादिआदि मुनियोगी नामप्रसादब्रह्मसुखभोगी६५॥

टी० । शुकदेव सनकादि आदि मुनि वो योगीजेहैं ते नामके प्रसादसे ब्रह्म सुखभोगीहैं ६५ ॥

नारदजानेउ नामप्रतापू जगप्रियहरिहर हरिप्रियआपू६६ ॥

टी० । नामके प्रतापको नारदजी जानते हैं जा नाम प्रताप जानेते जगत्के प्रियजोहैं हरिहर सो हरिहरके आपुप्रियहैं ६६ ॥

नामजपतप्रभु कीन्हप्रसादू भक्त शिरोमणि भे प्रह्लादू ६७ ॥

टी० । रामनाम जपतसंते प्रभु प्रह्लाद के ऊपर इतना प्रसन्न भयेकी भक्त शिरोमणि करिदीन ६७ ॥

ध्रुवसँगलानिजपेउ हरिनामू पायउ अचल अनूपमठामू ६८

टी० । ध्रुवगलानि सहित नाम जपे विमाता कटु वचन कहे ता गलानि के मारे हरि नाम जपे सो नाम के प्रसाद अचल अनूपम ठाम पावते भये ६८ ॥

सुमिरि पवनसुत पावननामू अपनेवश करिराखेउरामू ६९

टी० । पुनः श्रीहनुमान्जू पावननाम को सुमिरिकरि श्रीरामजीको अपने वश करिलीन्ह ६९ ॥

अपतअजामिल गजगणिकाऊ भयेमुक्तहरि नामप्रभाऊ ७०

टी० । अपतनाम पतित अजामिल वो गज वो गणिका हरिनाम एक उच्चारण करि मुक्तभये ७० ॥

कहउँकहांलगि नामबड़ाई रामनसकहिं नामगुणगाई ७१

टी० । श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि मैं नामका प्रभाव बड़ाई कहांतक कहौं जो श्रीरामचंद्र अपने रामनामको गुण जो कहाचाहैं तौ नहि कहि सकैं काहेते न कहिसकैं कि अपने नामको गुण अपने मुखते कहनेमें संकोच होतहै ताहीते नाहीं कहिसकते जो रामचन्द्रजी संकोचनकरैं तौ नामके गुणकहिसकैं और कोई न कहिसकै (शंका) बन्दना तौ रामनाम की करतहैं वो गजगणिका अजामिल ध्रुव ये सबतौ कोई नारायणनाम कोई बासुदेव कोईहरिनामकहै हैं सो रामनाममें कैसे घटैगो(समाधान) सुनो इसबातका निराकरण इस चौपाई में है कि विधि हरिहर मयवेद प्राण सो रामनाम सबनामनको आत्माहै तौ शरीरका करतव्य आतमामें पर्यवसान होतहै इत्यर्थः ७१ ॥

नामरामकोकलपतरु कलिकल्याणनिवास ॥
जोसुमिरतभयभांगते तुलसीतुलसीदास ७२

टी० । (दोहार्थ)श्रीरामचन्द्रजीको नाम कलिकालमें कल्पतरुहै जिस में सर्बकल्याणको निवासहै जो रामनामके सुमिरतमें जोहौं तुलसीदास सो भांगते तुलसीभये भांगकेसमान अपावन सो तुलसीकेसमान पावन भये ७२ ॥

चहुंयुगतीनिकालतिहुंलोका भयउनामजपिजीवविशोका ७३

टी० । जो कोईकहै कि रामनाम कलिकालै में कल्पतरु है कि आगे युगनमें तापर कहतेहैं कि जोऐसेघोरपापरूप कलिकालमेंकल्पतरुहै तौ अपरयुग तौ पुण्यमयहै तौ क्यों न होइगो तथापिकहतेहैं सो सुनो चहुं युगनाम चारिउ युगनमें वो तीनिउंकालमें वो तीनिउंलोकमें रामै नाम जापकरि जीवविशोक भयेहैं ७३ ॥

वेद पुराण संत मतएहू सकल सुकृत फल रामसनेहू ७४

टी० । बेद वो पुराण वो संत सबको मत यही है कि सब सुकृतको फल रामनाममेंस्नेहहोना यावत सुकृतहैं जप तप यज्ञ ज्ञान ध्यान योग समाधि वैराग्य पूजासत्संग इनसबकर फल रामनाममें स्नेहहोना७४ ॥

ध्यानप्रथमयुगमखविधिदूजे द्वापरपरितोषनप्रभुपूजे ७५

टी० । अबजो कहाकी चारिउ युगमें नामजपि जीव विशोक भयेहैंसो जवनिरीतिसे चारिउ युगमें जपतेहैं सो कहतेहैं कि प्रथमयुगजो है सत युग तिसमें दश हजारवर्ष ध्यान पूर्वक नाम जपि जीव विशोक होते हैं वो दूजो युगजोहै त्रेतातिसमें हजारवर्ष यज्ञपूर्वक नामजपि जीवविशोक होतहैं वो द्वापर युगमें सौवर्ष पूजा प्रभुका परितोषणहै तिस पूर्वकनाम जपिजीव विशोक होतहैं ७५ ॥

कलिकेवलमलमूलमलीना पापपयोनिधिजनमनमीना ७६

टी० । जब महाघोर कलिकाल आयो सो कैसोहै कि केवल मल जो पाप तिसका मूलनामजरि पुनः कैसो महामलीन तिस कलिकालमेंपाप रूप पयोनिधि नाम समुद्र तामें जनजोहैं सर्वप्राणी तिनका मनमीनहोइ रहाहै तहां नतौ ध्यान होइसकै न यज्ञ न पूजा ७६ ॥

नामकामतरुकालकराला सुमिरतशमनसकलजगजाला ७७

टी०। तहां ऐसे करालकालमें नामजो कामतरु तिसके सुमिरतमात्र सकल जगजाल शमनहोइ जातेहैं ७७ ॥

रामनामकलिअभिमतदाता हितपरलोकलोकपितुमाता ७८

टी०। कलिमेंरामनाम अभिमतनाम वांछितफलदाताहै वो यहलोक में माता पिताकीबरोबरि पालन करतहै वोपरलोकमेंहितकारीहै ७८ ॥

नहिं कलि कर्म न भक्ति विवेकू रामनाम अवलंबन एकू ७९

टी० वेदजोतीनिकांडमयहै कर्मउपासना ज्ञान सोकलिमें नतौ यथार्थ कर्म होइसके न यथार्थ भक्ति न बिवेक नामज्ञान तिसमें केवलरामनाम का अवलंबहै दूसर एकौ अवलंब नहीं कल्याण करिबेको कवल श्रीराम नामसे कल्याणहै ७९ ॥

कालनेमि कलिकपटनिधानू नामसुमतिसमरथहनुमानू ८०

टी०। यह जो कलिकाल कपटको स्थान सो कालनेमिनामे राक्षस है तिसके नाश करिबेको रामनाम समर्थ हनुमानहैं बड़ोसुमतिमान ८० ॥

राम नाम नरकेसरी कनक कशिपु कलि काल ॥
जापकजनप्रह्लादजिमिपालहिंदलिसुरशाल ८१

टी०। पुनःश्रीरामनामकैसोहैंनृसिंहरूपहैं वो रामनामकेजापकजन जे हैं ते प्रह्लादहैं तिनके दुःखदेबेको यहकलिकालहिरण्यकशिपुनामे दैत्य है सो जैसे नृसिंहजी सुरशालनाम देवतनको शालदेनेवालाहै जो हिरण्य कशिपु तिसको दलिनाम नाशकरि प्रह्लादकोपाले तैसे रामनाम नृसिंह कलिकालरूप हिरण्यकशिपुको दलिकरि जापकजनरूप प्रह्लादकी रक्षा वो पालन करतेहैं ८१ ॥

भाव कुभाव अनखआलसहूं नाम जपतमंगलदिशिदशहूँ ८२

टी०। ऐसेरामनामकोभावसेजपैवाकुभावसे वा अनखाइकहीरिसिआइके वा अलसाइनाम सबसे हारिमानिकै तौ तेहिकोदशोदिशामेंमंगलहै८२॥

सुमिरि सो नामरामगुणगाथा करौंनाइ रघुनाथहिं माथा ८३

इतिप्रकर्ण १० ॥

टी० । अब श्रीगोस्वामीजी महाराज कहतेहैं कि जो ऐसोरामनामहै तिसको सुमिरिकै वो श्रीरघुनाथजूको माथनवाइकै श्रीरामजी के गुणन की गाथाकरों ८३ ॥

यहनवदोहा नाम बंदना स्थूल प्रकरण इसके आवांतर सूक्ष्म सप्त प्रकरणहै (तत्प्रमाण) नामबन्दना सातविहार प्रथमस्वरूप अंग अरुफल कहि दूजे युग अक्षर निस्तार तीजेनामीनाम सरिसकहि चौथेभक्तन को आधार पांचव अगुण सगुण ते बड़कहि छठयें फल उद्धार सतयें चारिउ युगनामहिको जानकि दासनिहार १ ॥ इतिश्रीरामचरित्रमानसपरिचारिकायांताभिप्रायनामबन्दनानामप्रथमोंकैंकर्यः १० ॥

मोरि सुधारिहिं सोसबभांती जासु कृपानहिं कृपाअघाती १

टी० । अब इसप्रकरण में दुइदोहाताई श्रीगोस्वामी जी अपनी कार्पण्यता वो स्वामी श्रीरामचन्द्रके गुण वरणन करतहैं कि जेहि रघुनाथ जीको माथनवाइ रामगुणगाथाकरतहौं सो रघुनाथजी हमारी सबप्रकार ते सुधारहिंगे काहेते कि जासुकृपानाम जेहि श्रीरघुनाथजी की कृपानहीं कृपाअघाती नाम जिसके ऊपर कृपाहोती है तिसकेऊपर कृपासे परिपूर्ण नहींहोती बारम्बार कृपाहोते रहति है ऐसा नहीं कि एकबार कृपाकरै फेरिकोई चूक परै तौ न कृपाकरैं श्रीरघुनाथजीको तौ असस्वभावहैकि जेहिपर कोईरीतिसे जो कृपाकरैंतौ उससेबारबारचूकपरैतौ अवरकृपाकरतेजाहिं असजानिकै कि हमने कृपा नहीं करी जाते चूक गयोहै । देखियेतौ सेवककी चूक अपने माथे धरिलेते हैं । ताते हमारी सब प्रकारते सुधारहिंगे १ ॥

रामसु स्वामि कुसेवकमोसे निजदिशि देखिदयानिधिपोसे २

टी० । श्रीगोस्वामीजी महाराज कहतेहैं । कि श्री रामजी ऐसे सुष्ठ स्वामीहैं कि हमारे सरीखे कुसेवकनको अपनी दिशि देखिकै पोषे नाम पोषण कीन्हहै । काहेते कि दयानिधिहैं २ ॥

लोकहु वेद सुसाहिबरीती बिनय सुनत पहिचानत प्रीती ३

टी०।जो कोई कहैकी कुसेवक का पोषण कैसेबने तापर कहतेहैं कि यह बात लोकहु में पाईजातिहै वो वेदहूमें कि सुसाहिब जोहैं तिनकर यह रीतिहै की विनय सुनतै प्रीतिको पहिचान लेतेहैं ३ ॥

गनी गरीब ग्राम नर नागर पण्डित मूढ़ मलीन उजागर ४

टी०।जोकहौ कि किसकी विनय सुनिप्रीति पहिचानतेहैं सोसुनौ गनी कही गनती वाले धनी वो गरीब वो ग्राम कही गँवार वो नरनागर कही चतुरनर वोपण्डित वोमूर्ख वोमलीन कही कुल मलीनक्रिया मलीन वो उजागर कही कुलीन क्रियामान ४ ॥

शुकबिकुकबिनिजमतिअनुहारी नृपहिसराहतसबनरनारी ५

टी० । वोशुकबि वो कुकबि एते दश अपनी अपनी मतिकी अनुहारि सबनर नारि अपने राजाको सराहना करते हैं ५ ॥

साधु सुजान सुसील नृपाला ईस अंसभव परमकृपाला ६

टी० । सो नृपाल नामराजा जो ईश्वर के अंश ते भवनाम उत्पन्न है सो कैसोहैं कि साधुनाम समीचीन परोपकारीहै वो बड़ो सुजानहै वो सुसीलहैवो परम कृपालुहै ६ ॥

सुनिसनमानहिसबहिसुबानी भनितभक्तिमतिगतिपहिचानी ७

टी० । एजोचारिगुणराजामेंहैंसोयहीगुणनसेसबकीविनयसुनिकै अपीन सुष्टवाणी से सबका सन्मान करतहैं जो पूर्व दश कहिआयेहैं सोउनहीं में किसू की भनितद्वार किसूकी भक्तिद्वार किसूको मतिद्वार किसूकी गति द्वार ह्वैकरिअपनेमें प्रोति पहिचान सन्मानत हैं किसकी भनित किसकी भक्ति किसकीमति किसकीगतितहांसुनौ सुकवि पंडित की भनितवोगनी नागरकीभक्तिवो उजागर की मति वो गरीब व गवाँर मूर्खमलीन कुकवि इनपांचकीगति तहां सुकवि वो पंडित अच्छी कविताई (श्लोक) बनाइ राजाकी सेवा करतेहैं यह भनितहै वो गनी जो धनवान् सो धनदेइकरि वो नरनागर जो चतुर सो चतुराईसे राजाको देशकोशको कार्यकरि सेवा करतहै सो भक्ति वो उजागर जो कुलवान् क्रियावान् सो राजाको उत्तममति सिखाइकरि सेवा करतहै यह मति वो गरीबादि पांचजोहैं सो अपनी गतिजो दशासो निवेदनकरि राजाकी सेवाकरतेहैं यह गतिहै तहां दश जोहैं सो चारि क्रियासे राजाकी सेवाकरतेहैं वो राजामें जो चारिगुणहैं सो एक एक गुणसे एक एक क्रियाको पालतहै कौनगुणसे कौन क्रियाको पालतहै तहां सुनौ सुजान गुणसे भनित क्रियाको वो साधुगुणसे भक्ति क्रिया वो शीलगुणसे मतिक्रिया वो कृपालु गुणसे गति क्रिया ७ ॥

यहप्राकृत महिपाल सुभाऊ   जानशिरोमणि कोशलराउ ८

टी० । देखिये तौ इतना स्वभाव प्राकृत महिपालनमेंहै तौजानशिरोमणि कोशल राउ में नजाने कितना स्वभाव होइगो जो प्राकृत राजा प्राकृतीके चारि गुणसे गरीबादिका पालन पोषणकरतेहैं कछुजाननहींहै जान जिसको अपनेस्वरूपका ज्ञान होइ सो बिनाकहे सबकेमनकीजान लेतहैं तौ कौशलराऊ महाराजतौ जानको कहै जानजोहैं बूह्मा शिवादि तिनहूं के शिरोमणिहैं तो हमसरीखे कुसेवकनका क्योंन पालन पोषण करैंगे जरूर करैंगे काहेते कि श्रीरामचन्द्र महाराजके राज्यमें गनीकोहै अष्टलोकपाल वो नागर सरस्वती गणेश वोपण्डित वृहस्पति वो उजागर बूह्मा अपने दशौपुत्रनके सहित वो सुक शुकविशुक व्यास वाल्मीक वो गरीबादि पांच गोस्वामी जी कहतेहैं कि हम सरीखे जिन को कछु आवतनहीं केवल श्रीरामचन्द्र महाराजैकीगतिहै सो श्रीरामचन्द्रहमारा सबप्रकारते पालन पोषणकरैंगे ८ ॥

रीझत राम सनेह निसोते   कोजग मंद मलिन मति मोते ९

टी० । अबजो कोई कहै कि श्रीरामचन्द्र तौ निसोत स्नेहसे रीझतेहैं तब पालनपोषण करतेहैं तुमतौ मतिमन्द वो मलीनहौ निर्मल तैलवत् धारतौ सनेहहै नहीं कैसेपोषण करैंगे तापरकहतेहैं कि यद्यपि श्रीरामचन्द्र निसोतकही निर्मल तैलवत् धारस्नेहसे रीझतेहैं वो यद्यपि हमरे बरोबरि मलिन मतिमंदकोईनहीं ९ ॥

शठ सेवक की प्रीतिरुचि रखिहहिं रामकृपालु ॥
उपलकियेजलजानजेहि सचिवसुमतिकपिभालु १०

टी० । तदपि शठ सेवक जोमैंहूं तेहिकी प्रीतिवो रुचि श्री रामचन्द्र राखहिंगे काहेते कि कृपालु हैं ऊपर प्राकृत राजा को दृष्टांत देकरि श्री रामचन्द्र को जान शिरोमणित्व गुण कहे अब कृपालुत्व गुण कहतेहैं जो कहौ कृपालुता कहां देखे तौ सुनौ जे श्री रामचन्द्र उपल जो पत्थर जड़तिसको जलजान नाम नौकाकरैवो वानरभालुको सुमतिमान सचिवनाम मन्त्रीकिये ऐसे कृपालु हैं १० ॥

हौहुंकहावतसबकहत रामसहतउपहास ॥
साहेब सीतानाथ से सेवकतुलसीदास११

टी० । अब अपनेमें श्रीरामचन्द्रकी कृपालुता दिखावते हैं कि देखिये तो जो हम से कोई पूछत है कि तुम को हौ तौ मैं कहत हौं कि हम श्रीरामजीके दासहैं तथा औरभी सबकोउ कहतहैसो येतौबड़ौ उपहास श्रीरामजीसहिलेतेहैं कौन उपहासकी साहित सीतानाथकी जाकी सेवकाई के अधिकारी ब्रह्मा विष्णु शिव सनकादि नारद शुकदेव सूर्य्यइन्द्र चंद्र बृहस्पति एते सब तेहिसीतानाथ को सेवक तुलसीदास इह बड़ो उपहासहै सो रामजी सहते हैं काहेते कृपालु हैं ११ ॥

अतिबड़िमोरिढिठाईखोरी सुनिअघनरकहुंनाकसिकोरी १२

टी० । येतोबड़ी मेरीढिठाई की खोरि जो दोष सो सुनिकरि अघ जो पाप वो नरक सोहमसे नाक सिकोरत भये अघ यह नाकसिकोर्यो कि यह मेरो संबंधी पापी कैसो रामदास कहावनेलगो है देखिलेहिंगे काहे ते कि ऐसे पापीको क्या श्रीरामजी अंगीकार करते हैं नहीं करते ताते देखिलेहिंगे वो नरक यह नाक सिकोर्यो की यहतौ मेरो अधिकारी है रामदास कहावने लग्यो देखिलेहिंगे १२ ॥

समुझिसहमिमोहिअपडरअपने सोसुधिरामकीननहिंसपने १३

टी० । श्रीगोस्वामीजीकहतेहैं कि अघवोनरककानाकसिकोरनासमुझिकै हम अपने अपडरसे सहमिनाम डरगये कि जो श्रीरामजीहमारीढिठाई की खोरी को ख्याल करैं तौ हम क्या करैंगे परंतु सो सुधि नाम जो हमारीढिठाईकीखोरी सो श्रीरामजी सपनेमें सुधि नहींकीन सपनेनाम भूलिहु कै कि यह बड़ो ढीठहै हमारी सेवकाई के योग्यतौ है नहीं वो सेवक कहावने लगा ऐसो सुधि नहींकीन हमको अंगीकारै कीन्ह १३ ॥

सुनिअवलोकिसुचितचखुचाही भक्तिमोरिमतिस्वामिसराही १४

टी० । अबजो कोईकहै कि भलातुमकैसेजान्यो कि हमारी ढिठाईकी सुधि श्रीरामजी नहीं करैं हमको अंगीकारै किये तापर कहतेहैं किसुनि नाम संतगुरु महात्मन से सुना तथा अवलोकि नाम वेद शास्त्र पुराण स्मृति में अवलोका फेरि सुचित चखुचाही नाम सुन्दर चित्तरूप चखु नाम नेत्रसे चाहीनाम देखे नाम बिचारे तबकादेखिपर्यौकीमोरी मति माफिकजो मोरेमें भक्तिहै सो स्वामी जोश्रीरामचन्द्र तिनकी सराहीभई है वोह कौन भक्तिहै जो तुममें है सो सुनौ मह्रू कहावत यह जो भक्ति

है सो श्रीरामचन्द्रकी सराहीहै रामचन्द्रकहतेहैं कि जीव एकबार कैसहू कहै कि हम तुम्हारेहैं तौ हम उसको सब प्रकारते रक्षाकरते हैं यहबात को हम संत गुरुसे सुने तथा वेदादिमें अवलोके वो अपने सुन्दरचित्त से विचारि निश्चजानै जो कहौ स्वामीकहां सराहीहै तौ सुनौ श्री मद्रामायणवाल्मीकीयमें कहाहै ॥ श्लोक ॥ सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिचजायते॥ अभयंसर्वभूतभ्योददाम्येतद्व्रतंमम १ ॥ ऐसेप्रसंग अनेक ठौर हैं १४ ॥

कहत नसाइ होय हियनीकी रीझतरामजानिजनजीकी १५

टी० । गोस्वामीजी कहतेहैंकि कहत करतके नसाइउजाइ परिनी की जो हिये में होइ नीकी क्या कि हम श्रीरामजीके हैं यह नीकीजो हिय में होइ तौ श्रीरामजो हियेकीनीकी जो है उसीपर रीझतेहैं काहेकि जन के जीकी जानते हैं १५ ॥

रहति न प्रभु चितचूककियेकी करतसुरतिसौवारहियेकी १६

टी० । अबजो कोई कहै कि भला एकबारके कहे रामरीझजाते हैं तौ कोई चूकपरे परखीझउ जाते होइंगे तापर कहतेहैं कि रहति न प्रभु चित चूक किये कि जो एकबार प्रभुका भया सो वहि से करतकरत जो चूकिउजाइ तो प्रभु अपने चितमें नहीं लावतेहैं वोह जो एकबार कहा कि हम आपके हैं सो श्रीरामजी सो सौवार उसीको देखते हैं वोसुरति करते रहतेहैं उसकी चूककी ओर नहीं देखते हैं इसका उदाहरण आगे तीनि चौपाई एक दोहामें कहते हैं सो सुनौ १६ ॥

जेहिअघबधेउब्याधजिमिबाली फिरिसुकंठसोइकीनकुचाली १७

टी० । देखियेतौ जौनेपापसे बालीको ब्याधा इवमारे कौने पाप बंध बधूरति कहि कियौ वचन निरुत्तरबालि सो वहीपापको सुग्रीव कियेतबै श्रीरामइतनउनकहे कि तुमका कियो काहेते सुग्रीव शरणभये हैं १७ ॥

सोइकरतूतिविभीषणकेरी सपनेहुसोनरामहियहेरी १८

टी० पुनः वही करतूति विभीषण किये कि अगम्यागमन ज्येष्ठ भ्राता की पत्नी माताके तुल्यहै सो सुग्रीव विभीषण दोऊ गमन किये सो इस अपराधको श्रीरामजी सपने नाम भूलिहू के अपने हृदयमें नहीं देखे नाम नहीं लाये १८ ॥

तेहि भरतहिभेटतसनमाने राजसभारघुराजबखाने १६

टी० सुग्रीव विभीषणके पाप के वोरीतौ को देखत है और उलटाइ-तना सत्कार करे कि जब भरतजीसे रघुनाथजी मिलनेलगे तब भरत वसिष्ठ ऐसे सुचालीके सामनेते सुग्रीव विभीषणको सन्मान किये कि ये हमारे बड़े उतम सेवकहैं वो राज सभामें श्रीरघुनाथजी सुग्रीव विभीषणको वखान किये १६ ॥

प्रभुतरुतरकपिडारपर तेकियेआपुसमान ॥
तुलसीकहूं न रामसे साहिबशीलनिधान २०

टी० पुनः देखिये प्रभु जिसतरु के नीचे बैठे तहां वानर ऊपर डार पर बैठे इतनीबड़ी चूक कि स्वामी नीचे वो सेवक ऊपर बैठे सो तिन वानरनको अपने समानकिये कब जब श्रीअयोध्याजीमें आयेतब अपना स्वरूपसबकोदेतेभये (प्रमाण) हनुमदादि सबवानरबीरा । धरे मनोहर मनुज शरीरा ॥ तौ मनोहर मन जो राघव हैं सो श्रीराघवजी के समान सब होतेभये गो स्वामीजी कहतेहैं कि श्रीरामचन्द्रजीके समानसाहिब कहूं न शीलके निधान काहेकी वानरन की चूकके बोर दृष्टीनकरकेकेवल उनके हिये की सुरति करतेरहे जो सब छोड़िकै शरणभये हैं वो श्रीराम चन्द्र कहेभी हैं कि जो एक बार हमारी शरण आया सो उससे चूकभी जाइ तौ हम त्याग नहीं करते (प्रमाण) वाल्मीकीय रामायणे ॥ श्लोक ॥ मित्र भावे न संप्राप्य नत्य जेयं कथंचन ॥ दोषोयद्यपितस्य स्यात् सतामेत दगरहितं १ । २० ॥

रामनिकाईरावरी है सबहीको नीक
जो यह सांचीहैसदा तौनीकोतुलसीक २१

टी० अबश्री गो स्वामीजी कहते हैं कि जो राम शवरी निकाई सब को नीक है वो सदा सांची है तौ तुलसीको नीकैनीक है २१ ॥

यहिविधिनिजगुणदोषकहि सबहिबहुरि शिरनाइ ॥
बरणौरघुबरविसदयश सुनिकलिकलुषनसाइ २२

इतिएकादशप्रकरणम् ११ ॥

टी० यहि विधिसे अपना गुण वो दोषकहिकरि गुण कौन दोष कौन सुनौ गुन हम श्रीराम जीके हैं वो दोष मलिनमति मंद कुसेवकादि जो कहै सो कहिकरि फेरि वाणी विनायकादि वो रामनामअंतपर्य्यंत सबको शिरनवाइकरि श्रीरामचन्द्र को विशद यश वरणौ जो सुनिकरि कलि के कलुषजो पाप सो नसाइ यह बंदनाकी दूसरी आवृत्ति है इतिअथवा॥ यहिविधि निजगुण दोषकहि निज शब्दको द्वै जगह अर्थहै सो कैसे की यहि विधि नाम जैसे ऊपरकहि आये सो निज नाम हमरे स्वामीजो श्री रामतिनकर गुण वो निज नाम अपना दोष कहि अपरपूर्ववत् २२ ॥

इतिश्रीरामचरित्रमानसप्रचारिकायां ग्रंथकार निजकार्पण्यता वो स्वामी श्रीरामचन्द्र गुणवर्णनोनामएकादशकैंकर्यः ११ ॥

यागबलिकजो कथा सुहाई भरद्वाजमुनिवरहि सुनाई १

टी० अबश्री गोस्वामीजी श्रीमन्मानस रामायण की परंपराकहते हैं कि जौनिकथा शोभायमान श्रीयाज्ञवल्क्य जी भरद्वाज मुनि जो श्रेष्ठ तिनको सुनाई है १ ॥

कहिहौंसोइसंबादबखानी सुनहुसकलसज्जनसुखमानी २

टी० सोइ संबाद हम बखानिकै कहते हैं तिसकोसकल सज्जनसुख निकै सुनहु २ ॥

शंभुकीनयह चरितसुहावा बहुरिकृपाकरिउमहिसुनावा ३

टी० जो कहौ कि यहरामचरित्र मानसकहां से भया है तौ सुनौ यह मानस शोभायमान पूर्वहीमें शंभु जो महादेव सो कोन बहुरि कृपा करि कोईकाल में उमाजो पार्वती तिनको सुनावाहै ३ ॥

सोशिवकाकभुशुण्डिहिदीन्हा रामभक्ति अधिकारीचीन्हा ४

टी० फेरि सोई शिवजी कोई काल में लोमसमुनि के द्वार अपने आशीर्वाद की परीक्षा लेइ करिकै काकभुशुण्डिजी को देते भये श्रीराम भक्तिके अधिकारीजानिकै ४ ॥

तेहिसनयागबलिकमुनिपावा तिनमुनिभरद्वाजप्रतिगावा ५

टी० । तेहिसननाम तेही काकभुशुण्डिसे कोई कालमें श्रीयाज्ञवल्क्य मुनि पावाहै ते याज्ञवल्क्य जी भरद्वाज मुनि की प्रति कहते भये ५ ॥

ते श्रोता बकता समशीला समदरशी जानहिं हरि लीला ६

टी०। ते श्रोता बक्ता याज्ञवल्क्य वो भरद्वाज समशील हैं नामबरोबरिहै शील दोनौ मुनिन को फेरि कैसेहैं श्रोतावक्ता समदर्शीहैं वो हरि तरहसे जानतेहैं ६॥

जानहिं तीनिकालनिजज्ञाना करतलगतआमलकसमाना ७

टी०। पुनः दोनौ श्रोता बक्ता कैसेहैं की अपनेज्ञानते तीनिउँकाल को जानतेहैं भूत भविष्य वर्तमान कैसदेखतेहैं जैसे हाथमें आँवरा का फल लेइ तौ सब देखिपरतहै तैसे ७॥

औरोजे हरिभक्त सुजाना कहहिंसुनहिसमुझहिंबिधिनाना ८

टी०। जब श्रीयाज्ञवल्क्यजी भरद्वाज प्रति श्रीरामचरित्र मानसकहा तव लोकमें ख्यातभया काहेते की जब प्रयाग में याज्ञवल्क्यजी भरद्वाज मुनिसेकहा तव वहांपर अनेकमुनिरहैं तिनसबसुना उन्ह औरन्हसेकहा इसीरीतिसे जेसुजानहरिभक्तहैं तेआपसमेंकहतेसुनतेहैं अनेकविधिसे ८॥

मैंपुनिनिज गुरुसनसुनी कथासोशूकरखेत
समुझीनहितसवालपनतबअतिरहेउँअचेत ९

टी०। अब जो कोईपूछै की भला तुमकहांपायोहै तापरकहते हैं की पुनः वहीकथा जो शंभुकीन्ह फेरि काकभशुंडिहि दीन तिन्हसे याज्ञवल्क्यपायेते भरद्वाजप्रतिगाये सो कथा कहूं से हमारेगुरूजी को प्राप्तिभई सो हम अपनेगुरूजी से सुना कहां सुना सूकरखेत नाम वाराहक्षेत्र जो श्रीअयोध्याजीसे पश्चिमभागमें श्रीसरयू घाघराकोसंगमहै तहांपर अथवा सूकरनाम जो सुष्टुवहतुकोकरै सोकोहै संतसंग सो सत्संग क्षेत्रमें अपने गुरूसेसुनी परंतु समुझो नहीं तस जस श्रीरामचरित्र मानसको स्वरूप है काहेते की तव वाल्यअवस्था अति अचेतरहेउँ ९॥

श्रोता बकता ज्ञान निधि कथा राम कीगूढ़
१०

टी०। श्रीरामकथा जो अतिगूढ़है नाम छिपाइमान तिसके समुझिवे को श्रोता वो वक्ता जब दोनौज्ञानके निधिनाम समुद्रहों हित व यथार्थ समुझिपरतहै सो हमारेगुरूजी तौ ज्ञानकेसमुद्रहैं परंतु मैं जो जड़जीव कलिमलसेग्रसित वो विशेषमूढ़ सो कैसे समुझौं १०॥

तदपिकही गुरुबारहिंबारा समुझिपरीकछुमतिअनुसारा ११

टी० । यद्यपि मैं जड़जीव कलिमलसेग्रसित विशेष मूढ़ रह्यौं तदपि हमारेगुरूजी जो ज्ञानकेसागर वो परमदयालु सो वारंवारकहे तव अपनी मतिकेअनुसार कछुसमुझिपरी यामें यह अभिप्रायहै की शिष्य जोकैसउ मूढ़होइ वो गुरू जो यथार्थ तत्त्ववेत्ताहोंहिं वो दयालु तौ वारवार उपदेश करि शिष्यको वोधकरिदेहिं ११ ॥

भाषा बंध कर बमैं सोई मोरे मन प्रबोध जेहि होई १२

टी० । जो हम अपनेगुरूसेसुना सो उसकोभाषा बंधकरैंगे जातेहमारे मनकोप्रवोधहोइ संका भला गुरूके कहेसे प्रवोध न भया जाते कहतेहैं की हम भाषाबंधकरैंगे तव हमको प्रवोधहोइ तौ इनकाभाषा करनागुरू के कहनेसे श्रेष्ठभया सो यामें दूषनपरतहै सो क्या हेतु समाधान सुनौ यामें दूषण नही काहेते की श्रीगोसाइँजी अस नही कहा की गुरूजी के कहनेसे नही समुझिपरेउ हम भाषाकरैं तव समुझिपरै येतौकहतेहैं की जो हम गुरूजी से सुना वारंवार सो समुझिपरा उसको हम भाषा करैं जाते गुरूकी कही बरतु भूलि न जाइ वो और कोउ सुनैं समुझैंतब हमारे मनमें प्रकर्ष करिकै बोधहोइ कि जो हमारे गुरूजीकहा सो हम को फलितभया हमारा कल्याण भया वो और कभी कल्याण होगा तब हमारे गुरूजीको परमानन्द होइगो काहे कि गुरूकी कही जो शिष्य धारणकरैतौ गुरूको विशेष आनन्द होतहै याहीहेतुकहे १२ ॥

जस कछु बुधिबिवेक बलमेरे तसकहिहौं हियहरिकेप्रेरे १३

इतिद्वादशप्रकरणम् १२॥

टी० । अब जो कोई कहै कि भला जो मानस महादेवजी कीन वो काकभुशुण्डिहि दीन्ह तिन्हते याज्ञवल्क्यमुनिपायेतेभरद्वाज प्रतिगायवो वहीतुम अपनेगुरूसेसुन्यो सो मानस सबकहौगे तापरकहतेहैं किसमस्त मानस कहनेको किसूकी समर्थनहीं जसकछु हमरे बुद्धि वो विवेक का बलहै तस हियेके हरिकीप्रेरणासे कहूंगोहियेकेहरि अन्तर्यामी (अथवा) क्षीरसाई जिनको पूर्वहृदयमें धाम करायाहै सो अब श्रीरामयश गावनेमें सहाइकरैंगे (अथवा) हरिनामहनुमान्‌जी गोस्वामीजीके इष्टहैं सोइष्टको

सबकोई हृदयमें राखतहै सो उनहीकोकहा (अथवा) श्री राम हरि को कहा काहेते कि पूर्वहीं कहि आयेहैं कि मोरि सुधारहिं सो सब भांती तिनहीको कहा १३ ॥

इतिश्रीरामचरितमानसपरिचारिकायांश्रीमन्मानस रामायणपरम्परावर्णनंनामद्वादशकैंकर्थः १२

निज संदेह मोह भ्रमहरनी करौं कथा भवसरितातरनी १

टी० । अबश्री गोस्वामीजी मानस महात्म कहतेहैं पचासतीनि तिरपन विशेषण कहिकरि तिसमेंपच्चीस विशेषण स्त्रीलिंग करिबो अट्ठाइस विशेषण पुल्लिंग करि कहतेहैं कियह जोमैं कथाकरतहौं सोकैसीहै कि निजनाम हमारे संदेह वो मोह वो भ्रमकी हरने वाली है १ (पुनः) भव सरिताकेतरणीनाम नौकारूपहै २ । १

बुधबिश्रामसकलजनरंजनि रामकथा कलिकलुखबिभंजनि २

टी० । (पुनः) बुधजोहैं पण्डित सदसद्विवेकी तिनको विश्राम स्थलीहै ३ (पुनः) सर्वजन जो प्राणी तिनको रंजनिनाम आनन्द देने वाली है ४ (पुनः) श्रीराम कथा कैसी है कि कलि के कलुष जो पाप तिन को विशेष भंजनि है ५ । २ ॥

रामकथा कलि पन्नगभरनी पुनिबिबेक पावक कहँअरनी ३

टी० । (पुनः) रामकथाकैसीहै कलिरूप पन्नग नाम सर्पताको भरणी नाम मयूरी है (प्रमाणं) भरणीमयूर पत्नीस्यात् (इतिमेदनीकोसे) ६ पुनि विवेकरूपपावकजोअग्नि तिसकोउत्पत्तिकरनेको अरनीनामलकड़ीहै ७ । ३

रामकथा कलिका मद गाई सुजन सजीवनि मूरि सोहाई ४

टी० । (पुनः) रामकथा कैसीहै कलिमें कामधेनु गऊहै ८ (पुनः) सुजनके सजीवनिकी सुहावनीजरिहै ९ । ४ ॥

सोइवसुधातलसुधातरंगिनि भवभंजनि भ्रमभेक भुअंगिनि ५

टी० । (पुनः) सोई रामकथा व सुधातल नाम पृथ्वी तामेंसुधा नाम अमृतकी तरंगिनीनाम नदीरूपहै १० (पुनः भवभय भंजनिहै ११ (पुनः) भ्रमरूप भेक जो मिढुका ताकोभुअंगिनि नामसर्पिणीहै १२ । ५

साधुविबुधकुलहितगिरिनंदिनि६

भूपतिविचारके कुंभजलोभ उदधिअपारके १८

टी० ।(पुनः)विचाररूप राजाके सचिवनाम मंत्री वो सुंदर भटनाम सिपाही हैं १० पुनः लोभरूप अपार समुद्रके सोखिबेको कुंभजनाम अगस्ति रूप हैं ११ । १८ ॥

कामकोह कलिमलकरिगनके केहरिसावकजनमनबनके १९

टी० ।(पुनः)कामक्रोध वो कलिमलजो पाप सो करि नाम हाथीन के गणहैंतिनके नासकरिबेको सिंहबच्चारूप है सिंहतौ बनमें रहत है राम चरित्तसिंह जनजो प्रानी तिन्हके मन वनके रहनेवाले हैं १२ । १९ ॥

अतिथिपूज्य प्रीतम पुरारिके कामदघन दारिददवारि के २०

टी० ।(पुनः)पुरारि जो महादेव तिन्हको अतिथीकेबरोबरि प्रीतम वो पूज्यहैं १३ पुनः दारिद्ररूप दवारीके शांति करिबेको कामद घननाम मेघ रूप है १४ । २० ॥

मंत्रमहामणि बिषयब्यालके मेटतकठिन कुअंकभालके २१

टी० ।(पुनः)विषयरूप सर्पके विष उतारिबेको मंत्र तथा महामणि जो सर्पमेंरहतहै सोहैं १५ पुनः भालके कठिन कुअंक मेटनेवाले हैं१६।२१ ॥

हरनमोहत मदिनकरकरसे सेवक शालिपालजल धरसे २२

टी० । (पुनः) मोहरूप तमके हरनेको सूर्यके किरणके समान हैं १७ पुनः अपने सेवकरूप शालिजो धान तिन्हको पालिबे को जलधर नाम मेघरूप हैं १८ । २२ ॥

अभिमत दानि देवतरुबरसे सेवतसुलभसुखदहरिहरसे २३

टी० । (पुनः) बांछित फल देबेको कल्पतरु रूपहैं १९ पुनः सेवतसंतेकस सुलभ है जैसे हरिहर २० । २३ ॥

शुकविशरद नभमनउडुगनसे राम भक्तजनजीवनधनसे २४

टी० । (पुनः) सुष्ठु कविनका मन सरदनभनाम आकाशहै तहांके विमल उडगणहैं २१ पुनः श्रीराम भक्तन के तौ जीवन तथा धनरूप यईहैं २२ । २४ ॥

सकलसुकृतफलभूरिभोगसे जगहितनिरुपधिसाधुलोगसे २५

टी०। (पुनः) सर्व सुकृतनके फलको भूरिभोग रूपहै २३ पुनः जगत् के कैसे हितकारी हैं जैसेसाधुलोग निरुपाधि हितकारी हैं २४। २५ ॥

सेवक मन मानस मरालसे पावन गंग तरंग मालसे २६

टी०। (पुनः) श्रीरामजीके सेवकन के मन मानसके मराल नाम हंस रूप हैं पुनः पावन कैसे हैं जैसे गंगाजी की तरंग की माला नाम समूह तस हैं २६ ॥

कुपथ कुतर्क कुचालि कलि कपट दंभ पाषण्ड ॥
दहन राम गुणग्राम जिमि ईंधन अनल प्रचंड २७

टी०। (पुनः) रामगुणग्राम कैसे हैं कि कुपथ जो सत्मार्गसे भिन्न वो कुत्सित तर्कवोकुत्सितचाली वो कलिनाम कलह वो कपटनाम बनाई बात वो दंभनाम पुजाइबे हेतु सुवेष बनावना वो पाषंड नाम वेद से भिन्न प्रतिपाद्यकरै इतनेको कैसे जरावते हैं जैसे समूह इँधनजो लकड़ी तिसको प्रचंडअनल जलावत है अनलनाम अग्निका है २७ ॥

राम चरित राकेश कर सरिस सुखद सब काहु ॥
सज्जनकुमुद चकोरचित हित विशेष बड़ लाहु २८

इतित्रयोदशप्रकरणम् १३ ॥

टी०। (पुनः) श्रीरामचरित कैसेहैं जैसे चंद्रमाकी किरण सबको सुखदाई तसहैं वो सज्जनको चित्त जो है सो कुमुद वो चकोर है तेहि को विशेष हितकारीहैं वो उनहींको बड़ो लाभहै २८ ॥

इतिश्रीरामचरित मानसप्रचारिकायां श्रीमन्मानस माहात्म्यवर्णनो नामत्रयोदशकैंकर्य्यः १३ ॥

कीन्हप्रश्न जेहिभाँतिभवानी जेहिविधि शंकरकहाबखानी १

टी०। अबजो यह संशय है कि यह प्रसंग कहू मिलता नाहीं तिसके दूरि करनेवाला प्रकरणकहतेहैं कि जौनभांतिसे भवानी संशयकीन्हहै वो जौनी विधिसे शंकर बखानिके कहाहै १ ॥

सो सब हेतु कहौं मैं गाई कथा प्रबंध बिचित्र बनाई २

टी० । सो सबहेतु नाम कारणमैं कहौंगो गाईनाम विस्तारपूर्वक कैसे कहौंगो कि विचित्र कथाकोप्रबन्ध बनायकरि २ ॥

जेयह कथा सुनी नहिं होई जनि आश्चर्य करै सुनिसोई ३

टी० । अबश्रीगोस्वामीजी कहतेहैं कि जो कोऊ यहमानसकथा न सुने होइ सो सुनिकरि आश्चर्य न करै ३ ॥

कथाअलौकिकसुनहिंजेज्ञानी नहिंआश्चर्यकरहिंअसजानी ४

टी० । यहकहि अबअपने मनको निस्संदेहकरतेहैं कि यह अलौकिक कथाको सुनि जे ज्ञानीहैं ते नहीं आश्चर्य करैंगे ऐसा जानिकै यामें यह अभिप्रायहै कि अज्ञानी जेहैं ते तौ संदेहकरबैकरैंगे ताको तुमक्याकरोगे ज्ञानी नहींआश्चर्य मानेंगे ४ ॥

राम कथा कै मिति जगनाहीं असप्रतीतितिन्हकेमनमाहीं ५

टी० । ज्ञानीकासमुझिकै संदेह नहींकरते कि श्रीरामकथाकी जगत्में मितिनाम मर्यादनहीं कि इतनैहै ऐसीप्रतीति उनज्ञानिनके मनमेंहै ५ ॥

नाना भाँति राम अवतारा रामायण शत कोटि अपारा ६

टी० । काहेसे ऐसीप्रतीति उन्हके मनमेंहै कि श्रीरामजीके अवतार नाना भांतिकेहैं वो रामायण शतकोटि अपर अपारहै ६ ॥

कल्प भेद हरिचरित सुहाये नाना भाँति मुनीशन गाये ७

टी० । तिस अपार सुहाये हरि चरित्रमें मुनीशन नानाभांतिके कल्प भेदगायेहैं तौ जहां नानाभांतिके कल्पभेद हरिकथाहै तहां एकएककल्पकी एऊकथाहै ७ ॥

करियनसंशय असजियजानी सुनियकथा सादररतिमानी ८

टी० ऐसा अपनेजीमें जानिकै ज्ञानी अपने मनको तथा औरको कहतेहैं कि संशय न करो रामकथाकी मिति नहींहै सुन्दर प्रीतिपूर्वक कथा सुनिय आदर सहित ८ ॥

राम अनंत अनंत गुण अमिति कथा विस्तार
सुनि आश्चर्य न मानिहैं जिन्हके बिमल बिचार ९

टी० । अब श्रीगोस्वामीजीकहतेहैं कि श्रीरामअनन्त वो रामजीके गुण

अनन्त वो रामकथाको अमित विस्तारहै सो सुनिकै जिनको विमलवि-
चारहै ते आश्चर्य काहेको करैंगे न करैंगे ६ ॥

यहिविधि सबसंशयकरिदूरी शिरधरि गुरुपदपंकजधूरी १०

टी० । अब श्रीगोस्वामीजी कहतेहैं कि यहि विधिसे सब संशयकोदूरि करि वो गुरु पदपंकजकी धूरि जोहै तिसको माथेपर धरि जिसको पूर्व बंदनाकरि आयेहैं १० ॥

पुनिसबहीविनवौं करजोरी करतकथा जेहिलागनखोरी ११

टी० । अब श्रीगोस्वामीजी बन्दनाकी तीसरीआवृत्तिकरि बन्दनाको समाप्त करतेहैं कि पुनः सबको हाथजोरि विनती करतहौं जाते कथा करतेमें कोई खोरी न लगै ११ ॥

सादरशिवहिनाइअबमाथा वरणौं विशद रामगुणगाथा १२

[illegible]

[illegible] १४ ॥

टी० । आदर सहित शिवजूको माथ नवाइकै अब श्रीरामगुण गाथा जो अति विशदहै सो बरणौं नाम कहतहौं १२ ॥

इतिश्रीरामचरितमानसप्रचारिकायांसर्वसंशयनिवारणकोयहप्रसंग
कहूंमिलतनहींवर्णनोनामचतुर्दशकैंकर्यः १४ ॥

संवत सोरह सै इकतीशा करौंकथा हरिपद धरि शीशा १

टी० । अब आपु जो कथा करतेहैं तिसकी जन्म तिथि वो जन्म भूमि वो जन्म कुण्डली वो नाम करण वो नामार्थ वो फल सब कहते हैं कि सोरहसै इकतीस के संवत में कथा करतहौं श्रीराम जी के पदमें माथ धरिकै १ ॥

नौमी भौमवार मधुमासा अवधपुरी यह चरित प्रकाशा २

टी० । नौमी तिथि वो भौम नाम मंगल बार वो मधुनाम चैत्रमास शुक्लपक्ष अर्थात् श्रीरामनौमी यह तिथिपत्रकहि अब भूमि कहतेहैं कि श्रीअवधपुरी में यह रामचरित्र को प्रकाश कीन्ह २ ॥

जेहिदिनरामजन्मश्रुतिगावहिं तीरथसकलतहांचलिआवहिं ३

टी० । अब तिथि भूमि दोनोंकी महत्व कहतेहैं कि कैसीहै अवधपुरी

वो नौमी तिथि कि जेहिदिन रामजन्म अर्थात् श्रीरामनौमी के दिन वेद कहतेहैं कि सर्वतीर्थ श्रीअयोध्याजीको आवतेहैं ३ ॥

असुर नाग खग नर मुनि देवा आइकरहिं रघुनायकसेवा ४

टी० । असुर नाग खग नर मुनिदेवता येसकल आइकै श्रीरामजी की सेवा करतेहैं ४ ॥

जन्म महोत्सव रचहिंसुजाना करहिंरामकलकीरतिगाना ५

टी० । वो सुजान जोहैं सो श्रीरामजन्म के महान उत्सव को रचना करतेहैं वो रामजीको कलनाम सुन्दरि कीर्त्ति को गान करतेहैं ५ ॥

मज्जहिं सज्जन वृन्दबहु पावन सरयू नीर ॥
जपहिंराम धरिध्यानउर सुन्दरश्यामशरीर ६

टी० । वो सज्जननके बहुवृन्द श्रीसरयूजीकोनीर अति पावनतिसमें मज्जन नाम स्नान करतेहैं वो राम श्यामसुन्दर को हृदयमें ध्यान धरि षड़ाक्षर आदि मंत्रको जाप करतेहैं ६ ॥

दरश परस अरु मज्जनपाना हरै पाप कह वेद पुराना ७

कैसीसरयूहैं की दरशकरनेसे वो परसकरनेसे वो मज्जन वो पानकरनेसे सर्वपाप हरिलेतीहैं यह वेद पुराणकहतहैं ७ ॥

नदीपुनीतअमितमहिमाअति कहिनसकैंशारदाविमलमति ८

टी० । पुनः सरयू कैसीहैं कि पुनीतनाम अति पावनि नदीहैं वो अति अमितमहिमाहै जिन्हकी जेहिमहिमाको शारदा जो सरस्वती जिन्हकी विमलमति ते नहीं कहिसकैहैं ८ ॥

राम धामदा पुरी सुहावनि लोकसमस्तविदितजगपावनि ६

टी० । औ श्री अयोध्याजी कैसीहैं सो कहतेहैं कि सुहावनि पुरी जो अयोध्या सो श्रीरामधामकोदेतीहैं वो सर्वलोकनमें विदितहैं वो जगत्के पावनकरनहारी हैं शंका रामधाम तौ अयोध्यैजी हैं वह राम धाम कौन जिसको अयोध्याजीदेतीहैं समाधान सुनो अयोध्याजीके द्वै स्वरूपहैं एक नित्य एकलीला सो लीलास्वरूप प्रकृति मंडलमें रहतीहैं परंतु उनको प्रकृतीको बिकारनहींलागत और को प्रकृतिकोविकारहरिकै अपने नित्य स्वरूपको देतीहैं अथवा धामनाम स्वरूपको सो श्रीरामस्वरूपकोदेतीहैं ६॥

चारिखानि जगजीव अपारा अवधतजे तनुनहिंसंसारा १०

टी० । जो कोऊकहै कि उत्तमकर्मधर्म करनेहारे पुरुषन को रामधाम देतीहोहिंगी तापरकहतेहैं कि श्रीअयोध्याजीकैसीहैं कि चारिखानि जो अंडज पिंडज उष्मज उद्भिज तिसमें जगत्केबीचमेंअपारजीव परेहैं सो चारिखानिमेंको कोईजीव अवधमेंतनुतजै तौ फेरि चारिखानिरूपसंसार तिसमेंनपरै उससेछूटिजाइहै तनुतजनमात्र साधनहै १० ॥

सबविधिपुरी मनोहरजानी सकलसिद्धिप्रदमंगलखानी ११

टी० । सबविधि इति-सबविधिसे श्रीअयोध्यापुरीको मनोहर वो सर्व सिद्धिनकीदेनेवाली वो मंगलकी खानिजानिकै ११ ॥

विमलकथाकरकीन्हअरंभा सुनतनशाहिं काममद दंभा १२

टी० । विमलेति—विमलकथाको आरंभकीन जोकथासुनतसंते काम मददंभ नशाइजातेहैं १२ ॥

रामचरितमानसयहिनामा सुनत श्रवण पाइयविश्रामा १३

टी० । अब नामकरनकरतेहैं कि रामचरितमानस यह कथाको नामहै जेहिरामचरित मानसके श्रवणकेसुनेते तुरित विश्रामकोप्राप्तहोतहै १३ ॥

मनकरिविषयअनलबनजरई होइ सुखी जो यहिसरपरई १४

टी० । मनरूपहाथी विषयरूपवनमें अनेक कामनारूप अग्निसे जरि रह्योहै सो जो यह रामचरितमानसरमें परै तौ सुखीहोइजाइ १४ ॥

रामचरितमानस मुनिभावन बिरचेउ शंभु सुहावनपावन १५

टी० । अब नामको फलकहतेहैं कि रामचरितमानस जो है सो मुनि जो मननशील तिनके मनको भावनहै वो बड़ो सुहावन वो पावन जानि शम्भु बिरचे १५ ॥

त्रिविधदोषदुखदारिददावनकलिकुचालिकुलिकलुषनसावन १६

टी० । तीनि प्रकारको दोष कायिक वाचक मानसिक वो दुःख दैहिक दैविक भौतिक वो दारिद जो तृष्णा इन सबको दवन करनेवालो है वो कलिकी कुचालि जो हैं कुलिनाम सब वो कलुष जो पाप इनको नाश करनेवालोहै १६ ॥

रचिमहेशनिजमानसराखा पायसुसमयशिवासनभाखा १७

टी० । अब नामको अर्थ कहतेहैं कि यह चरित्रको रचिकै श्रीमहादेव जी आपने हृदयमानस में राखे फेरि कोई सुन्दर समय पाइ शिवाजोहैं पार्वती तिनसे भाषतेभये १७ ॥

ताते रामचरित मानस वर धरेउनामहियहेरिहरषिहर १८

टी० । ताते इनका नाम रामचरितमानस श्रेष्ठ महादेवजी हृदय से हेरि नाम ढूंढ़िकै हर्षपूर्वक धरतेभये १८ ॥

कहौंकथास्वइ सुषदसुहाई सादरसुनहुसुजन मनलाई १६

इतिपञ्चदशप्रकरणम् १५ ॥

टी० । अब श्रीगोस्वामी जी महाराज कहतेहैं कि जो कथा को महादेवजी रचि मानसमें राखा वो समयपाइ शिवासे भाषाहै सोई सुखदायी कथा मैं कहतहौंतिसकोहेसुजनजनो आदरसहित मनलगाइकैसुनौ १६॥

इतिश्रीरामचरितमानसपरिचारिकायांश्रीमन्मानसजन्मतिथिवज न्मभूमिवजन्मकुण्डलीवोनामकरणवनामार्थफलवर्णनं नामपञ्चदशकैंकर्यः १५ ॥

जसमानसज्यहिविधिभयो जगप्रचारज्यहिहेतु ॥
अबस्वइकहौं प्रसंगसब सुमिरि उमा वृषकेतु १

टी० । अब यहांसे मानस प्रकरण आठ दोहा ताईं पैंतिस के दोहा से तैंतालिस दोहाताईं जानौ (दोहार्थ) जसमानस नाम जैसा मानस का स्वरूपहै वो जेहिविधि भयो नाम जौने प्रकारसे मानस भयो है वो जौने हेतु जगत्में प्रचार भयोहै सो सब प्रसंग अब कहतहौं उमा जो पार्वती व वृषकेतु जो महादेव तिनको सुमिरिकै १ ॥

शंभुप्रसादसुमतिहियहुलसी रामचरितमानसकवितुलसी २

टी० । अब जो पूर्व कहा कि मति अतिनीचि सो बारबार के विनती करनेसे शम्भु प्रसन्नभये सो कहतेहैं कि शम्भुप्रसादनाम महादेवजी के प्रसन्नतासे सुन्दरि मति हृदयमें हुलसीनाम जो नीचीरही सो ऊंचीभई तब श्रीरामचरित मानसको कवि तुलसीभयो २ ॥

करउं मनोहर मतिअनुहारी सुजनसुचितसुनिलेहुसुधारी ३

टी०। अब श्रीगोस्वामीजी महाराज कहतेहैं कि अपनी मतिके अनुहारि मनोहर जो रामचरितमानस है तिसको करतहौं सो हे सुजनौं तुम्हारा जोसुन्दर चित्तहै तौनेतेसुनिकै सुधारिलेहु नाम जोहमसेकहत न बने सो आप सब सुजनहैं सुधारि लेहु यह गोसाईंजी महाराज की कार्पण्यता है सो जानौ कि जो आप बड़े हैं सोऔरनको बड़ा मानतेहैं अपनेको छोटा ३॥

सुमतिभूमि थल हृदय अगाधू वेद पुराण उदधि घनसाधू ४

टी०। अब जो दोहामें कहाकि मानस का जैसा स्वरूपहै वो जौनी विधिसे भयोहै वो जौने हेतुजगत्में प्रचारभयो सो सबकहैंगे तौन जौने प्रकारसेभयोहै सो कहतेहैं कि श्रीमहादेवजी जौने प्रकारसे रामचरित को अपने मानसमें भरेधरे सोतो महादेवजी जानैं परिहमरे इहां जैसे भयोहै सो कहतहौं तिसको हेसुजनौं चित्तलगाइकै सुनौ अबतुल्यसावयवरूपकालंकार करि कहतेहैं जैसे किंपुरुषखंड में मानसरहै तहांप्रथम भूमिहै तैसे इहां सुन्दरमति जो बुद्धि सो भूमिहै इहां सर्व धारणत्वगुण लेयकरि सुमति को वो भूमिकी तुल्यताभई उहां अगाधथलनाम कुंड है जिसमें जल थँभतहै इहां हृदय अगाधथल है अगाध कही गहिरा हृदय चारिहैं मन बुद्धि चित्त अहंकार सो इहां बुद्धिहृदय जानों और कोईइहां शंका न करो कि बुद्धितौ भूमिके रूपकमें कहि आयेहैं अबथलकेरूपकमें बुद्धिको फेरि कहना कैसेबनै तहांबुद्धि आठप्रकारकीहै (प्रमाणबाल्मीकीयरामायणे) समुद्र के किनारे हनुमान्जी कहाकि अंगद आठोबुद्धिकरिकै युक्तहैं तहां टीकाकार आठौबुद्धिका स्वरूपछिखा (श्लोक) शुश्रूषाश्रवणंचैवग्रहणंधारणंतथा॥ ऊहापोहार्थविज्ञानंतत्वज्ञानंचधीगुणाः १ सो भूमिके साथ ग्रहण बुद्धिवो थलके साथधारण बुद्धिजानो इति उहां समुद्रहैतहां से मेघजल लेइकरि बर्षतेहैं इहांवेद पुराण सो समुद्रहैं वो साधुजोहैंसो मेघहैं इहांसाधु को मेघ कहा तहां जैसे समुद्र में खारा वो मीठा जल मिश्रितभराहै और किसूकी समर्थनहीं कि खारा वो मीठाको विलगकरै सबकेहाथ खारा जललगतहै उहांपर एकमेघहीकी शक्तिहै कि खारा में से मीठाजल निकासिकै सर्बत्र बर्षतेहैं तैसेवेद पुराणमें कर्मकांड ज्ञानकांड उपासनाकांड मिलाहै सो और सबके हाथ कर्मज्ञान लगत है सो खाराजलहै वो उपासना मीठाजलहै सो एक साधुही उसमेंसे निकासि सकतेहैं यहसमताहै साधु वो मेघकी ४॥

बरषहिं राम सुयश बरबारी मधुर मनोहर मंगल कारी ५

टी०। उहां मेघ समुद्रसे बरनाम श्रेष्ठ जललैकरि वर्षते हैं सो जल कैसोहै मधुरनाममिष्ठहै वो मनोहरनाम स्वच्छ निर्मलहै वो मंगलकारी नामरोगहारकहै यहजब मेघके मुखसे जलछूट्योतब का गुणकहैहैं जल भूमिमे परैगा तब दूसरोगुण कहैंगे भूमिकेयोगसे तैसे इहांसाधु श्रीराम-चन्द्रजी को सुन्दर यशरूप बरवारि बर्षतेहैं सुन्दर बनाइकै कहना सोई बर्षनाहै सो रामसुयश बरवारि कैसोहै मधुरमनोहर मंगलकारीहै ५॥

लीलासगुणजोकहहिंबखानी सोइ स्वच्छता करैमल हानी ६

टी०। अब जो कोई कहै कि जलमें तौ मधुर मनोहर मंगलकारी प्रत्यक्षहै तैसे रामसुयश जलकेसाथ मधुरत्ववो मनोहरत्ववो मंगलकारित्व क्याहै सो कहतेहैं कि रामसुयशमें जो सगुण लीला बखानिकै कहते हैं स्वई स्वच्छतानाम निर्मलता सो मनोहरहै वो सर्वमल जो मैलतिनको हानिकरैहै जो कहौ कि रामसुयश वो सगुण लीला हमजाना चाहते हैं तौ सुनौं जैसे जलकेसाथ जलकी निर्मलता वो मधुरता वो निरोगता है तैसेरामसुयशके साथ सगुणलीला वो प्रेमभक्तिहै तहांसुयशकाहै कि जब कहाकि श्रीराम बड़ेउदारहैं शीलमान्हैं वाग्मीहै धैर्यमान्हैं दीनदयालु हैं गरीबनिवाज हैं पतितपावनहैं अधमोद्धारणहैं अशरण शरण हैं सुन्दर हैं ऐसे अनंत यशवेदकहतेहैं सो जलहै वो जबश्रीरामजी अवतार लेइकरि लीलाकरें तबसबको प्रत्यक्ष दिखाइदिये जबयहलीला बखानिकैकहने लगे तबयह जो मैलरहा कि कोजाने रामजीमेंएतेगुणहैं किनहींसोहानि भई मनस्वच्छ भयो रामजी के यश में प्रीतिभई यह रामयश जल की मनोहरताहै ६॥

प्रेम भक्ति जो बरणि न जाई सोइ मधुरता सो शीतलताई ७

टी०। अबमिष्टता वो शीतलता जो मंगलमय तिसकोकहतेहैं कि श्री रामयशमें जो प्रेमलक्षणा स्वाभाविकहै सोई मधुरता वो शीतलताहै वह प्रेमलक्षणाको बर्णन नहीं होसकताहै काहेते कि वह दशामात्रहै कहनेसे नहींआवैहै जैसे मिष्टवस्तुके खानेसेमुखबंद होइजातहै तैसे प्रेमके होने से बोलबंद है जातहै यह मधुर वो प्रेमकी तुल्यता भई वो प्रेमके साथ हैगुणदिये मधुरता वो शीतलता सो प्रेममें तौ अनन्त गुणहैं परन्तु ये द्व

गुण मुख्यहैं ताते दिये जो जलमें मंगलकारीनिरोगताकहे सो रामयश में प्रेम सोई मंगलकारी है काहे कि काम क्रोधादि जोरोगहैं तिनको हरिकै शीतलकरिदेइहैं सोई मंगलमय भयो यह रामसुयश जल जब बेदपुराण समुद्रसे लेइकरि साधुरूपमेघके मुखसेछूट्योहै तबके गुणकहेहैं जबबुद्धि रूप भूमि में परैगो तब फेरिबुद्धिके योगसे गुण कहैंगे जब कवितारूप नहीं चलैगी तब कविताके योगसे फेरि गुण कहैंगे वहीरामसुयशके गुण तीनि ठौर तीनियोगसे कहैंगे साधु मेघमें बुद्धि भूमि कविता नदीमें ७॥

सो जलसुकृत शालिहित होई राम भक्त जन जीवन सोई ८

टी० जलवो रामसुयश दोनोंका स्वरूपकहि अबफेरिरूपककहतेहैं कि जैसे उहां मेघजल बर्षतेहैं तब शालि जोधान तिसको हितकारी होतहै नाम वृद्धि होतहै तब सर्वजननको जीवन होत है तैसे इहां श्रीरामयश जोजलहै सो सुकृतरूप शालिको हितकारीहै नाम रामयशको पाइसुकृत बढ़तहै तब श्रीराम भक्तजनको जीवनहोतहै सोई सुकृतरूपशालिहैं ८॥

मेधामहिगत सोजलपावन सकिलिश्रवणमगुचलेउसुहावन ९

टी० । उहांमेघबर्षे तबभूमिमें पर्‌यो तब इधर उधरसे सकिलिकै एक रास्ता होइकरि थल जोमानसर तहांको चल्यो इहां साधुरूपमेघ रामयश रूप जलबर्षै तब सो पावन जलमेधा जो ग्रहणबुद्धि जो पूर्वकहिआये हैं कि सुमति भूमि तिसमें गतनाम प्राप्तभयो तब सकिलिकै श्रवणबुद्धिके मगुनाम रास्ता ह्वैकरि सुहावन रामयश हृदय जो धारण बुद्धिरूप थल तहांको चल्यो ९ ॥

भर्‌योसुमानससुथलथिराना सुपदशीतरुचि चारुचिराना १०

टी० । जैसे उहां जलसमिटिकै सुन्दर मानसरूप सुन्दर थलभर्‌यो भरिकै थिर भयो तब चिराना भयो तब उसमें पूर्वगुण प्राप्तभयो कौन गुण चारुनाम दीप्तमान जो पूर्वमनोहर कहाहै वो रुचिनाम स्वादमान जो पूर्व मधुर कहाहै वो शीतनामनिरोग जोपूर्वमंगलकारी कहाहै यहतीनि गुण मिलिकै सुखद होतभये चिराना काकोकही जो तिसालाकी बस्तुहोइ तहां जलमें तिसाला क्याहै कि बर्षाऋतुमें नया वो शरद ऋतुमें पुराना वो हिमऋतु चिरानाभयो तब पूर्वगुण प्राप्तभयो तैसे इहां सुमति भूमि में समिटिश्रवणमगु हृदय थल भर्‌यो भरिकै थिरभयो फेरि चिरानाभयो तब इसमेंभी पूर्वगुण प्राप्तभयो कौन गुण वही जो पूर्वकहा है कि सगुण

लीला वो प्रेमलक्षणा भक्ति सो बुद्धिरूपभूमिके योगते कछु मलिनहोइ गयोहै सो जब स्थितताको प्राप्तभयो फेरि चिराना भयो तब निर्मल जैसो रह्यो तैसो होतभयो जो कहौ कि जलसाथ तौ वर्षा शरदऋतु में हिमऋतुमें नया पुराना चिराना कहेउ तैसे रामयशके साथ नवा पुराना चिराना क्याहै सो सुनो प्रथम जब साधुनके मुखसे रामयश सगुणलीला सहित सुन्यो उपमा उपमेय दृष्टांत द्राष्टांत पूर्बक तब बुद्धिके योगसे सब बात ग्रहण भई जो ऊपरकी बातहै सोई मलीनताहै यह बर्षाऋतु है तामेंनवा जैसे वर्षामें जलभूमिकी उपाधिसे मलिन रहतहै जब शरद पायो तब सब धूरिमाटी छूटी तैसे जब प्रथम रामयश ग्रहण होतहै तब राजसी तामसी बुद्धिके योगकरिकै ऊपरकी बातसे मलिन रहतहै जब मनन कियो तब जितनीऊपरकी बातेंरहीं राजसी तामसीके योगसे सोछूटिगईं यह शरदऋतुकेतुल्य पुरानाहै वो जबनिदिध्यासनाम अच्छी तरहसे अभ्यास कियोतबजैसो रामयशमें सगुण लीला वो प्रेम लक्षणा भक्ति रूप मधुर मनोहरमंगलकारी सो प्रत्यक्ष भयो यह हिमऋतु रूप चिराना है जब चिरानाभयो तब चारुनाम दीप्तसो मनोहर वो रुचिरूप स्वादसो मधुरताहै वो शीतरूप निरोग्यसो मंगलकारीहै इहांताईं जौनी प्रकारसे श्रीगोस्वामीजीके हृदयमें मानस भयोहै सोकहे १० ॥

सुठि सुंदर संवाद वर विरचेउ वुद्धि विचारि ॥
तेयहिपावन सुभगसर घाट मनोहर चारि ११

टी० । अब श्रीगोस्वामीजी जैसो मानसकास्वरूप अपने हृदयमें देखि परच्योहै सोकहतेहैं सावय वतुल्य रूपकालंकार करिकै किजैसे उतमानस में चारिउ तरफ घाटवंध्योहै तैसे यह पावन वो सुभग नाम सुन्दर राम चरित्र मानसमें अपनी अपनी बुद्धिके बिचारसे अति सुंदर वो श्रेष्ठ चारिसंवाद जो बिरचेहैं सो मनोहर चारिघाटहैं चारिसंवाद कौनप्रथम श्रीगोसाँईं जीको वो संतनको दूसरो याज्ञवल्क्य वो भरद्वाज जी को तीसरो महादेव पार्व्वतीजीको वो चौथो काकभुशुण्डि वो गरुड़ जीको लक्ष संवादप्रथममें पुनिनिज गुरुसनसुनी(कहिहौं सोइसंवाद बखानी॥ सुनहु सकल सज्जन सुखमानी)दूसरो कहौं युगल मुनिवर्यकरि मिलन सुभगसंवाद तीसरो कहौं सुमति अनुहारि अब उमाशंभुसंवाद चौथो कहाभुशुण्डिबखानिसुनाविहंगनायकगरुड़सो संवादउदारअबकुछअक्षरन

की आशयलेहि वो कुछ प्रकरणको अभिप्रायलेकि जो अपनी अपनी बुद्धिके बिचारसे चारिउ बक्ता बिरचे हैं सोरचना कहतहौं जहां चारिघाट कहा तहां घाटनमें कुछ बिचित्रता होवैकरैगी सोजो आसयश्रीगोस्वामीजीकी प्रेरणासे समुझि पर्यो सोकहतहौं सोसुनौ किजैसे लोकमें प्रसिद्ध चारि घाटहैं सोएक राजघाट जहां उत्तमपुरुष नहातेहैं वो एक पंचाइती जहां सब कोई नहाते हैं वो एक पनिघट जहाँ स्त्रीगण नहाते हैं वो एक गौ घाट जहाँ लूला लँगड़ा सबपहुंचतेहैं तैसे लक्षणा करिकै उस मानस में जानौं जोराजघाटहै तिसमें उत्तमदेवता जोइंद्रादि सो स्नानपान करतेहैं वो जो पंचाइतीघाट हैं तिसमें मध्यम देवता प्रथमगण स्नानकरते हैं वो जो पनिघट झंझरीदार है सो तिसमें देवांगना स्नान पान करती हैं वो जो गौघाट है तिसमें अनेक देवबाहन वो लूले लँगड़े स्नान पान करतेहैं तैसे यह रामचरित्र मानसमें जोचारिसंवाद रूपचारि घाटहैं सो प्रथम गोसाईंजी को संवाद जोहै सो गौ घाटहै काहेते कि दीनतापूर्वक संवादहै लक्षदीनताको (करनचहौंरघुपति गुनगाहा। लघुमति मोरिचरि तअवगाहा॥ सूझनएकौअंगउपाऊ। मनअतिरंक मनोरथराऊ॥ मतिअति नीचि ऊँचिरुचिआछी। चहिय अमिय जगजुरैन छांछी) इत्यादिजहाँ जहाँ गोसाँई जीको वचनहै तहां तहां दीन अधीन ते पूर्वक है सो अति सरलहै जामेंसबको निर्वाहहै जे आचार बिचारसे रहितहैं तेपशुहैं वो जे सर्ब कर्म धर्म से गतहैं ते लूला लँगरा हैं तेउदीन अधीन घाटह्वैके राम चरित्र मानसमें स्नान पान तुल्य श्रवण धारण करतेहैं यहदीनता रूप गौ घाट है वोदूसरो याज्ञवल्क्य संवाद जोहै सो पंचायतीघाटहै काहेते कर्मपूर्वक संबादहै कैसे जानौ सो सुनौ कर्मकांड को येही स्वरूप है कि प्रथम गौरी गणेश महेशको मंगलकरै सो याज्ञवल्क्यजी किये कब जब प्रथम कहाकि (तात सुनहु सादर मन लाई॥ कहौं रामकी कथा सुहाई) यह संकल्प करिफेरि कर्म पूर्बक कहनेलगे तहां शिव महत्व शक्ति महत्व गणेशमहत्व कहि तब श्रीराम कथा कहे सूक्ष्मते तीनिउं को लक्ष प्रथम शिवमहत्व (शंकरजगतवंद्यजगदीशा॥सुरनरमुनिसबनावहिंसीसा) पुनः (सब सुर बिष्णु बिरंचि समेता गये जहांशिव कृपा निकेता) प्रथक प्रथक तिन्ह कीन्ह प्रशंसा॥ भये प्रसन्न चन्द्रअवतंसा) इत्यादिवचनसे जानौ लक्षशक्ति महत्व को (मयना सत्यसुनहु ममबानी। जगदंबा तव सुताभवानी) अजाअनादि शक्तिअबिनाशिनि। सदाशंभुअर्धंग निवासिनि॥

जगसंभवपालनि लयकारिनि ॥ निजइच्छा लीला बपुधारिनि) इत्यादि वचनसे जानो वो लक्ष गणेशमहत्व को (मुनि अनुशासन गणपतिहि पूजे शंभुभवानि ॥ कोउ सुनि संशयकरै जनि सुर अनादिजियजानि) इत्यादिबचन से जानो यह तीनिउंको महत्व कहिबेमें याज्ञवल्क्य जीको यह अभिप्राय है कि आपतौ श्रीसीतारामजू के परमउपासक हैं परि मुनि मननशील परम दयालुसो बिचारेको शैवोपासक वो शक्तिउपासक वो गणेशोपासकजोहैं तिन्हको रामचरित्र मानसमें स्नान करावना चाहिये ताते कर्म पूर्वक तीनिउंको महत्व कहे जाते अपने अपने इष्टको महत्व सुनिकरि सबइस ग्रंथमें लगैंगे तब रामचरित्र मानसको प्राप्त होंहिंगे अपनेअपने इष्ट उपासना के सहित राम चरित्र मानस में स्नान पान तुल्य श्रवण धारण करतेहैं यह कर्मपूर्वक रामचरितमानस को पंचाइती घाट है वो तीसरो शिवजूको संवादहै सोराजघाट है काहेतेकि शिवजूको प्रथम वचन ज्ञानपूर्वकहै लक्ष (झूठोसत्यजाहिबिनुजाने । जिमि भुजंग बिनुरजुपहिचाने ॥ जेहिजानेजगजाइहेराई । जागेयथा स्वपन भ्रमजाई । जासुसत्य ताते जड़माया ॥ भाससत्यइवमोहसहाया) (दोहा) रजतसीपमहंभासजिमि यथा भानुकर बारि ॥ यदपि मृषा तिहु काल सो भ्रमनसकैकोउटारि ॥ (चौपाई) इहिबिधिजगहरि आश्रितरहई । यदपि असत्यदेतदुख अहई ॥ ज्योंसपनेसिरकाटै कोई । बिनुजागे न दूरिदुखहोई ॥ जासुकृपाअसभ्रम मिटिजाई गिरिजासोकृपालुरघुराई ॥ इत्यादिबचनज्ञानमययहजानोज्ञान का यही स्वरूपहैकि परमेश्वरसत्य वो जगत्काप्रपंच असत्य ज्ञानमें घाट जामें उत्तम पुरुष तुल्य ज्ञानी सो स्नान पान तुल्य श्रवण धारण करते हैं यह ज्ञान पूर्वक राम चरित मानसको राजघाट है वो चौथो काकभुशुंडि जीको संवादहै सो पनिघटहै काहेतेकि काकभुशुंडि जी को प्रथमबचन उपासनामेंहै लक्ष (प्रथमहिअतिअनुरागभवानी ॥ रामचरितसरकहेसिबखानी) वो जबमहिमाकहनेलगेतबऊ प्रथम उपासना में कहेकि राम काम शतकोटि सुभगतनु इत्यादि बचनसे जानो जोकहो कि उपासना की वो पनिघटकी तुल्यता कैसे तौ सुनौ जैसे पनिघट झंझरीदार परदा सहित बनताहै तिसमें स्त्रीगणस्नान करती हैं औ अपनी सखिनमें बोलती बतलातीहैं अपरको नहीं देखतीहैं स्पष्ट झंझरी के तनक देखती हैं अपने अपनेपतिसे काम राखतीहैं तैसे उपासनामें वचन पनिघट है जहां श्री सीतारामजी के स्वरूपानन्य उपासक जे अपनेउपासकनमें अपनेस्वामी

की वार्त्ता करतेहैं अपरको जे रामचरित सुनेतौ कहैं औरकितूकी वार्त्ता न कहैं जोकोईकहै तौतनिकसुनिलेहिं ऐसीउपासनामयवचन काकभुशुण्डि कोहै कि जहांकोई मंगलाचरणभो नहीं केवल स्वामीकी वार्त्ता कहतीते पनिघटतुल्यहै जिसद्वार ह्वैकरि सबस्वरूपानन्यउपासकजोहैं सो स्त्रीतुल्य हैं काहेतेकि स्त्रीकी वो स्वरूपानन्य उपासककी एक क्रियाहै सोई स्नान पान तुल्यश्रवण धारण करतेहैं अबजो कोईकहै कि एक मानसरमहादेव कीन्हतिसही को सब कहाहै सोउसमें ज्ञानउपासना कर्मदीनता कहांसे आयोउहांतो जोएकको सिद्धांत सोसबकोचाही तहां सुनौसबकोसिद्धांत एक रामचरित मानसैहै वो चारिउ वक्ता श्रीसीतारामजू के परम उपासकहैं परंतु रामचरित मानसमें चारिभांतिके घाटबँधेहैं काहेते कि जो शिवजी मानस कीन्हहैं सो अति दुर्गमहै (प्रमाणं) यत्पूर्वंप्रभुनाकृतंसुकविनाश्रीशम्भुनादुर्गमम् । सो सर्व जीवन के प्राप्त हेतु चारिघाट चारि तरहके बांधिदीन जाते ज्ञानीजेहैं तेज्ञानघाट ह्वैकरि रामयश जलकोप्राप्त होहिं वो उपासकजो हैं सो उपासना घाटह्वैकरि रामयश जलको प्राप्त होहिं वो पंचाइती भक्त जेहैं तेकर्म घाटह्वैकरि रामयशजलको प्राप्तहोहिं व कर्म धर्मके पंगुजेहैं ते दीनघाट ह्वैकरि राम यश जलको प्राप्त होहिं देखिये तौ एक श्रीराम चरित मानस के आश्रित ज्ञान उपासना कर्म दीनता सबहै जो कहोकि इतनी व्याख्या कौन अक्षरसे कियोहै तौसुनौ जो दोहामें लिखाहै कि । शुठिसुन्दर संबादबरविरचेउबुद्धिविचारि । जो अपनी अपनी बुद्धिके विचारसे संबाद विरचेहैं तौ उसमें कुछवे लक्षणता है तबतौ चारिघाट कहेहैं नाहींतौ घाटको कौन नेमहै यहमैं अपनी मति के अनुरूप कह्योंहै आगे जो सबसंतकहैं सोसही ११ ॥

सप्तप्रबंध सुभगसोपाना ज्ञाननयन निरखतमनमाना १२

टी० । अब सीढ़िनकी रचनाकहतेहैं कि जैसेउसमानसमें सोपाननाम सीढ़ीबँधीहैं तामें कछू जलके आवांतरहैं कछूबाहरहैं तैसे इहांरामचरित मानसमें सप्त प्रबंधनाम सातकांडजोहैं सोईसीढ़ीहैं सोसरकेबाहरभीतर बँधिरहीहैं वो साती सीढ़िनमें रामयश जलभरिरह्योहै परिपूर्ण वोइनहीं सीढ़िन पर ह्वैकरि कवितारूप नदी चलैगी वो सीढ़ी नीचेसे बँधतहैं तेहि में नीचे ऊपर बड़ी होतीहैं बीचमें छोटी तैसेइहांभीहै बालकांडसे प्रारंभ वो उत्तर समाप्त सो बाल अयोध्या ह्वै नीचे की बड़ी सीढ़ी हैं वो लंका उत्तर ह्वै ऊपर की बड़ी सीढ़ी हैं वो आरण्य किष्किंधा सुन्दर

की छोटी पैरखियांहैं आगे जो कोईकहै कि ये सीढ़ी कैसे बँधीहैं किसब में जल परिपूर्णहै वो सीढ़ी देखि परतीहैं तौ तुनौ ग्रंथकार आपैलिखते हैं कि उन सीढ़िनके यह नेत्रसे देखे मनमानतहै वो यह सीढ़िनकोजब जानके नेत्रसे देखै तब जैसो सीढ़िनको स्वरूपहै सो समुझि कै मनमानतहै कछू यह नेत्रनसे नहीं देखिपरत है जैसे लोकमें प्रसिद्धहैकि नीचे की सीढ़ीदाबि करिकै ऊपरकीसीढ़ी बँधतीहै तैसे इहां कांडनमें एककांड का फल श्रुति वो दूसरेकांडका मंगलाचरण सो दाबनिहै वो कांडन का संबंध मिलावना सोई जोड़है कि जैसे बालकांड में कहा कि। आयेराम ब्याहिघरजबते। बसेअनंदअवधसबतबते॥ वो अयोध्याकांडमेंकहा कि जबतेरामब्याहिघरआये। नितनवमंगलमोदबधाये॥ यहदूनोकांडकासंबंध सोई जोड़है बीचमें जोकहा सोसीढ़िनकीदाबनिहै यही प्रकार से सब कांडनमें जानो अयोध्यामें कहा कि। भरतचरितकरिनेम तुलसीजेसादर सुनहिं। वोआरण्यकेआदिमेंकहाकि। पुरणभरतप्रीतिमैंगाई। वोआरण्यके अन्तमेंकहाकि। सिरनाइबारहिबारचरणनब्रह्मपुरनारदगये। वोकिष्किंधा कांडकेआदिमेंकहाकि।आगेचलेबहुरिरघुराई। अंतमेंकहा कि। कपिसेन संगसंहारिनिशिचररामसीतहिआनिहैं। त्रैलोक्यपावन सुयशसुरमुनिनारदादिबखानिहैं॥वो सुन्दरके आदिमेंकहाकि। जाम्बवंतकेवचनसुहाये। वो अंतमेंकहाकि। निजभवनगवनेउसिंधुश्रीरघुवीरयहमतभायऊ। यहचरित कलिमलहरणजसमतिदासतुलसीगायऊ॥ वो लंकाकेआदिमें कहा कि। सिंधुवचनसुनिरामसचिवबोलिप्रभुअसकहेउ। वोअंतमेंकहाकि। प्रभुहनुमंतहिकहाबुझाई। धरिद्विजरूपअवधपुरजाई॥भरतहिकुशलहमारिसुनावहु। तासुकुशललैतुम्हचलिआवहु॥ तुरितपवनसुत गवनतभयऊ। तब प्रभु भरद्वाजपहँगयऊ॥ वो उत्तरकेआदिमेंकहाकि। रामविरहसागरमहँ भरत मगनमनहोत। विप्ररूपधरिपवनसुत आइगयोजनुपोत॥ अब इहां फल वो मंगलाचरणके उपरांत येदोहालंका के अंतका वो एक दोहा उत्तर के आदिका ये दो सीढ़ोकेदाबनिमेंहैं काहेकिउत्तरकांड ऊपरकी सीढ़ी है सो बड़ीहै ज्यादादाबनि चाहतीहै १२॥

रघुपतिमहिमाअगुणअबाधा वरनवसोइवरबारिअगाधा १३

टी०। जैसे उस मानसकोजल गंभीर जो है सो अगाध ताकोसूचतहै तैसे इहां अगुण कही गुणातीत वो अबाधा कही बाधारहित वो वरनाम श्रेष्ठ वो नवनामनवीन जो रघुपतिकीमहिमा सो रामयशजलकी अगाध-

तासूचैहै महिमाकाकहावै है महत्त्वतिसकालक्ष्यसुनो । नेतिनेतिजेहिवेद निरूपा । निजानंदनिरुपाधिअनूपा ॥ शंभु विरंचि विष्णुभगवाना । उपजहिंजासुअंशतेनाना (पुनः)देखेशिवविधिविष्णुअनेका । अमित प्रभावएकतेएका ॥ वंदतचरणकरतप्रभुसेवा (पुनः)कीन्हेप्रभुविरोधतेहिदेवक । शिव विरंचिहरिजाकेसेवक ॥ (पुनः)तुमहिआदिखगमशकप्रयंता । नभ उड़ाहिं नहिंपावहिंअंता ॥ तिमिरघुपतिमहिमाअवगाहा । तातकबहुंकोउपावकिथाहा ॥ रामकामशतकोटिसुभगतन । दुर्गाकोटिअमितअरिमर्दन ॥ इहां से लेइकरि वो निरूपमन उपमाआन रामसमान रामनिगमकहैं जिमि कोटिशत खद्योतरविसमकहतअतिलघुतालहैं। इहांतकसबमहिमाकावर्णन है सो महिमा रामयशजलकी अगाधताहै नाम रामयशबड़ोअगाध है कि जामें शेष महेश की बुद्धिको अवसाननहीं १३ ॥

रामसीययशसलिलसुधासम उपमावीचिविलासमनोरम १४

टी० । जैसे उस मानसकेजलमें मधुरमनोहर मंगलकारी जो गुण है तिसमें पुष्टीअह्लादहै तैसे इस मानसके रामयश जल में सगुण लीला मनोहर वो प्रेमलक्षणा मधुरमंगलकारी जो गुणहैं तिसमें रामसीययुगल को मिलिकै लीलापूर्वक यश सोई सुधासम नाम पुष्ट अहलाद कारक है इहां जो सुधासमको पुष्टी अहलादकोअर्थ कियाहै सो यह आशयलैकै कि जो मिष्ठता अर्थ करैं तौ मिष्ठता वर्णन होइचुकाहै ये सुधामें पुष्टता वो अहलादसारहै ताते ऐसो अर्थकियोहै अब रामसीयमिलित लीलायश को उदाहरणसुनौ । समैजानिगुरुआयसुपाई । लेनप्रसूनचलेदोउभाई ॥ इहां से लेइकरि वो जानिगौरिअनुकूल । इहां प्रयंत युगलसरकारको फूलवाटिकामें मिलापविहार वो परस्पर चक्षु संभोग वो परस्पर कटाक्षन की तीरंदाजी सबसखिनको हासविलासमयदश दोहा यहप्रसंगश्रीसीताराम जू को लीलायशहै सो यह प्रसंग इसग्रंथका सारभूतहै जिसमें श्री सीताराम उपासकन को पुष्टीअह्लादहै सोई सुधासम जानो (पुनः)दूसरा उदाहरण सूक्ष्मते है आरण्यकांड में फटिकशिला की लीला (चौ०) एक वारचुनिकुसुमसुहाये । निजकरभूषणरामबनाये ॥ सीतहिंपहिरायेप्रभु सादर । बैठेफटिकशिलापरभाधर ॥ इहां रासकी लीला है ताते गुप्तेकहा इत्यादि जो सीतारामजीको लीलापूर्वकयशहै सोई रामयश जलकोसुधासम नामपुष्टी वो अहलादकारकहै सब रामभक्तनको जो सीतारामदोउन को मिलायश न होइ तौ पुष्ट अह्लाद न होइ इत्यर्थः अरु जैसे उस

मानसमें अनेकछोटीबड़ी लहरिउठतीहैं तैसे इसमानसमें जो छोटीबड़ी उपमाहै सोई वीचीनामलहरिहै उपमाकाकहावै मुखजनुचन्द्र है नेत्रजनु कमलहै नासिकाजनुशुकहै दंतजनुदाड़िमहै इत्यादि जहां जनुमनु जानौ मानौमनहुं ऐसापरै सो उपमाहै सो तौ इसमानस में बहुत है परमैंदो तीनिउदाहरणकेहेतुलिखतहौं(चौ०)अगरधूपबहुजनुअँधियारी । उड़ैअबीर मनहुं अरुनारी ॥ भवनवेदध्वनिअतिमृदुबानी । जनुखग मुखरसमयसुख सानी ॥ मंदिरमणिसमूहजनुतारा । नृपगृहकलससोइंदुउदारा ॥इत्यादि ऐसीजनुमनुकीवचनजहां सोई सो उपमा सोई बहुत सीलहरि हैं १४॥

पुरइनि सघन चारु चौपाई युक्तिमंजुमणि सीपिसुहाई १५

टी० । अबतीनिपरिखा बांधतेहैं एकतदलीन एकतदगत एकतदाश्रय सो पहिले जो मानसमेंलीनहैं तिनको रूपककहतेहैं लीनकही जो क्षण भरि बाहिर न होइ उसमें मिलारहै जैसे उसमानसमें पुरइनि फैलरही है सीपीहै उसमें मोतीहै तैसे इसमानसमें चारुनाम सुन्दरि दीप्तिमान चौपाई जोहैं सोई पुरइनिहैं परिसघनहैं पुरइनि वो चौपाईकी तुल्यता इसदेश लेकरि कहा कि जैसे पुरइनि के वोट से जल ढँपा रहतहै तैसे चौपाइनके वोटसे रामयश जलनाहीं देखिपरैहै केते विमुखजीवचौपाई देखे वा सुने तब कहतेहैं कि यह तौ भाषाहै इसको का कहना सुनना ई नहींजानते कि इन्ह चौपाइनमें जो रामयश भराहै सो श्लोकन में कहूं ढूंढ़े न मिलैगो औ जे रामयश जलकेप्यासेहैं वो रामतत्त्वके जनैयाहैं ते तौ यही चौपाईके आवांतर जो रामयशहै तिस को पान करतेहैं अरु युक्ति जोहै सो मंजुमणि नाम मोतीहै युक्ति का कहावैहै कि जो क्रियासे कर्मको छपाइदेइ (प्रमाणं भाषाभूषण अलंकारे अर्द्धदोहा) यहैयुक्तिकीन्हे क्रिया कर्मछपायेजाइँ॥ इति (उदाहरणयुक्तिको) बहुरिगौरिकरध्यानकरे हू । भूपकिशोरदेखिकिनलेहू॥ (पुनः) राज्यदेनकहिदीन्हवन मोहिंनशोक दुखलेश । तुमबिनभरतहिं भूपतिहिं प्रजहिंप्रचंडकलेश ॥ (पुनः) कोउ नृपहोउहमहिंकाहानी । (पुनः) ममअनुरूपपुरुषजगमाहीं । देखेउँखोजिलोकतिहुं नाहीं ॥ तातेअबलगिरहेउँ कुमारी । मनमानाकछुतुमहिंनिहारी ॥ (पुनः) प्रभुप्रतापबड़वानलभारी । सोखेउप्रथमपयोनिधिवारी॥ तबरिपुनारिरुदनजलधारा । भरयोपयोधिभयोतेहिखारा ॥ (पुनः) दश मुखदेखिसभाभयपाई । विहँसिवचनकहयुक्तिबनाई ॥ गिरोगिरेसंतत

शुभजाही। मुकुटखसेकसअशकुनताही ॥ इत्यादि वचन जहां होइ सो कहावै युक्ति सो इस मानसकी मोतीहै युक्तिकी वो मोतीकी कवनअंग से तुल्यताहै कि जैसे मोती जल से होतीहै वो सारहीन होतीहै केवल पानीको बुल्लाहै परि बड़े मोलकी होतीहै वो शोभायमान होतीहै तैसे युक्तिजोहै सो उक्तिकै होतीहै ताते सारहीनहै परि सुनत नीक लागतहै ताते सुन्दरिहै वो जासेकहौ सोप्रसन्नहोतहै तातेबड़ेमोलकीहै सो सीपि सुहाई इहां सुहाई बुद्धिको जानना सो बुद्धि जोहै सोयुक्तिरूपमोतीकी सीपीहै इहां पूर्व जो अष्टप्रकारकी बुद्धि कहाहै सो उहां पोहानाम बार बार कहना सुनना यह जो बुद्धिहै तिसीमें युक्तिरहतीहै १५ ॥

छंदसोरठासुन्दरदोहा सोइबहुरंगकमल कुलसोहा १६

टी० । जैसे उसमानसमें बहुरंगके कमल फूलेहैं तैसे इस मानस में सुन्दर छन्द वो सुन्दर सोरठा वो सुंदरदोहा जोहैं सोई बहुरंगके कमल कुलहैं शोभायमान अब जो बहुरंग कमलको तुल्य छंद सोरठा दोहाको कहे तिसको रंग त्रिगुण मय जानो जो सतोगुण वाणीमें छंदादि हैं सो श्वेतरंगके कमलहैं वो जो रजोगुण वाणीमेंहै सो लालरंगके कमलहैं वो जो तमोगुण वाणीमेंहैं सो श्यामरंग के कमल हैं वो जितने छंद सोरठा दोहाहैं सो त्रिगुणवाणीमेंहैं देखिये तौ ग्रन्थकार चारिवस्तुको इसग्रंथमें नेम करिदीनहै चौपाई छंद सोरठा दोहा आगेऔर पिंगलसे कोऊ अन्य उक्ति युक्ति कहै तौ कहा करै परंतु यहां तौ चारि को नेम है को जानै कौन पिंगलसे १६ ॥

अर्थअनूप सुभावसुभाषा सोइपराग मकरंद सुवासा १७

टी० । जैसे उस मानसके कमलमें अपनेअपने रंगमाफिक परागनाम रजहै वो मकरंदनाम रसहै वो बासनाम सुगन्धहै तैसे इसमानसमें त्रिगुणवाणीमें जो छंद सोरठा दोहारूप कमल है तामें अनूप अर्थजोहै सो परागहै जैसे पराग फूलमें प्रकट रहतहै तैसे अर्थ अक्षर में प्रकट रहतहै वो सुन्दर भावजोहै सो मकरंद नाम रसहै जैसे रसफूलके आवांतररहतहै तैसे भाव शब्दके भीतर रहतहै वो सुन्दर भाषा जो है देश देशकी सोसुगन्धहैजैसेसुगन्ध इधरउधरउड़तहै तैसे भाषादेशदेशकीउड़तीहै १७॥

सुकृतपुंजमंजुल अलिमाला ज्ञानविरागविचार मराला १८

टी० । जैसे उसमानसमें कमलनपर भवँर रसलेइरहेहैं वो हंससुगन्ध

लेइरहेहैं तैसे इस मानसमें सुकृतकेपुंज नाम समूह सोई मंजुल नाम निर्मल अलि नाम भवँरन की श्रेणीहैं सोई यह छंदादि रूप कमलन के सुन्दर भावरूप रसको ग्रहण करैहैं यहां सुकृतकही पुण्यको पुण्य काको कही सुनौ पुण्यएकजगमेंनहिंदूजा । मनक्रम वचन विप्रपद पूजा ॥ सो इस मानस ग्रन्थमें विप्रपूजन बहुतहै ठौरठौर ताते पुंज कहा वो ज्ञान वैराग्यको जो विचार सो हंसहै गुणरूप दूध को ग्रहण करैहै वो अवगुण जलको त्यागकरैहै यहां कमलके योगसेभवँर वो हंसको तदलीनकेसाथ कहेहैं परंतु है एतद्गत १८॥

ध्वनिअवरेवकवित गुणजाती मीनमनोहरतेबहुभाती १९

टी०। जैसे उस मानसमें बहुभांतिकी मीन नाम मछरीहैं तैसे इस मानसमें चारिभांतिकी कविताजोहैं ध्वनिकाव्य अवरेव काव्यगुण काव्य जाति काव्यसोईबहुभांतिकी मनोहरमीनहैंध्वनिकाव्यकाकोकही शब्दार्थ भिन्नोध्वनिः ॥शब्दके अर्थसे कुछ बिलक्षण निकसे ताको ध्वनिकही पुनि वाहीको व्यंग्यकहोऐसेअभिप्रायकही (प्रमाणं तुलसीभूषणेदोहा) वर्णअर्थ ते अधिकजहँउपजावेकछुबात । धुन्यततासोंकहतहै जाकोमतिअवदात १ तिसकोलक्ष्य।पुनिआउबयहिबेरियाकाली।असकहिमनविहँसीयकआली॥ (पुनः) गौतमतियगतिसुरतिकरि नहिंपरसतिपदपानि। मनबिहँसेरघुबंशमणिप्रीतिअलौकिकजानि (पुनः) रामसप्रेमकहामुनिपाहीं। कहहुनाथ हमकेहिमगजाहीं॥मुनिमनविहँसिरामसनकहहीं। सुगमसकलमगतुमकहँ अहहीं (पुनः) उमारामगुणगूढ़ पण्डितमुनिपावहिंविरति। पावहिंमोह विमूढ़ जेहरिविमुखनधर्मरति॥इत्यादिवचनजहांहोइ। सोधुन्यात्मककाव्य जानौ सो इस मानसरके बड़ी मीनहै सौरी पढ़िना रोहूआदि जैसे जल के भीतर रहतीहैं कोई भेदीजाने है तैसे ध्वनिशब्दन के भीतर रहती है कोई भेदी जाने है यह तुल्यता है पुनि अवरेव काव्य काको कही जाको अक्षर लवटिके अर्थसिद्धि होइ ताको लक्ष्य ॥ रामकथा कलि विटपकुठारी (पुनः) रामकथाकलिपन्नगभरणी (पुनि) आगेचलेबहुरि रघुराया (पुनः) इहांहरीनिशिचरवैदेही । विप्रफिरहिंहमखोजततेही॥इत्यादिवचनजहांहोइसोअवरेवकाव्यजानौ सोइस मानसरकेवासीमीन हैं जो पुच्छमुखमिलाइकैचलतीहैं (पुनः) गुणकाव्य काकोकहीजो द्वै तीनि अक्षरको पदहोइ वो पदपदमेंजमक अनुप्रास आवृत्तचलाजाइ तामेंतीन भेदहैं ओज प्रसाद माधुर्य सो माधर्यगुण उपनागरिका वाणीमें होतहै वो

प्रसादगुण कोमलावाणीमें वो ओजगुण परुषावाणीमें (प्रमाणंतुलसीभूषणे दोहा) त्रिविधिवृत्य माधुर्यगुण उपनागरिकाहोइ । मिलिप्रसाद पुनि कोमलापरुषाओजसमोइ ॥ अब उपनागरिका माधुर्यगुणकोलक्ष्य॥दोहा॥ रामचन्द्रमुख चन्द्रछवि लोचन चारुचकोर । करतपान सादरसकल प्रेम प्रमोद नथोर (पुनः) लक्ष्यकोमलाप्रसादगुणको॥लागेबिटपमनोहरनाना॥ बरणबरणबरबेलिबिताना (पुनः) भवभवविभवपराभवकारिणि । (पुनः) लक्ष्यपरुषाओजगुणको । धिगधर्मध्वजधंधकधोरी (पुनः)काईकुमतिकेकयी केरी (पुनि) खगकाककंकस्टगाल । कटकटहिँकठिनकराल(पुनः) धरुधरु मारुमारुधरुमारू । इत्यादि ऐसेपद जहाँहोहिँ ताकोगुण काव्यकही सो इसमानसरकेसिधरी मीनहैं जो छोटी छोटी दश बीस इकट्ठा मिलिकै चलतीहैं तैसे गुणकाव्य द्वैचारिपद मिलिकै चलतहै ताते तुल्यहै (पुनः) जातिकाव्य काकोकही जाको आठ दश बारह चौदह अक्षर को पदहोइ व पदकोअर्थ स्पष्टहोइ व जैसो जाको रूप गुण होइ तैसो तिसमें साज वर्णनकरे (प्रमाणंतुलसीभूषणे दोहा) जाकोजैसोरूपगुणकहियेतेहिकी साज । तासो जातिस्वभावकहिवरणतसबकविराज॥ताकोलक्ष्यसुनो॥मन जाहिराचोमिलिहिसोइबर सहजसुन्दरसाँवरो। करुणानिधानसुजानशील सनेहजानतरावरो (पुनः)विद्याविनयनिपुणगुणशीला। खेलहिँखेलसकल नृपलीला(पुनः)राजकुमारिविनयहमकरहीं।तियस्वभावकछुपूछतडरहीं॥ स्वामिनिअविनयक्षमोहमारी । बिलगुनमानबजानिगँवारी॥ कोटिमनोज लजावनिहारे । सुमुखिकहहु कोअहहिँ तुम्हारे (पुनः) खायउँफलमोहिं लागीभूखा । कपिस्वभावतेतोरउँरूखा ॥इत्यादि जहां ऐसापदपरै ताको जातिकाव्यकही सोइसमानसरको चेलहवा मीनहै जो चमकत चलतहै तैसे जातिकाव्य चमकतचलतहै यहतुल्यताहै इहांतक तद्लीनकहे अब तद्गत कहतेहैं जो भवँर हंस कहेहैं तिन्हसहित १६ ॥

अर्थ धर्म कामादिक चारी कहब ज्ञान विज्ञान विचारी २०
नवरसजपतप जोगविरागा ते सबजलचर चारुतड़ागा २१

टी० । इहां द्वैचौपाईको एकही अन्वय जानब कि जैसे उत्तमानसमें बहुतभाँतिके जलचरहैं जो कोईकहे कि क्यामीन जलचरनहींहै जोमीन को जलचरसे बिलग बर्णनकरे सोतुनो मीनजोहै सो सदाजलमें लीन रहतिहै पलभरि बाहरनहींहोइहै ताते उसकोतद्लीनमेंकहे व अपरजल

चर जोहैं सोजलमें रहतेहैं जबखुशीभई तब घरीद्वै घरीपहरभरिदिनभरि बाहर भी चलेजातेहैं ताते तदगतहैं तैसे इस मानसरमें अर्थ धर्म काम मोक्ष ज्ञान विज्ञान नवरत जप तप योग विराग एते उन्नीस जोबिचारि के कहब सोई इस चारुतड़ागके जलचरहैं अब इनसबको बिलगबिलग स्वरूप कहते हैं मयउदाहरण के अर्थकही द्रव्य राज्यकाज हाथी घोड़ा भूषणवसन एते सबअर्थ कहावै हैं सो अर्थादि उन्नीस जो कहिआये हैं सो तो रामयश में स्वाभाविकै है परंतु जिज्ञासू के बोध अर्थ कछु उदाहरण कहत हौं काहे ते कि स्वामीजी कहे कि अर्थादि उन्नीस बिचारि कै कहब ताते ग्रंथ में उदाहरण देत हैं सो सुनो अर्थ केहिको सिद्ध भयो है तहां सुग्रीव विभीषण को मुख्य और सबको दान में (प्रमाणं) तेहिअवसरजोजेहिविधिआवा । दीन्हभूपजोजेहि मनभावा ॥ गजरथतुरगहेमगोहीरा । दीन्हेनृपनानाविधिचीरा ॥ (पुनः) राजदीन्ह सुग्रीवकहँअंगदकहँयुवराज । (पुनः) सबमिलिजाहुविभीषणसाथा । सारेहुतिलककहेउरघुनाथा ॥ तुरतचलेकपिसुनिप्रभुवचना । कीन्हीजाइ तिलककीरचना ॥ सादरसिंहासनबैठारी । तिलकसारिस्तुतिअनुसारी ॥ इत्यादिसेजानो १ अब धर्मसुनो धर्म कही अपनो अपनो वर्णाश्रम को कर्म वो स्त्रीके पातिब्रत एतेकहावैं धर्मसोधर्म काकोसिद्धभयोहै अहल्या जूको वो (रामराज्यमें सर्वकोलक्ष्य) यहिभांतिसिधारीगौतमनारी बार बारहरिचरणपरी । जोअतिमनभावासोवरपावागइपतिलोकअनन्दभरी ॥ (पुनः) वर्णाश्रमनिजनिजधरम निरतवेदपथलोग । चलहिंसदापावहिं सुख नहिंभयशोकनरोग ॥ इत्यादिसे जानो २ अब कामसुनो कामकही कामना किंतु कामकही स्त्री भोग सो दोनोंकाम केहिकेसिद्ध भये हैं तहां विश्वामित्र जनकमहाराज वो दंडकवासी मुनिनको कामनासिद्ध भयोहै वो हरगिरिजाको भोग सिद्धभयो (लक्ष्य) गाधितनयमनचिन्ताव्यापी । हरिबिनमरहिंननिश्चरपापी ॥ सो ॥ मारिअसुर द्विजनिर्भयकारी । अस्तुतिकरहिंदेवमुनिझारी ॥ (पुनः जनकमहाराजको) मोहिकृतकृत्यकीन्ह दोउ भाई (पुनः) जो सुख सुयशसुलभमोहिंस्वामी ॥ (पुनः दंडक मुनिनको) निश्चरहीनकरौंमहि भुजउठायप्रणकीन्ह । सकलमुनिनकेआश्रमन जाइजाइसुखदीन ॥ (पुनः) हरगिरिजाविहारनिततयऊ । यहि विधिविपुलकालचलिगयऊ ॥ इत्यादि प्रसंगसे जानो ३ अब मोक्ष सुनो मोक्षकही शरीरादि बंधनसे छूटना ताको(लक्ष्य) असकहियोगअगिनितनु

जारा । रामकृपाबिकुंठसिधारा ॥ (पुनः) अविरलभक्तिमांगिवर गृद्धगयउहरिधाम । तेहिकीक्रियायथोचित निजकरकीन्हीराम ॥ (पुनः) निश्चरअधमभलायतनु ताहिदीननिजधाम । गिरिजातेनरमंदमति जेनभजहिंश्रीराम ॥ (पुनः शवरी) तजियोगपावकदेहहरिपद लीनभइजहँनहिंफिरे ॥ दोहा ॥ जातिहीनअघजन्ममहि मुक्तकीन्हअसनारि । महामंदमनसुखचहसि ऐसेप्रभुहिंबिसारि ॥ इत्यादि से जानो ४ अब ज्ञानसुनोयहां ज्ञान कही स्व अनुभवते सर्व मानछोड़िके सबमें ब्रह्मरूप देखे (लक्ष) ज्ञान मान जहँाएको नाहीं । देखत ब्रह्म रूप सब माहीं ५ अब विज्ञान सुनो विज्ञानकही विशेषज्ञान जहां ब्रह्म जीव की एकताहै (लक्ष) सोहमस्मिइतिवृत्तिअखंडा । दीपशिखासोइपरमप्रचंडा ॥ (पुनः) सोतैंताहितोहिंनहिंभेदा । वारिवीचइवगावहिंवेदा ॥ इत्यादि ६ अब नवरसकहतेहैं तिनको नामसुनो श्रृंगार १ हास्य २ करुणा ३ रौद्र ४ वैभत्स्य ५ भयानक ६ वीर ७ अद्भुत ८ शांत ६ (प्रमाणं भाषाभूषणे दोहा) बीरभयानकहास्ययुतअद्भुतकरुणाचार ॥ शांतविभत्स्यसुरौद्रयेरसपतिरसश्रृंगार१ सो यह नवरसका उदाहरण एकश्लोक श्रृंगारमाला ग्रंथका देते हैं फेरि इसग्रंथमें देंगे (श्लोक) श्रृंगारीजनकगृहेरघुवराह्यास्यःकृतोद्विनस्यात् कारुण्योनुजरोदनेखरबधेरौद्रोद्भुतःकाकके ॥ वैभत्स्योहरिबंधनेभयकरःसोतोरणेबीरहा शांतःश्रीभुवनेश्वरोभवहरीद्रामाद्रसोभून्नव १ (इति) ॥ दोहा ॥ गनिश्रृंगारअरुहास्यरस करुणारौद्रसबीर । भयविभत्स्यअद्भुतविशद शांतिकसुभगगँभीर ॥ इतिजनकपुरमें श्रृंगाररसको वर्णन (लक्ष) नारित्रिलोकहिंहरषिहिय निजनिजरुचिअनुरूप ॥ जनुसोहतिश्रृंगारधरिमूरतिपरमअनूप १ यह प्रकरणमें तौ नवोरस वर्णनहैं परंतु एक एक को उदाहरण सबकांडनमें देतेहैं अयोध्याकांड छोड़िके काहेते कि अयोध्याकांड करुणामयहै (अबहास्यरस सूर्पणखाप्रति लक्ष) ममअनुरूपपुरुषजगमाहीं । देखेउंखोजिलोकतिहुंनाहीं ॥ तातेअबलगिरहिउंकुमारी ॥ मनमानाकछुतुमहिंनिहारी ॥ सीतहिचितइकहीप्रभुबाता । अहैकुमारमोरलघुभ्राता ॥ गइलक्ष्मणरिपुभगनीजानी । प्रभुविलोकिबोलेमृदुबाणी ॥ सुंदरिसुनुमैंउनकरदासा । पराधीननहिंतोरसुपासा ॥ इत्यादि ॥ अबकरुणारससुनो करुणाकही दूसरेके दुःखमें दुःखितहोइ सो जब लक्ष्मणजूके शक्तिलगी तहां रघुनाथजू दिखाये (लक्ष) इहांरामलक्ष्मणहिंनिहारी । बोलेबचनमनुजअनुहारी ॥ (पुनः) प्रभुप्रलापसुनिकान विकलभये

वानरसकल । आइगयेहनुमान जनुकरुणामहँवीररस ॥ इत्यादि ३ अब रौद्र कहतेहैं रौद्र कही क्रोध को सो खर दूषण के बधमें (लक्ष) कोपेउ समर श्रीराम । चले विशिष निसित निकाम ॥ अवलोकि खरतरतीर । मुरिचले निश्चर वीर ॥ भये क्रोध तीनिउ भाइ । जो भागिरण तेजाइ ॥ तेहि बधब निजहमपाणि। फिरेमरन मन महँठानि ॥ आयुध अनेक प्रकार । सम्मुख ते करहिं प्रहार ॥ रिपु परम कोपेउ जानि । प्रभु धनुष सरसंधानि॥(इत्यादि) ४ अबअद्भुतरसकहतेहैं अद्भुतकहीजो कबहुंन भयाहोइ सो काकभूशुंडिजी को श्रीरामजी दिखाये बाहरभीतर (लक्ष) सप्तावरण भेदिकरि जहँलगि गतिरहिमोरि । गयउँ तहां प्रभु भुज निरखि व्याकुल भयउं बहोरि (पुनः भीतर) उदरमांझ सुनु अंडज राया । देखेउँ बहु ब्रह्माण्ड निकाया ॥ इत्यादि यह प्रसंग भरि अद्भुत रस जानो ५ अब वैभत्स्यरस कहते हैं वैभत्स्यकही जहां रसाभासहोइ सो जब रघुनाथजी नागबंधन अंगीकारकीन्हतबदिखाये(लक्ष) नागपास बशभयउखरारी । स्ववश अनंत एक अविकारी ॥ रणशोभालगि आपुबँधायो । देखिदशा देवन भयपायो ॥ इत्यादिबचन से जानो ६ अबभयावनरससुनो भयावनकही जो कछूदेखि सुनिकै भयहोइ सोसेतु बँधेपर रावणको भयभई (लक्ष) सुनत श्रवण बारिधिबंधाना । दशमुख बोलि उठा अकुलाना ॥ बाँध्यौजलनिधि नीरनिधि उदधि सिंधुवारीश । सत्यतोय निधिकंपतीजलधि पयोधि नदीश ॥ व्याकुलता निजसमुझिबहोरी । बिहँसिचला गृहकरिमतिभोरी॥ इत्यादिसेजानो७अबवीररससुनो वीररसकही जो रणमें उत्साह पूर्वकलरै सो राम रावणके युद्धमेंहै (लक्ष) सुनि दुर्वचन कालबश जाना । बिहँसि बचन कह कृपानिधाना ॥ सत्य सत्य तव सब प्रभुताई ।जनि जल्पसि दिखाउ मनुसाई (पुनः रावण) जीतेहु तेभट संयुगमाहीं । सुनु तापसमैं तिन्हसम नाहीं ॥ रावण नाम जगत यश जाना । लोकपजाके वंदीखाना ॥ खरदूषण विराध तुममारा । बधेउव्याधइव बालिबिचारा ॥ निशिचर सुभट सकल संहारेहु । कुम्भकरण घननादहिमारेहु ॥ आजुबैरसब लेउंनिबाही । जो रणभूमि भागि नहिंजाही ॥ इत्यादिसेजानो ८ अब शांत रससुनो शांतकहीजामें मोक्ष को अधिकारहोइ सो रामराज्यमें सबमोक्षाधिकारी भये (लक्ष) रामराज्य नभगेशसुनु सचराचरजगमाहिं । कालकर्म स्वभाव गुण कृत दुखकाहुहिनाहिं॥ (पुनः)रामभक्ति रत सबनरनारी । सकल परम पदके अधि

कारी ॥ इत्यादिसेजानो ६ इतिनवरस॥अबजपको लक्षसुनो ॥ असकहि लगे जपनहरिनामा(पुनः) जपहिंसदा रघुनायक नामा (पुनः) जीहनाम जपु लोचन नीरू (पुनः) रामराम रघुपतिजपत श्रवणनयन जलजात (पुनः) जपौंमंत्र शिवमंदिरजाई ॥ इत्यादिसे जानो अब तपको लक्ष सुनो ॥ उरधरि उमा प्राणपतिचरणा । जाइ विपिन लागींतप करणा ॥ अति सुकुमारि न तनुतपयोगू । पतिपद सुमिरि तजेउसबभोगू ॥ संबत सहस मूलफल खाये । सागखाइशत वर्ष गँवाये ॥ कछुदिन भोजनवारि बतासा । किये कठिन कछुदिन उपवासा ॥ वेलपात महिपरत सुखाई । तीनि सहस संबतसो खाई ॥ पुनिपरि हरेउ सुखानेउपरना । उमहि नाम तब भयउ अपरना ॥ देखिउमहिंतपखीन शरीरा । ब्रह्मगिरा भइ गँगनगँभीरा ॥ (पुनः) पुनि हरिहेतु करणतप लागे । वारिअहार मूल फल त्यागे (पुनः) विधिहरिहर तप देखि अपारा ॥ इत्यादि प्रसंग से जानो ॥ अब योगकहतेहैं योगकही अष्टांगयम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ ध्यान ६ धारणा ७ समाधि ८ मुख्य समाधि जामें आत्माको परमात्मा विषे योजनकरना सो कहावै योग सो नारद जीकीन्ह (लक्ष) निरखिशैल सरि विपिन विभागा । भयउ रमापतिपद अनुरागा ॥ सुमिरत हरिहि शाप गतिबाधी । सहजविमल मन लागि समाधी ॥ इत्यादिसे जानो अब विराग कहतेहैं विरागकही विगतरागः विरागः तिसको उदाहरणसुनो । जानियतबहिं जीवजगजागा । जब सब विषय विलास विरागा ॥ (पुनः) कहियतातसो परमबिरागी । तृणसम सिद्धि तीनिगुण त्यागी ॥ इत्यादिसेजानो अर्थादिको स्वरूप उदाहरण अपनी मतिके माफिक कहा जो कोई और कछू कहे तौ सही २१ ॥

सुकृतीसाधुनामगुणगाना तेविचित्रजलबिहगसमाना २२

टी० । जैसे उसमानसर में जलबिहग रहतेहैं कुक्कुटादिक तैसे इस मानसरमेंसुकृतीगुणगाननाम साधुगुणगान जोहैं सोईकुक्कुटादिजलबिहंग हैं विचित्र भांति भांति के अब उदाहरण सुनो (लक्ष सुकृतिन के) हम सबसकलसुकृतकीराशी । भयेजगजन्मि जनकपुरबासी ॥ जिन्ह जानकी रामछबिदेखी । कोसुकृती हमसरिस विशेषी ॥ (पुनः) केहिसुकृती केहि घरी बसाये । धन्य पुण्यमय परमसुहाये । पुण्यपुंज मगुनिकट निवासी । तिनहिँ सराहत सुरपुरबासी ॥ इत्यादि सुकृती गणगण जानो अब साधु

गुणगण सुनो नारद प्रति श्री रामजीकहापुनः भरतजी प्रति श्रीरामजी कहा पुनः गरुड़प्रति श्रीकाकभशुण्डिजीकहा(सबकालक्ष)सुनमुनि साधुन के गुणकहहऊं । ज्यहिते मैंउनके बशरहऊं॥(इहांसे लेइकरि वो) सुनुमुनि साधुन के गुणजेते । कहि न सकहि शारद श्रुतितेते ॥ इहांपर्यंत (पुनः) संतनके लक्षण सुनु भ्राता । अगणित श्रुति पुराणविख्याता ॥ इहां से वो । सुनहु तात मायाकृतगुण अरु दोष अनेक । गुणयहउभय न देखिये देखिय सो अबिबेक॥ इहां पर्यंत (पुनः) परउपकारबचन मनकाया । संतसहजस्वभाव खगराया ॥ इत्यादिप्रसंगसाधुगुण गानजानो अब नाम गुणगानसुनो । ब्रह्मरामते नामबड़ बरदायक बरदानि॥ इहांनव दोहानाम गुणगानहै (पुनः)यद्यपिप्रभुकेनामअनेका । श्रुतिकहअधिकएकतेएका॥राम सकल नामनते अधिका । होउनाथअघखगगणवधिका ॥ राकारजनीभक्ति तव रामनामसोइसोम ॥ अपरनामउडुगणबिमल बसहु भक्तउर व्योम॥ (पुनः) तीरथ अमित कोटिशत पावन । नामअखिलअघपुंज नसावन॥ इत्यादि प्रसंग नाम गुण गान जानो एते सब यह मानसर के बिचित्र जल बिहंग हैं २२ ॥

संतसभा चहुं दिशि अमराई श्रद्धा ऋतु बसंत समगाई २३

टी० । इहांतक तदगत स्वरूप कहि अबतदाश्रय कहते हैं जोतड़ाग के बाहर उसके आश्रय हैं इहां जैसे उस मानसरके चहुंओर अमराई लगीहै तैसे इस मानसरके चहुंओर संतमंडली जो है सोई अमराई है इहां संतसभा चहुंदिशि अमराईसेले अरुते यहि तालचतुर रखवारे तक ग्रंथसे बाहिरकी बात वर्णनहै तातेग्रंथकोउदाहरणनहीं कहते कहूं कहूं प्रसंग पाइकै प्रमाण देहिंगे जैसे उहां अमराईमें बसंतऋतु है तैसे इहां संतसभा अमराई में श्रद्धाजो है सोई बसंत ऋतु समगाई है जैसे बसंतऋतु करिकै अमराई शोभित होतहै तैसे श्रद्धासे संतसभा २३ ॥

भक्तिनिरूपणविविधविधाना क्षमादयाद्रुमलतावितानां २४

टी० । जैसे उस अमराई में अनेक तरहके द्रुमनाम वृक्षहैं आंब जामुन कटहर बड़हर अमिली महुआ तिन्ह द्रुमन पर अनेक तरहकी लता जो वेलिसोवितान इव चढ़िकै छाइरही हैं तैसे संतसभा अमराई में अनेक तरहके उपासक जोहैं सोई अनेक तरहके द्रुम हैं वो विविध विधान की भक्ति निरूपण जोहै निरूपण कही अर्थसो भजन सेवा धातुहै भक्तिकही

सेवासो बहुतबिधि की है नवधा प्रेमापरा॥ नवधामें भेद॥ श्रवण१ कीर्त्तन२ स्मरण ३ पादसेवन ४ अर्चन ५ बंदन ६ दास्यपन ७ सख्यपन ८ आत्मसमर्पण ९ (प्रमाणं भागवते श्लोक) श्रवणं कीर्त्तनं विष्णोः स्मरणं पाद सेवनं ॥ अर्चनंवंदनंदास्यं सख्यमात्मनिवेदनं १ (पुनः) नवधाकही संतन कोसंग १ कथाप्रसंगमेंरत २ मान रहित गुरुपद सेवन ३ रामगुणगान ४ मंत्रजाप ५ शमदमादि संतनके बहुकर्म ६ सबकोराममयदेखै वो संतको रामते अधिक जाने ७ यथालाभ तथासंतोष न देखेपरदोष ८सबसेसरल छलहीन रामभरोस दीनता हर्षनाश्ती ९ (प्रमाणंमानसरामायणे) प्रथम भक्तिसंतन कासंगा । दूसरिरत मम कथा प्रसंगा ॥ गुरुपद पंकज सेवा तीसरिभक्ति अमान । चौथि भक्ति ममगुण गण करै कपट तजि गान ॥ मन्त्रजापममदृढ़विश्वासा । पंचमभजनसोवेदप्रकाशा ॥ छठदमशीलविरतिबहुकर्मा । निरतनिरंतरसज्जनधर्मा ॥ सप्तमशममोहिंमयजगदेखा । मोतेसंतअधिककरिलेखा ॥ अष्टमयथालाभसंतोषा । सपनेहुनहिंदेखैपर दोषा ॥ नवमसरलसबसनछलहीना । ममभरोसहियहर्षनदीना ॥ इत्यादि भक्तिनिरूपणजानो सो विविधविधानकी भक्तिनिरूपण वो क्षमा क्षमा कही कोई अपराधकरै ताकोसहिजाइ वो दया जोमनवचनकर्म से पराये को दुःख न देना सो दया सो ये तीनिउँ भक्तिनिरूपण वोक्षमा वो दया तंतरूप अमराईमें विताननाम छाइरहीहै २४ ॥

संयमनियमफूल फल ज्ञाना हरि पद रतिरसवेदवखाना २५

टी० । जैसे उस अमराईमें अनेकरंगके फूलफूलेहैं तैसे संत सभा में संयम नियम दश दश जो हैं संयम कही अहिंसा १ सत्य २ स्तेय ३ ब्रह्मचर्य ४ दया ५ क्षमा ६ नम्रता ७ धृति ८ अल्पभोजन ९ शौच १० पुनिनेम शौच१ होम२ तप ३ दान ४ विद्याध्ययन ५ इंद्रिय निग्रह ६ व्रत चांद्रायणादि ७ उपवास ८ मौनता ९ त्रिकालस्नानसंध्या १० (प्रमाणगायत्रीभाष्यश्लोक) अहिंसासत्यमस्तेयंब्रह्मचर्यंदयार्जवं॥ क्षमाधृतिमिताहारः शुचिश्चसंयमादश ११ शौचेज्याचतपोदानंस्वाध्यायोपस्थनिग्रहं ॥ व्रतोपवासमौनानि स्नानंचनियमादश २ एते संयमनियमफूलहैं (पुनः) उस अमराईके फूलनमेंफललगेहैं वो फलमेंरसहै तैसे इससंतसभा अमराई के संयमनियम फूलनमें ज्ञानफलहै जैसे फूलमें फललगै तबफूलशोभित होइहै जो फलनलगा तौ फूलवृथाहै तैसे संयमनियमकरैसे जो ज्ञानहोइ तौ संयमनियमशोभितहै जो संयमनियम बहुतकिया वो ज्ञाननभया तौ

जानौ संयमनियमवृथाहै वो हरिपदमेंरति नामप्रीति सो ज्ञान रूप फल को रसजानौ यह वेदकहाहै कि जैसे फललगा वो पक्करसनभया तौ फल कैसोलागतहै मिष्ठनहीं तैसेज्ञानभया वो हरिपद प्रीतिनभई तौ वहज्ञान अशोभितहै २५ ॥

औरौ कथा अनेक प्रसंगा तेशुकपिकबहु बरण बिहंगा २६

टी० । जैसे उस मानसरकी अमराईमें अनेकवर्णके पक्षी शुक पिकादिरहतेहैं तैसे इसमानसरके आसरे जो संतसभा अमराई है तिसमें जो औरकथापुराणादिके अनेकप्रसंग कहतेसुनतेहैं सोई अनेकरंग के पक्षी हैं इहां शुकपिकादि पक्षीनकी वो औरोकथाप्रसंगकी तुल्यता इसदेशमें है कि जैसे अन्य स्थानके पक्षी आइकरि मानसर में चोंचभरि जल पीकरि तनकअमराईमें बिलमें फेरि अपने स्थानको गये तैसे अनेकन कथा को प्रसंग जब रामचरित मानसहोनेलगा तब कोईप्रसंगपाइकरि दृष्टांतहेतु वा कोई प्रमाणहेतु कहेजातेहैं सोई चोंचभरनाहै वो कुछदेर संत सभा अमराईमें बिलमि परस्पर कहतसुनत फेरि जिस ग्रंथ में आये तहां को गये लक्ष्य औरकथाप्रसंगका लिविदधोचिहरिचंदकहानी (पुनः) लिविदधीचिवलिजोकछुभाषा(पुनः)परशुरामपितुआज्ञाराखी । मारीमातु लोकसब साखी (पुनः) तनययथातिहियौवनदयऊ । इत्यादि प्रसंग जहांजहांहोइ सो औरोकथाजानो २६ ॥

पुलकबाटिकाबागबन सुखसुबिहंगबिहारु ॥
मालीसुमनसनेहजल सींचतलोचनचारु २७

टी० । जैसे उस अमराई में तीनि परिखा हैं प्रथम वाटिका नाम फुलवारी जामें केवल फूलै फूले हैं रस में सुगंध दारता में भँवरा वो राय मुनिआं आदि छोटोछोटो पक्षी जोकेवल फूलैका रसग्रहण करत हैं वो दूसर परिखा बाग जामें आंम जामनि कटहर बड़हर तामें फल लगे हैं तिस फल को अनेकशुकादिपक्षी ग्रहणकरतेहैं वो तीसर परिखा-वन है जामें अनेक तरह के वृक्ष हैं अनेक तरह के फल हैं तिन्ह फलन को बनके अनेक तरहके पक्षीग्रहण करतेहैं तैसेइस मानसरके संतसभा रूप अमराईमें तीनि भांतिकी पुलकावली जोहै सोई बाटिका बागबन है तीनि भांतिकी पुलकावली कवनिहै तहां सुनौ जैसे अमराई समष्टी एकहै फेरि उसीमें तीनि परिखाकहे बाटिका बाग बन तैसे संत सभा

समष्टी एक है फेरि उसमें त्रिकांडी है भक्तिकांड ज्ञानकांड कर्मकांडसो जो भक्तिकांडकी पुलकावली है सो बाटिका नाम फुलवारी है जैसे फुलवारीमें सबदिन जलकी नहरि लगीरहेहै तैसे भक्तिकांडकी पुलकावली में बारबार अश्रुपात होत है ताहीते पुलक रूपबाटिका बारहमास फूले रहते हैं तिस पुलकरूप फूलमें श्री सीतारामजूके गुणस्वरूप माधुर्यसोईरसहै तामें जो अपने भावनानुकूल भयो सुखसोई रायमुनिआंआदिक विहंगहै सो विहारपूर्वक माधुरी रस को ग्रहण करैहै वो जो ज्ञानकांडकी पुलकावलीहै सो बागहै कि जैसे बागमें छह महीना बर्षदिन में कहूं एकदिन जलदिया जातहै तैसे ज्ञानकांड में पुलकावली थोरी है तामें जीवन्मुक्त फल है ब्रह्मानन्द रसहै वो अपनी बुद्धिके अनुकूल जो भयो सुखसो शुकादि विहंगहै सो ब्रह्मानन्दमें बिहरैहैं वोजो कर्मकांडकीपुलकावली है सो बनहै कि जैसे बनकोऊ सींचत नहीं दैवके भरोसेहोतहै तैसे कर्मकाण्डकी पुलकावली दैवाधीनहै जामें अर्थ धर्म काम उत्तम मध्यम निकृष्ट फल लगेहैं वो अहंकार पूर्वक जो भयो सुखसोई उत्तम मध्यक निकृष्ट तीनिभांतिके विहंगहैं फलनको भोगरूप रस ग्रहण करैहैं वो तीनिउँके सुन्दर मनसोई मालीहैवो तीनिउँके भावानुकूल जोसनेह सो जलहै नेत्रघटहै चारुनाम सुन्दर तेहिसेलैले नामनेत्र भरिभरिपुलक रूपबाटिका बागबन सींचतेहैं २७ ॥

जे गावहिं यह चरित सँभारे तेयहिताल चतुर रखवारे २८

टी० । जैसे उत मानसर में देवतन के प्रवीन रक्षक बैठेहैंचहुं फेरको जौनेकोऊ जलको बिगारे नाथूंकि खकारिकै तैसे इतमानस रामचरित को जे सँभारिकै गावतेहैं तेई यह रामचरित मानसके चतुर रखवारे हैं इहां संभारब कहो स्मरण को जे रातिउदिनयही में लगे रहतेहैं विचारत रहतेहैं तेई पूर्बा परसँभारे रहते हैं कि जामें कोई बिजाती एक चौपाई वा एक दोहा लेइकरि आनको आनै अर्थ करै सोई बिगारना तुल्य है सो तिसकी वाणी को पूर्बा पर प्रसंग से खंड करि देना सोई रखवारी है २८ ॥

सदासुनहिंसादरनरनारी तेइसुर बरमानस अधिकारी २९

टी० । इहां ताईं तदाश्रय कहि अब अधिकारी अनधिकारी मार्ग की कठिनाई कठिन ताको निवारण सब कहतेहैं कि जैसे उस मानसर में

देवता स्नान पान करतेहैं वोई अधिकारीहैं तैसे इस मानसरके जे नर नारि आदरपूर्बक सदासुनतेहैं तेईदेवरूप अधिकारीहैं २६ ॥

अतिखलजेविषयीबककागा यहिसरनिकटनजाहिंअभागा ३०
संबुकभेक सिवारसमाना इहांन विषय कथा रसनाना ३१
तेहिकारण आवतहिय हारे कामी काकबलाक विचारे ३२

टी० । अब अनधिकारी कहतेहैं कि जैसे उस मानसमें कउवाबकुला नहीं जाते काहेतेकि उनका आहार जो घोंघीसिवारमिढुका सोउहांनहीं है ताते हारिकैनहींजाते इहां तीनिचौपाईकी एकही अन्वय जानब तैसे इस मानसमें जे अति खलहैं अतिखल कहीकिजे समुझतेहैंमानतेनहीं अपनो हठ करतेहैं ते अतिखल तेई काकहैं वोजे विषयीहैं अत्यंतविषय में आसक्त ते बकुलाहैंते दोऊखल व बिषयी अभागेकाक वलाक यहिसर के निकटनहींजाते काहे कि घोंघी सिवार मिढुका के समान यहां नाना विषयरस की कथानहींहैताते आवतसंतेहृदयते हारिजातेहैं काहेते बिचारेहैं नाम उनका चारायहां विगतहै नाम नहींहै ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

आवत यहिसर अतिकठिनाई रामकृपाबिन आइनजाई ३३

टी० । अब कठिनता कहतेहैं कि जैसे उस मानसके जाना कठिनहै इष्टकीकृपाबिना नहींजाइसकै तैसे इसमानसके आवतअतिकठिनाईहै बिना श्री रामचन्द्रकी कृपानहीं आयाजाइहै ३३ ॥

कठिनकुसंग कुपंथकराला तिनकेवचनव्याघ्रहरिव्याला ३४

टी० । जैसे उसमानसकी रास्ता कठिनहै व मार्गमें व्याघ्र सिंह सर्प हैं ताते करालहैं तैसे इस मानसर के जो कुसंगी स्वार्थीहैं तेई कठिन पंथहैं व तिन्हहीं कुसंगिनके वचनजो हैं सोई सिंह व्याघ्र सर्प हैं सोई करालहैं जे अपनेते बड़ेहैं ते डाटिके बन्दकिये तिन्हका वचन सिंहहै व जे अपनेते बरोबरिकेहैं ते ईर्षाकरिकै बन्दकिये तिन्हको वचन व्याघ्रहै व जेअपनेतेछोटेहैं ते अनेकतर्ककहि बन्दकिये तिन्हकेवचन सर्पहैं३४॥

गृह कारज नाना जंजाला तेअति दुर्गम शैल बिशाला ३५

टी० । जैसे उस मानसके रास्तामें बड़ेबड़े पहाड़हैं ताते मार्ग अति कठिन हैगयो न पहाड़चुकै न रास्ता वराइ तैसे इस मानसके कुसंगी

रूप रास्तामें जो नानागृहकार्यको जंजालहै सोई बड़ेबड़े पर्वतहैं दुर्गम जो दुःखौंकरिकै गम्यनहींसोनगृहकार्यचुकै न कुसंगिन सेछुट्टी मिलै३५॥

वनबहुविषममोहमदमाना नदीकुतर्कभयंकरनाना ३६

टी० । जैसेउस मार्गमें विषमवनहै तैसे कुसंगिन में मोह मद मान सोई विषमवनहै कि गृहकार्यसे चाहे खालिउमिलै पर मोह मद मान ये बड़े कठिनहैं व जैसे उस रास्तामें भयंकर नदीहै तैसे इसमार्गमें जो नानाकुतर्कहैं सोई भयंकरनदीहै कुतर्क कही भाषा कथा सुनना (पुनः) शूद्रकेमुखसे कथा सुनना (पुनः) वक्ता अभिमानीहै (पुनः) हमको कोऊ मानदेइ कि नहीं इत्यादि कुतर्क ३६ ॥

दो० जे श्रद्धासंबलरहित नहिँसन्तनकर साथ ॥
तिन्हकहँमानस अगमअति जिनहिंनप्रियरघुनाथ३७

टी० । जैसे उसमानसके जाइबेमें रास्ताकठिन विशालपहाड़ कराल सिंह व्याघ्र सर्प (पुनः) नदी वन विषमहै परन्तु तीनवस्तु जो होइ तौ ठेलिपेलि जाइसकै तीनवस्तु कौनकी पास खर्चहोइ अथवा कोई बड़े आदमीको संगहोइ अथवा उससरके अभिमानी देवतासे प्रीतिहोइ जो यहि तीनमें एकौ न भयो तौ मानसकोजाना अगमहै तैसेइसमानसरके आइबेमें कुसंगी व तिनके कठिन वचन व गृहकार्य को नानाजंजाल व मोह मद मान व कुतर्क एते विषमहैं परंतु जो श्रद्धारूप खर्च अथवा सज्जननकोसंग अथवा इसमानसके अभिमानी जो रघुनाथ तिन्हसेप्रीति होइतौ इसमानसमें आइसकैजो श्रद्धा न भई व सज्जनोकोसंग नभयो व रघुनाथप्यारेनहींहैं तिन्हगरीबनकोइसमानसकाआनाअतिअगमहै३७॥

जोकरिकष्टजाइपुनिकोई जातहिंनींदजुड़ाईहोई ३८

टी० । जैसे उहां सर्व सहाइ हीन कष्टकरिकै जो जाइ तौ जातही जूड़ीतापहोइ तैसे इहां सर्व सहाय हीन जो ईर्षारूप कष्टकरिकै आवै तौ आवते नींदरूपजुड़ाईहोइ जुड़ाईकही जूड़ीताप ३८ ॥

जड़ताजाड़ विषमउरलागा गयहुनमज्जनपावअभागा ३९

टी० । जैसे उहां जूड़ीकेमारे जाड़लगा गयहुपर मज्जन न पाया तैसे इहां नींदकेमारे विषमकही तीक्ष्ण जड़ताआइगई सोआवनेहुपर श्रवण नाम सुनानहीं ३९ ॥

करिनजाइ सरमज्जनपाना फिरिआवैसमेतअभिमाना ४०

टी० । जैसे उहां जाइके मारे स्नान पान नहोंकरिगयो मैलके सहित प्यासा फिरिआयो तैसे इहां जड़ता के मारे श्रवण धारण तौ भयो नहीं अभिमानरूप मैलकेसहित आशारूपी पियासा फिरि आयो ४० ॥

जोबहोरिकोउपूंछनआवा सरनिन्दाकरिताहिबुझावा ४१

टी० । जो कोई उनसे बहोरिकै पूंछनेआया कि मानसका हालकहो तौ वे अभागे दोनोंसरकेजानेवाले दोनोंतरको निन्दाकरिकै समुझायदिये एकनेकहा कि उतै मानसमें क्याहै जाइनमरनाहै वो पुरइनि बहुतसे है वो जल तौ जैसो इहां तैसो उहां वो इतै मानसमें क्याहै नींदनमरनाहै वो चौपाईतौहै वो रामकथा तो हम घरहीमें कहिलेतेहैं व्यासतौ लोभ केमारे कथा बांचते हैं यह सुनिकरि जिसको जाने आवने को मन रह्यो सो भी मिटिगयो ४१ ॥

सकलविघ्ननहिँब्यापहिंतेही रामसुकृपाविलोकहिंजेही ४२

टी० । एते रास्ता आदि वो जाइअंत प्रयंत जोविघ्न सो तेहिप्राणीको नहींव्यापतेहैं जेहिके श्रीरामसुष्ठु कृपादृष्टिसे देखैं ४२ ॥

सोइसादरसरमज्जनकरई महाघोरत्रयतापनजरई ४३

टी० । सोईप्राणी सादरकही आदरसंयुक्त रामचरित मानसमें मज्जन नाम सुनतेहैं ते महाघोर जो त्रैताप देहित दैविक भवतिक तिसमें नहीं जरतेहैं मानसके प्रतापते सदाशीतल रहतेहैं ४३ ॥

तेनरयहसरतजहिंनकाऊ जिनकेरामचरणभलभाऊ ४४

टी० । ते प्राणी यह मानसरको कबहूं नहीं तजते के जिन्हकेश्रीसीता रामपद कमलमें भलोभाव नाम प्रीतिहै ४४ ॥

जोनहाइचहयहिसरभाई तौसतसंगकरौमनलाई ४५

टी० । अब श्री गोस्वामीजी महाराज मानसके प्राप्तिके मुख्य उपाय कहतेहैं कि जो कोई यहि मानसमेंहो भाई नहावाचाहै तौ मनलगाइकै सतसंगकरै ४५ ॥

असमानसमानसचषचाही भइकबिबुद्धिबिमलअवगाही ४६

टी० । यहां ताईं जैसो मानस को स्वरूप है सो कहे वो अधिकारी अनधिकारी कहि साधनबताये अब जौनेहेतु नाम कारणकरिकै जगत् में प्रचारभयोहै सो कहतेहैं कि असमानस कसमानस जस ऊपरकहिआयेहैं संबादरूप घाटसेलेइ वो सँभारिकै गावनेवाले चतुर रखवारताईंसे ऐसे मानसको जब मानसनाम हृदयके ज्ञानविरागरूप चषुजो नेत्र तिन्ह से चाहीनाम देखा तब जो शंभुके प्रसादसे कबिकी बुद्धि हुलसी रही सो अवगाहन करतिभई नाम गोतालगावति भई तब बिमल नामस्वच्छ भई जो पूर्वकहा कि मतिअतिनीचसोशंभुप्रसादसे ऊंचीभई जबमानस को देखा वो गोता लगाया तब विमल होइगई ४६ ॥

भयौहृदयआनंदउछाहू उमँगेउप्रेमप्रमोदप्रबाहू ४७

टी० । वोजबगोतालगायाबुद्धिनिर्मलभई तब हृदयमें आनंदकोउत्साह भयो वो जब उत्साहभयो तब वह जो भरोभयोमानससोप्रेमप्रमोद रूप प्रबाहउमँगेउ जगत्मेंप्रचारहोनेकोहेतयहीहै कि जबऐसेमानसको मानस के नेत्रन से देखि स्नानकरि बुद्धि निर्मल भई तब मारे उत्साह के न रहागया प्रेम प्रमोदरूप प्रबाह उमँगेउ सो प्रबाह कविता रूप नदी ह्वै-करिचली तब जगत् में प्रचार भयो (इत्यर्थः) शंका ॥ पूर्व गोस्वामीजी कहा कि जो मानस महादेवजू पूर्वहीकीनफेरिकाकभुशुंडिहि दीन्ह तिन्ह से याज्ञवल्क्यमुनि पाये ते भरद्वाज प्रतिगाये सो कहू से हमारे गुरू जी पाये तिन्हसे हम सुने सो भाषाप्रबद्ध करते हैं वो अब कहते हैं कि वेद पुराण समुद्रसे लेकरि साधू मेघ वर्षे तब मानस हृदय भरा सो उमँगि करि कवितारूपनदी चली तौ जो गुरूसे सुना सो कहांगयो यहतौ पूर्व्व वचनमें विरोधभासतहै॥ समाधान॥सुनो यहजो श्रीगोस्वामीजी सावयव मानसको रूपक कहेहैं सो उसमें चित्तदेउ कि जैसे पूर्वमानसमें जलपूर्ण निर्मल भरोहै उसीमें मेघको जल प्राप्ति भयो तब वह जो जलभरारहा सो उमँगेउ उमँगिकैनदीचलीतैसेजो अपनेगुरूजीसे महादेवकृत मानस सुने रहे सो हृदय स्थल में भरारहा जब ऊपरसे साधुनके मुखसे जहां तहां सुने सो जौने क्रमसे अपने गुरू से सुनेरहे तौने सेविति क्रम सुने सोई मलिन होइगयो जब मनन किये तब देकैदेखि पर्‌यो तबअच्छी तरहसे वहजो गुरू की कहनीरही सो उसमेंसावयव मानसकोरूपदेखि पर्‌यो तब आनंद ह्वै वहीजोगुरूकी कहनी सो उमँगेउ तब कविता रूप नदी चली ४७ ॥

चलीसुभगकवितासरितासो रामविमलयशजलभरितासो ४८
सरयू नाम सुमंगल मूला लोक वेद मत मंजुल कूला ४६

टी० । अब यहांसे सावयव साक्षात् सरयू वो कविता सरयू को अभेद तद्रूपका लंकार करिके कहतेहैं यहांद्वै चौपाईकोएकहीअन्वय जानबकि जैसे वह मानस उमँगेउ तबनदी चलीसो नदीको नाम श्री सरयूजी वो सरयूजी को द्वै करारहै तैसे श्री गोस्वामी जी महाराज कहतेहैं कि जब आनंदके उत्साहसे प्रेमप्रमोद यहमानसउमँगेउ तबकवितारूप नदीबहि चलीसो कविताको नाम सरयूपरचो सोकविता सरयू रामजूके विमल यशरूप जलसे भरिता नाम परिपूर्ण भरिके चलीहै वो दोनौंसरयू मंगल कौ मूलहै वो लोकमत वो वेदमतजो कवितामेंकहे जाहिँगे सोईकविता सरयूके दोनोंकरारहैं जैसेदोनों करारकेबीचमें सरयूको प्रवाह चलोजात है तैसे लोकमत वो वेदमत दोनोंके बीचमें कवितासरयू चलैगो वो जैसे सरयू एककरारे लगिके चलतीहैं तहांजल गहिरा रहतहै वो दूसरे करारे उथल रहतहै तैसे कविता सरयू जोहैं सोवेदमतकिनारे लगिके चलतीहैं तहां रामयश जलगहिरारहतहै वो लोकमतकिनारे ऊथलरहतहै ॥लक्ष्य॥ लोकमतको नांदीमुख श्राद्धकरि जातकर्म सबकीन्ह (पुनः)धरियनाम जो मुनिगुनिराखा (पुनः)वनमृगयानित खेलहिंजाई (पुनः) कौतुकबिनोदप्रमोद प्रेमनजाइ कहिजा नहिंअली (पुनः) लोकरीति जननीकरहिंबरदुल हिनि सकुचाहिं॥इत्यादि जहांलौकिकप्रसंगपरै तहांलोकमतजानो॥लक्ष्य॥ वेदमत बारबारशिशु चरणनपरहीं (पुनः) जोआनंदसिंधुसुखराशी। सोकरते त्रैलोक्यसुपासी ॥ सोसुखधाम राम असनामा । अखिललोकदायक बिश्रामा (पुनः) जे मृगरामबाणकेमारे । तेतनुतजिसुरलोकसिधारे(पुनः) सुरलखे रामसुजान पूजे मानसिक आसनदए (शंका) यह वेद मत कैसे उत्तर॥ अंतर्यामित्वगुण से इत्यादि प्रसंगवेद मत जानो सोयह द्वै बात बोधहेतु लिखेनतु यहकविताईग्रंथभरि लोकवेदमतकेभीतर है ४८।४६ ॥

नदीपुनीतसुमानसनंदिनि कलिमलतृणतरुमूलनिकंदिनि ५०

टी० । कवितासरयू वो साक्षात् सरयू दोनों पुनीतनदी हैं काहेते कि सुकही सुष्टुमानस नंदिनिहैं वो कलिमलजो पापसोहै तरु तृण तिसको मूल सहित निकंदिनि नाम नाशकरनेहारी हैं दोनों सरयू ५० ॥

दो० श्रोतात्रिविधिसमाजपुर ग्रामनगरदुहुंकूल ॥

संतसभाअनूपमअवध सकलसुमंगलमूल ५१

टी० । जैसेसरयूके दोनों किनारे पर पुर गांव नगर बसतेहैं पुरकही जो दशबीसघरकेजोसाळसाळबसत उजरत रहतहै वो गाँवकही जोद्वै चारि सौघरहोइँ सो कछूकालमेंबसत उजरत रहत है वो नगरकहीहजारघरसे लेइ अनगनतिनहोइ सो बहुकालरहतहैकछुबड़ा बिघ्नपाइकरिउजरतहै वो श्रीसरयूकेकिनारेपरश्रीअयोध्याजीहैसोएकैहैवो कोईकालमेंउजरैनहीं तैसे कविता सरयूकेकिनारेपर पुरग्रामनगरकाहै तहांसुनौ जो श्रोतनकी समाजहैसो त्रिधाहै एकआरतश्रोताहै जे अपनेआरतिके निवित्यर्थ कथा सुनतेहैंसोपुरहै जो द्वै चारिदिनसुने फेरि द्वै चारिदिन छोड़दिए तामेंद्वै भेदएकलोकआरत एकपरलोक आरतसोजोलोकआरतहैंसो लोकमत के किनारेपरबसेहैं वो जो परलोकआरतहैं सो वेदमतके किनारेपरबसेहैं वो दूसर अर्थार्थी श्रोताहैं जे अर्थके हेतुकथा सुनतेहैं तेग्रामहैं जो कछूकाल सुनतेहैं फेरि कछुकाल दूसरे साधन में लगि जाते हैं तामें द्वै भेद एक लोकार्थीहैं अन्न वस्त्रके सोलोक मत किनारे परबसतेहैं वो एक परलोक स्वर्गादिकके अर्थी हैं सो वेदमतकिनारेपरबसेहैं वो तीसरे जिज्ञासू श्रोता हैं जो वस्तु जानने केहेतुकथा सुनतेहैं सोनगरहैं जो सर्व कालसुनते हैं कोई बड़ो विघ्न आइजाइ तबैछूटै तामें द्वै भेद एक लोककी चतुराई सीखबेहेतु सुनतेहैं ते लोकमतकिनारे परबसेहैं वो एक रामतत्त्वजानिबे केहेतु सुनते हैं तेवेद मत किनारेपरबसेहैं इति ॥ त्रिबिधाश्रोतावो ज्ञानी संतनकी सभाजोहै सोकैसे ज्ञानीसंतहैं किजिन्हकोकोईपक्षार्थकी चाहना नहीं केवल रामयश सुनते हैं सोई अनूपम श्रीअयोध्याजीहैं सोसर्व काल बनेरहतेहैं कैसो विघ्न आवैतौवे नहीं छोड़ते (प्रमाण)कोटिबिघ्न जिमि संतकहँ तदपि नीतिनहित्याग ॥ सोसंतवेद मत किनारे पर सकलमंगल कोमूल श्रीअयोध्या विषैबसेहैं इसमेंयहभावहै किजैसेश्रीसरयूजी अयोध्यै के हेतु आईहैं वो जितना माहात्म्यअयोध्यामें है तितना अनते नहीं वो श्रीसरयूकरिकै श्रीअयोध्यैकी शोभाहै परस्पर मिलिरहेहैं अयोध्यै में सरयू वो सरयूतट अवधतैसे कबिता साधुसमाज केहेतुबनीहै(प्रमाण)साधुसमाज भणित सनमानू । वो साधु इससमाजमें शोभादेतहैंवो जैसाशोभा महत्त्व साधुसमाजमेंहै तैसी अनत नहीं वो एहीकरिकै साधुसमाजभी शोभितहै ऐसपरस्पर मिलेहैं रामकथा वो साधुसमाज ५१ ॥

रामभक्ति सुरसरितहिजाई मिलीसुकीरतिसरयुसुहाई ५२

टी० । जैसे सरयू मानसतेचली वो कुछ दूरिचलि सुरसरिता जोगंगा जी तिनमें जाइमिली तैसेकीर्त्ति सरयू रामभक्ति सुरसरीमें जाइ मिली अबइहां पर यह बात समझनेकी अपेक्षाभई किराम यश जलको क्या स्वरूपहै वो वही यशकी कीर्त्ति रूपनदीचली तिसका क्यास्वरूपहै तहां कैलाशके प्रकरणमें चारिदोहामें रामयशकोस्वरूपकहाहै । अगुणहिँसगुणहिँ नहि कछुभेदा॥यहि चौपाईसे लेइकरि वो । सुनिशिवके भ्रमभंजन बचना । यहां पर्यंत आगेयहीके भीतरजो कछु तलावके प्रकरणजे कहि आएहैं सो सब साहित्व जानो वो यही रामयश उमँगि कीर्त्तिरूप प्रबाह चलीसोकहांसे॥सुनुगिरिजाहरिचरित सुहाये।विपुलविशदनिगमागमगाये॥ इहांसेचली वो रामभक्तिसुरसरीमेंमिली कि जब स्वायंभुवमनु महाराज सबकेभक्ति को निराकरण करि एक श्रीरामभक्तिको दृढ़कीन्ह (प्रमाण) विधिहरिहरतपदेखिअपारा ।मनुसमीपआयेबहुबारा ॥माँगहुबरबहुभांति लुभाये ।परमधीरनहिंचलहिंचलाये ॥ ऐसीअखंडवृत्तिश्रीरामभक्तिमेंलगी रहै कि यहसबके वचन महाराजको सुनै न परै यह राम भक्तिरूप सुरसरिमें कीर्त्ति सरयूजायमिली अब जो कोईकहै कि तुमतौ सुनुगिरिजा हरिचरित सुहावा ॥ यहांसे कीर्त्ति सरयू कहतेहौ तौ वर्णानां इहां से लेइकरि वो असनिज हृदयविचारि इतनी कविताई कहां डारौगे तहां सुनौ यहतौ हमपहिलेही कछुतड़ागके प्रकरणमेंकहिआयेकछुयहीकीर्त्ति सरयूके रूपकमें कहैंगे ताते यहिबातको अच्छीतरहसे समुझो ५२ ॥

सानुजरामसमरयशपावन मिलेउमहानदसोनसुहावन ५३

टी० । (पुनः)जैसे सरयू गंगा मिलिचलीआगे आइकरिमहानद शोणभद्र बड़ो सुहावन सो मिलो तैसे अनुजजो श्रीलक्ष्मणजू तिन्हके सहित श्रीरामजीको समरयश जो पावन सोई सुहावन महानद शोण आइ मिलो (शंका) समरयश वो पावन कैसे (समाधान) श्रीरामयश तौ सबै पावनहै परंतु समरयशपावन इससेकही कि जामें सर्वधर्मकोनिबाहभयो त्रैलोक्य आनन्दभयो देवता सुवासबसे ऋषिसब निष्कंटक भये ताते पावन (पुनः शंका) कौनअंगलेइकरि शोणकियो समर यशकी एकता है (समाधान) जैसे शोणकीधारा बड़ीतीब्रहै वो जब बहत है तब भयावन लगतहै परंतु मगह ऐसीधरती अपावनीको पावनकियो तैसे समरदेखत

में सुनतमें बड़ोतीब्र भयावनहै परंतु बड़ेबड़े पापीराक्षस मोक्ष भये हैं यहअंगते तुल्यता भई ५३ ॥

जुगविचभक्तिदेवधुनिधारा सोहतिसहितसुविरतिविचारा५४

टी०। जैसे सरयू शोणके बीचमें गंगाजी शोभितहैं तैसे सुंदर वैराग्य वो विचारके सहित भक्तिरूप देवध्वनि कीर्त्तिरूप सरयू वो समर यश रूप शोणकेबीचमें शोभा देतीहैं जो कहौ भक्तिमें विरति विचार क्याहै तहां सुनो जब श्रीमहाराज स्वायंभुवमनु विचार कीन्ह कि । होइनविषयवि- रागभवनबसतभाचौथपन।हृदयबहुतदुखलाग जन्मगयोहरिभक्तिबिनु॥ यहजोठीककीन्ह सो विचारबोबिचारकरिकै तब । बरबशराजसुतहिनृप दीन्हा। नारिसमेत गवन वनकीन्हा ॥ यह वैराग्यहै सो विचार विरागके सहित जोभक्ति सो कीर्ति यशके मध्यमें शोभादेतीचली ५४ ॥

त्रिविधितापत्रासकत्रिमुहानी रामस्वरूपसिंधुसमुहानी ५५

टी०। (पुनः) जैसे मानसते सरयू चली गंगामें मिलिफेरि शोणमिले तब त्रिमुहानी भई सोत्रिमुहानीकैसी है कि त्रयतापकी त्रासकरनेवाली सो तीनिउँमिलिकै समुद्रके सन्मुखचली समुद्रकोमिली फेरिमिलिकैकुछ दूरि धारिचलीगई तैसे कैलास प्रकरण चारि दोहा मानसते कीर्त्तिसरयू चली वो जोस्वायंभुवमनुविषे अखंड श्रीरामभक्ति तहां मिलिफेरि अनुज के सहितरामजीके ताडुकामारीच सुबाहुकै समरकै यशपावन शोण सो मिल्यो तब त्रिमुहानीभई सो त्रिमुहानी तीनिउँतापको त्रासकरत श्री रामचन्द्रकोराजसिंहासनपरविराजमान स्वरूपको सन्मुखचलीसो मिली फेरि जो पीछे नित्य चरित वर्णनहै कौनकी। प्रथम तिलकवशिष्ठ मुनि कीन्हा। इहांते लेइकरि देवस्तुति वेदस्तुति शिव स्तुति कपिनकी विदा इहां प्रयंत राज्याभिषेकहै आगे नगरका वर्णन पुरबासिनका वर्णन उप- वनका जाना पुरबासिन को समुझावना वशिष्ठजी को एकांत में आवना शीतल अमराई को जाना यह सबनित्य चरित्र को वर्णन सो समुद्र में मिलिकुछदूरि धार निकलजानाहै ५५ ॥

मानसमूलमिलीसुरसरिही सुनतसुजनमनपावनकरिही ५६

टी०। अब कछु दोनों त्रिमुहानीको फल कहतेहैं किजैसे मानसमूल जो सरयू जिन्हको मानसहै मूलसो कहावै मानस मूलसो सुरसरिहि

मिली सो स्नान पान करने से जनमन पावन करती है तैसे रामयश मानसहै मूल जिसको ऐसी कीर्त्ति सरयू रामभक्ति सुरसरिमें मिलीसो सुनतसंते सुजननके मनकोपावन करिहि निश्चयकरिकै ५६ ॥

बिचबिचकथाविचित्रबिभागा जनुसरितीरतीरबनबागा ५७

टी० । अब यहांते श्रीगोस्वामीजी महाराज सिंहावलोकन करि कीर्त्ति सरयू वो साक्षात् सरयूको रूपक कहतेहैं कि जैसे सरयूके तीरतीर बनबाग है कछु जलको स्पर्श किये तैसे कीर्त्ति सरयूके तीर तीर नाम लोक वेदमत दूनों तीरपर बीचबीच में विचित्र भागा विभाग की कथा सोई जलको स्पर्श किये बनबाग तुल्यहै जैसे बनबाग करिकै नदी की शोभा होतीहै तैसे बीच बीचमें विचित्र बिभाग कथासे कीर्त्ति शोभित होतीहै छोटाप्रसंगबागबड़ाप्रसंगबनजानो(लक्ष्य)बिचबिचकथाप्रसंग को जबमानसते कीर्त्तिसरिचली तबबीचमें जलंधरकी कथाकाप्रसंग परासो छोटाहैसो बागफेरि नारदके मोहकाप्रसंगवो बड़ाबागहै(पुनः)भानुप्रताप का प्रसंगबन है (पुनः)रावणको जन्म दृढ़विजय(पुनः)देवतन का विचार यह वेदमत तीरके बनबागहैं(पुनः)महादेवके विवाह के उपरान्त जेवनार वो दायज वो बिदा समयमें रोवना यह सब लोकमत तीर के बन बाग हैं यहीरीतिसे जहां लौकिक प्रसंगपरै तहांलोकमत तीरकेबनबाग वो जहां बैदिक प्रसंगपरै तहां वेदमत तीरके जानो (पुनः)शिवपार्वतीके विहारसे लेइकरि षट्मुख जन्मकर्म एतेप्रसंग कीर्त्ति सरयूके तीरकेबन बागहैं यही रीतिसे सातोंकाण्डमें जानौ जहां प्रसंग छोड़ि दूसरी कथा कहनेलगे उसको पूराकरि फेरि प्रसंग मिला कहिचले जैसे अयोध्याकाण्डमें कहाकि । तसमगु भयेउन रामकहँ जसभा भरतहिंजात। यहां से प्रसंग छोड़िकुछ मगुबासिनकी कहिफिरि देवदरबार की कहि प्रसंग मिलायेकि। यहिविधि भरतचले मगुजाहीं ५७ ॥

उमामहेशविवाहबराती तेजलचरअगणितबहुभांती ५८

टी० । जैसे सरयूजीमें अनेक भांति जलचर हैं तैसे कीर्त्ति सरयू में महादेव पार्वतीके विवाहके बरातीजोहैंसो अनेकभांति के अगणित जलचरहैं जैसे जलचरमेंकोई देखनेमें सुंदरहै कोईभयावनहैं तैसे उमामहेश के विवाहके बराती ब्रह्मा विष्णु इन्द्रादिदेवता सोतौ देखनेमें सुन्दर हैं वो महादेवकी समाज भयावनहै ५८ ॥

रघुबरजन्मअनन्दबधाई भवँर तरंग मनोहरताई ५९

टी० । जैसे सरयूजो में भवँरवो तरंगहैं तैसे रघुबर जो श्रीरामतीनिउँ भाइनके सहित तिनके जन्मकी आनंदवो बधाईजो बजतीहैं सोईमनोहर भवँर वो तरंगहैं आनंद जोहै सो भवँरहै काहेते कि जैसे भवँरमेंपरे से निकसि नाहीं सकत डूबिजातहै तैसे रघुबर जन्मके आनंद में सबमग्न होइ गये इहांतक मग्न हैं कि ॥ मासदिवस कर दिवसभा मर्म न जानै कोइ ॥ रथसमेतरबिथाकेउ निशाकवनविधिहोइ ॥यहभवँरतुल्यहैवोअनेक प्रकारकी बधाई बजतीहैं सोई तरंगहैं जैसेतरंगमें शब्दहोतहै तैसेबधाई में शब्दहै अबआनन्द बधाईको लक्ष सुनो ॥ अवधपुरीरघुकुलमणिराऊ । (सेलेइकरिवो)अनुपम बालक देखिनजाई । रूपराशिगुणकहिनसिराई॥ पर्यंतजानो ५९ ॥

बालचरित चहुंबन्धु के बनज बिपुल बहुरंग ॥
नृपरानीपरिजनसुकृत मधुकरबारिबिहंग ६०

टी०।जैसे सरयूमेंबहुतरंगके कमलफूलेहैं तिन कमलन पर मधुकर बैठि रसलेतेहैं वो अनेकप्रकारके विहंगसुगन्धलेतेहैं तैसे कीर्त्तिसरयूमें चारिउ भाइन को बालचरित्र जो अनेकतरह का कबहूँ आंगन में खेलत संते खम्भनमें परिछाहीं देखतेहैं कबहुँ घर घरजाइ आँखिमुंदवलि खेलते हैं कबहुँ गलिनमें गुल्ली डंडा खेलतेहैं कबहूँ शिकारको जाते हैं इत्यादि जोहैं सोई बहुरंगके कमलफूलेहैं तिन्हपरनृपजो श्रीचक्रवर्त्ती महाराजा दशरथजी वोश्रीमहारानी श्रीकौशल्या आदि सबरानी तिन्हकासुकृत जो है सो मधुकरहै जो लालन पालन चुंबन आलिंगन आदि सो रस लेना है वो परिजन जो परिवार के जन वो समस्त पुरवासिन के सुकृत जल विहंगतुल्यहैं जो अनेक तरहके चरित्र देखतेहैं सोई सुगंध लेना है अब बालचरित्रकालक्षणसुनो (मुनिजनधनसर्वसशिवप्राणा । बालकेलिरस स्यहिसुखमाना) इहांसेलेकरि वो (व्यापकअकलअनीहअज निर्गुणनाम नं रूप ॥ भक्तहेतुनानाविधि करतचरित्रअनूप) इहांपर्यंतजानो इहां जो बहुरंग कहाहै सो तीनिरसमें जानो दास्य सख्य वात्सल्य दास्य धूमरो रंगहै सख्य पीतरंग वात्सल्य चित्ररंग तिसका लक्ष एक एक चौपाई सुनो (बन्धुसखासबलेहिंबुलाई । वनमृगयानितखेलहिंजाई) यह सख्य रसपीतरंग है (बालचरित हरिबहुविधिकीन्हा । अति अनंददासनकहँ

दीन्हा) यहहास्यरसधूमरंगहै (भोजनकरतबोलजबराजा । नहिंआवहिं तजिबाल समाजा) यहवात्सल्य रस चित्ररंगहै ६० ॥

सीय स्वयंबर कथा स्वहाई सरितस्वहावनिसोछबिछाई ६१

टी० । जैसे सरयूमें छबिहै जाते स्वहावनिहै तैसे कीर्त्ति सरयू में श्री जानकीजीके स्वयंवरकी सुहाई कथा जोहै सोई स्वहावनिछबि छाइरही है स्वयंवरकथाका (लक्ष) (तबमुनि सादर कहाबुझाई) इहांसे लेइकरि (गौतमतियगतिसुरतिकरि नहिंपरशति पदपाणि) इहां पर्यंतजानोबीच में दसदोहा फुलवारीकी कथा तड़ागके प्रकरणमें रामसीय यश सलिल सुधासमके साथहै वो किंचित् किंचित् जल गुणके साथ कहैंगे सो गुण तौ जलके साथैरहतहै सो जानो ६१ ॥

नदी नाव पटुप्रश्न अनेका केवट कुशल उतर सविवेका ६२

टी० । जैसे सरयूमें नावहै उसके खेवनेवाले केवटहैं तैसे कीर्त्ति नदी में अनेक प्रश्न जो सुन्दर सुन्दरहैं सोई नावहैं वो तिन्ह प्रश्नके विवेक पूर्वक उत्तर जोहैं सोई कुशलनाम चतुर केवट खेवैयाहैं लक्ष प्रश्नोत्तरके (कहहुनाथ सुन्दरदोउबालक । मुनिकुलतिलककि नृपकुलपालक ॥ कह मुनि विहँसिकहेउनृपनीका । वचनतुम्हार न होइअलीका (पुनः निषाद को प्रश्न लक्ष्मण जीको उत्तर (पुनः) ग्राम वासिन्हको प्रश्न श्रीजानकी जीको उत्तर (पुनः) श्रीरामजीकोप्रश्न वाल्मीकिजूकोउत्तर(पुनः) लक्ष्मण जूको प्रश्न रघुनाथजूको उत्तर (पुनः) नारदजूको प्रश्नरघुनाथजीकोउत्तर (पुनः) सुवेलपर श्रीरघुनाथजीको प्रश्न सब बानरनको उत्तर इत्यादि जहांजहां प्रश्नोत्तर हैं सो सबनाव केवटजानो ६२ ॥

सुनि अनुकथन परस्पर होई पथिकसमाज सोहसरिसोई ६३

टी० । जैसे उसनावपर चढ़े पथिकनके समाज शोभा देतेहैं परवह समाज नदीके बाहरकीहै तैसे जो अनेकप्रकारकेप्रश्नोत्तर तिन्हको सुनि के जो परस्पर अनुकथन करतेहैं कहतेहैं कि क्या प्रश्नका उत्तरनिबहाहै सोई पथिकनको समाजकीर्त्ति सरमें शोभादेते हैं पूर्व जो श्रोतन की समाज त्रिविध कहि आयेहैं तिन्हहों में दोकोटी किये कि एकसुनतेभरि हैं ते पुरग्राम नगरमें हैं वो एकसुनिकरि अनुकही पीछे परस्पर कथन करतेहैं ६३ ॥

घोर धार भृगु नाथ रिसानी   घाट सबंधु राम बर बानी ६४

टी० । जैसे सरयूमें तीव्रधारहै तैसे कीर्त्ति सरयूमें भृगुनाथ जोपरशुराम तिनको क्रोध जोहै सोई घोर भयावन तीव्रधार है जो क्रोध देखिकै श्रीजनकजी ऐसे धीरगंभीर डरिगये औरकी क्याचली (लक्ष) बोलत लषणहि जनक डेराहीं(पुनः)अतिडर उतर देत नृपनाहीं ॥ इत्यादि वो जैसे सरयूमेंतीव्रधारको रोकिकै सुन्दर घाटबँधेहैं तैसे बंधु जो श्रीलक्ष्मणजू तिनके सहित श्रीरामचन्द्र की बरबानीजोहै सोई सुन्दर घाट बंधि रह्योहै जैसे धारको रोकिकै जब घाटबांधनेलगै तब पहिलेगच्चको तीव्र धार तोरिदेतिहै जब बड़ोपुरुषत्व करै कि धारको रोकनेकोगच्चपरगच्च गच्च देतेजाइ तबबंधिकै तय्यारहोतहै तैसे जब प्रथम भृगुनाथबोले । अतिरिस बोले बचन कठोरा । कहुजड़ जनक धनुषक्यइं तोरा ॥ यह घोरधार देखिश्रीरघुनाथजी प्रथमगोलागलाये ॥ नाथशंभुधनुभंजनहारा । होइहिइककोउदासतुम्हारा ॥ सोधाराकेमारे गोलानथँभाजब कहे कि । सेवक सोजोकरै सेवकाई । अरि करनी करि करै लराई ॥ सोसुनि श्री लषणलाल बिचारे कि सरकारकी बात इनने उड़ाया तब आप लागे गोलागलावने वो धारा तोरनेलगे दशपांचबेर में धार शिथिल ह्वैगई तब पीछेसे श्रीरामजी सँवारिकै घाटतय्यार करिदियो ६४ ॥

सानुजरामबिवाहउछाहू   सोशुभउमगसुखदसबकाहू ६५

टी० । जैसे सरयूजीमें उमंगहोतहै सोसबको सुखदाई होतहै काहेते कि सरयूको उमंग शुभहै ताते तैसे कीर्त्तिसरयू में तीनिउं भाइन के सहित श्री रामचन्द्रके बिवाह का उत्साह जोहै सोई उमंग सबकोशुभ नाम मंगल वो सुख देनेवालाहै (लक्ष बिवाह उत्साह को दोहा) रामचन्द्रमुखचन्द्रछबि लोचनचारुचकोर । करतपान सादरसकल प्रेमप्रमोद न थोर ॥ इहांसेलेइकरि वो (सियरघुबीरबिवाह जेसप्रेमगावहिंसुनहिं ॥ तिहकहंसदाउछाह मंगलायतनु रामयश)इहांतक जानो ६५ ॥

कहतसुनत हरषहिं पुलकाहीं तेसुकृती मनमुदित नहाहीं ६६

टी० । जैसे सरयूजीमें सुकृती प्राणी स्नानकरत हैं तैसे कीर्त्तिसरयू की जेकहत व सुनत हर्षत पुलकत हैं नाम कहत हर्षहिं व सुनत पुलकहिं तेईसुकृती मनमुदितह्वैकै नहातेहैं ६६ ॥

रामतिलकहित मंगलसाजा पर्वयोग जनु जुरेउसमाजा ६७

टी० । जैसे सरयूजीमें पर्वयोग परतहै जामें बहुतसे लोग बटुरते हैं तैसे कीर्तिसरयूमें श्रीराम राज्यतिलककेहेतु सर्वमंगल के साजसाजेगये सोई मानो पर्वयोगहै(लक्षरामतिलकको) आपुअछत युवराजपद रामहिं देहिंनरेश ॥इहांसेलेइकरि व नाममंथरामंदमति ताईं आगेमंथरा केकयी सम्बाद केकयीकेकुमतिके भीतरजानो ६७ ॥

काईकुमति केकयी केरी परी जासुफल विपतिघनेरी ६८

टी० । जैसे सरयूमें पर्वयोगलगे पर कहूं काईपरिगई जलबिगरिगया तिसकाफल दुःखहोताहै तैसे कीर्त्तिसरयूमें केकयीजूकी कुमतिजोहै सो काईतुल्यहै जामें पर्वयोग तौ गवैकीन पर ताको फल घनेरी विपत्तिपरी जितनेरामतिलकरूप पर्वयोगमें आनन्दरहैं तिनकेऊपर बड़ीबिपत्तिपरी (लक्ष केकयीकेकुमति व घनेरीविपत्तिको) नाममंथगमंदमतिसे सजिबन साजसमाज ताईं इधर व जब सुमन्तजी लवटि आये तहांसे व पितु हित भरतकीन्ह जसकरणी ताईं ६८ ॥

दो० शमनअमित उतपातसब भरतचरित जपयाग ॥
कलिखलअघअवगुणकथन तेजलमलबककाग ६९

टी० । जैसे सरयूजीमें काईलगनेसे जलबिगरचो तब अच्छेलोग जप पुरश्चरण वो यज्ञकरिके विघ्नकोशांतिकरतेहैं तैसेकीर्त्तिसरयूमें जोकेकयी की कुमतिरूप काई लगनेसे जो उत्पात भयो सो श्रीभरतजूको चरित जोहै सबउत्पातके शमननाम नाशकरिबेको जपयज्ञरूपहै जोश्रीरामचन्द्र की पांवरी सिंहासनपर बैठारी सबके प्राणको अवलंब दीन भरत चरित अयोध्याकांडमें एकसौछिहत्तर दोहाके ऊपरसे समाप्तिताईंजानो परन्तु बीच बीचमें भरतजीको स्वभाववर्णनहै जो जलगुणकेसाथ शीतलता बर्णनहै वो सरयूजीके एकदेशमें देशभूमिके योगसे घोंघी सिवार रूपमल रहतहै तिसके साफकरिबे को काक बकरहतेहैं तैसे कीर्त्ति सरयूमें कविताईके योगसे कहूं एकदेशमें प्राकृत दृष्टांतादिक जोहैं सो मलहैं घोंघी सिवार तिन्हके साफकरिबेको कलिको अघकथन जोहै उत्तर कांडमें सो बकुला है वो खलनको अवगुण कथन जो उत्तर कांड फूलबाटिका महँ भरतजीते श्रीरामचन्द्र कहाहै सो काकहै येदोनो कथनरूप बकुलाकाक

प्राकृत दृष्टांतादि मलसाफ करतेहैं कि सामान्य पुरुषजो सो प्राकृतदृष्टांतादि जब सुने तब सबछोंड़ि उसीमें चित्त देतेहैं वह कहतेहैं कि रामायणमें लिखाहै यहनहीं जानते कि यह तो काव्य का अंगहै तिनके कलिमयकथन वो खल अवगुण कथनसुनि कुछग्लानिभई सोईसफाईहै६९॥

कीरतिसरितछहूंऋतुरूरी समयसुहावनिपावनिभूरी ७०

टी० नदीको रूपककहनेलगे सो नदीमें जितनी सहायत्वरही सो अयोध्याकांड भरिमें होगई किंचित् उत्तर कांडमें पाया आगे आरण्य किष्किंधा सुन्दर लंका यह न मिले ताते ऋतुप्रकरण उठाय कि जैसे सरयू छवों ऋतुमें रूरीनाम सुन्दरिहै पर समय २ अतिसुहावनि पावनिहै कार्तिक रामनौमी आदि तैसे कीर्त्ति सरित जोहै सो छवोंऋतु में सुन्दरिहै पर समय समय यहभी सुहावनिपावनि है भूरी कहो बहुत ७० ॥

हिमहिमशैलसुताशिवब्याहू शिशिरसुखदप्रभुजन्मउछाहू ७१

टी० । अब जो कहा कि कीर्त्ति सरि छवों ऋतुमेंरूरीहै वो समयसमय अधिक स्वहावनि पावनिहै सो अबकीर्त्ति सरिमें ऋतुदिखावतेहैं धर्मलेके कि जैसे सरयूमें हिमऋतु आयो तब जाड़होतहै परंतुभोजनको पचाइ डारतहै तातेबड़ेलोग खुशीरहतेहैं तैसेकीर्त्ति सरयूमें हिम शैलसुता जो पार्वती वोशिवजीके विवाहकी कथा सो हिमऋतुहै किजामें प्रथममयना आदिकोदुःखसोजाड़तुल्यहै वो फेरिपाछे सबदेवताअपनोस्थानपाइखुशी भये सोई भोजन पचावनाहै वो जैसे सरयू में शिशिरऋतु जबआयोतब होरीहोतीहै तामें रंगनकीवाहुल्यता होतीहै वो सब लोग आनन्दपूर्वक गान बाजा बजावतेहैं तैसे कीर्त्ति सरयूमें श्रीरामजन्मको उत्साहजो है सोई शिशिरऋतु है जामें अनेक रंग के गान बाजा नृत्य होतेहैं वो गली गली अरगजा कुंकुमकीचढ़रहीहै अब दूनौको लक्ष (कंचनथार सोहवर पानी । परिछनचलींहरहिंहर्षानी) इहांसे लेइ करि वो (हरगिरिजा कर भयउविवाहू । सकलभुवन भरिरहाउछाहू ॥ इहांतकजानो हिमऋतु वो लक्षप्रभु जन्मउत्सवको (नांदीमुखश्राद्धकरिजातकर्मसबकीन्ह) इहां से लइकरिवो (धरेउनामगुरुहृदयविचारी) ॥ इहांपर्यंतजानोशिशिरऋतु ७१

बर्णब रामविवाह समाजू सोमुदमंगलमयऋतुराजू ७२

टी० । श्रीरामचंद्रके विवाहकी समाजको जो वर्णन है सो मुदमंगल

मयऋतुराजबसंतहैजैसेबसंतऋतुमेंसर्ववृक्ष पल्लवफूलसे नानारंग के शोभित होत हैं तैसे श्रीरामविवाहकीसमाजहै मयमण्डपकी रचना वोबरात को बनाव जो हाथिनपर झूल अंबारी घोड़ेन पर जीनपोश रथन पर चँदवा नानारंगके लगेहैं वो पयदलन में नानारंगको भूषण बसन पहिरे हैंसोई बसंत की शोभा बनिरहीहै वो जैसे बसंत ऋतुराज है तैसे सब लीला को रामबिवाह समाज राजाहै (लक्ष राम बिवाह समाज को) हाटबाट मंदिर सुरबासा । नगर सँवारहु चारिहुपासा ॥ इहांसे लेइकरि वो । बामदेव आदिक ऋषय पूजत सकल महीश ॥ इहांपर्यंतजानौ७२॥

ग्रीषमदुसहरामबनगवनू पंथकथाखरआतपपवनू ७३

टी० । जैसे सरयूमें ग्रीष्म ऋतु परत है सो है तौ गरम पर सरयू में शीतलहै वो सुखद बर्षाको आगमहै जितना ग्रीष्म तपै तितनी बर्षा होइ तैसे कीर्ति सरयू में श्रीराम बनगवन की कथा जो है सोग्रीष्म ऋतुहै ग्रीष्मऋतु में घाम पवन तीक्ष्ण होतहैं रामबन गमनमें पंथ कथा जोहै सो खरनाम तीक्ष्ण घाम पवनहैं (लक्ष रामबनगवन वोपंथकथा को) सजिवन साज समाज सब बनिता बंधुसमेत । बंदिविप्र गुरु चरण प्रभु चलेकरि सबहिं अचेत ॥ इहांसे लेइकरिवो बैठि बिटपतर दिवस गँवाये ॥ इतना अयोध्याकांडवो ॥ जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया । करहिं मेघ नभ तहँतहँ छाया ॥ इतना आरण्यकांड में जानौ सो वन गवन की कथाहै तौ विरहरूप ताप देनेवाली परन्तु श्रीरामकीर्ति सरयूकेसाथ त्रिताप हरिलेतहै ताते शीतलहै वो राक्षसनके युद्धरूप बर्षाको आगम है जातेसबको सुख होइगो ७३ ॥

बरषाघोरनिशाचररारी सुरकुलशालिसुमंगलकारी ७४

टी० । अब बर्षाऋतु कहते हैं कि निशाचरनसे जो घोररारी भई है सोई बर्षाऋतुहैजैसे बर्षाऋतुमें धानके आनंद मंगलहोत है तैसेनिशा चरन की रारीमें देवकुल जो शालिनाम धानहैं तिनको मंगलकारीभयो (लक्ष निशाचरन की रारि को) मिलाअसुर बिराध मगजाता । आवत ही रघुबीर निपाता ॥ यह प्रथम पुरवइया चली मेघ आये (पुनः) तेहि बूझा सब कहेसि बुझाई । यातुधान सुनिसेन बनाई ॥ इहां से लेइकरि धुआंदेखि खरदूषण केरा । इहांपर्यंत बड़ाभारी दवंगराहै वो ॥ कतहुं होइ निश्चर सन भेटा । प्रानलेहिं इकएक चपेटा (पुनः) कछुमारेकछु

जाइपुकारे । वोलंका जराइके ॥ पूछबुझाइ खोइ श्रम । पर्यन्तयह एक दवंगराहै फेरिजब कुंभकरण मेघनाद रावणकी रारी सो घोर बर्षा है काहेते किजामें घोरवर्षा को रूपकभारीहै (लक्ष) यहिकेबीच निशाचर अनी । कसमसाति आई अतिघनी ॥ देखिचलेसन्मुखकपिभट्टा । प्रलय कालके जनु घनघट्टा॥ व इहांसे लेइकरिवो ॥ बहुभट बहेचढ़े खगजाहीं जनुनावरि खेलहिं सरिमाहीं ॥ इहांपर्यंतघोररारि आगेरावणके युद्धभरि कुवारी बर्षा है ७४ ॥

रामराज्यसुखविनयबड़ाई विशदसुखदस्वइशरदसुहाई ७५

टी० । श्रीरामचन्द्र के राज्यको सुख वो विनय वो बड़ाई सो कीर्त्ति सरिमें शरदऋतु परचोहै सो कैसोहैकि विशदनाम उज्ज्वल वोसुखदाता वो स्वच्छ शोभायमान रामराज्य में इहांतक ब्रह्माण्ड भरि सातौदीप उज्ज्वल भये कि श्रीमन्नारायण क्षीर समुद्र ढूढ़ते है वो महादेव कैलाश ढूढ़तेहैं वो इन्द्र ऐरावत हाथी ढूंढ़तेहैं वो राहु चंद्रमाढूढ़ंते हैं वो ब्रह्मा हंस ढूंढ़तेहैं (प्रमाणं) हनुमान्नाटके ॥श्लोक ॥ महाराजश्रीमन्जगति यश सातेधवलिते पयःपारावारःपरमपुरुषोयंमृगपते ॥ कपर्दीकैलाशंकुलिश भृद्भौमंकरिवरं कलानाथंराहुःकमलभवनोहंसमधुना इति ॥ (लक्ष) रामराज्यसुख विनय बड़ाई ॥ वो ॥ रामराज्य बैठे त्रै लोका ॥ इहांसेवो रामराज्यनभगेशसुनु सचराचर जगमाहिं । कालकर्म स्वभावगुण कृतदुख काहुहिनाहिं ॥ यहां पर्यंत जानो ७५ ॥

सतीशिरोमणिसियगुणगाथा स्वइगुणअमलअनूपमपाथा७६

टी०।अबइहांसेगुणकहतेहैं कि सतिनकी शिरोमणि श्रीजानकीजीतिनके गुणगाथ जोहैं सो यहअनूपम रामयशजलकोनिर्मलतागुणहै जो कहो कि एकबेरनिर्मलतागुणसगुणलीलाकहेहैंतौसुनो उहांप्रथमतौ साधुरूप मेघके मुखतेजबछूट्योहै तबकहेफिरिजबबुद्धिरूपभूमिमेंपरचोतब वहीगुण कछू बुद्धिके गुणलियेकहे फेरिजब कवितारूप नदीमें आयो तब कछू कविता के गुण लियेकहे वो जोअच्छे विचारो तौ सगुणलीला वो सियगुण गाथा एकै देखिपरतहै काहेते कि जहां श्रीजानकीजूको स्वरूपकहाहै तहां श्री रघुनाथ जानकी को एककहा है वो जब अवतारदशा में लीलाकहे तब जानकी जूको सेवकमें कहा सो यही रामयशको निर्मलकरैहै जो कदा- चित् श्रीजानकी जी ऐसा लीला प्रकरण में न करतीं तौ शोभा न होती

ताते विचारिलेउ अब सिय गुणगाथाको (लक्ष) पति अनुकूल सदारह सीता । शोभाखानि सुशील विनीता ॥ जानति कृपासिंधु प्रभुताई । सेवतिचरण कमल मनलाई ॥ यद्यपिगृहसेवक सेवकीनी । विपुल सकल सेवाविधिलीनी ॥ निजकरगृह परिचर्या करहीं । रामचन्द्र आयसु अनुसरहीं ॥ जेहिविधिकृपा सिन्धु सुखमानहिं । स्वइकरि सिय सेवा विधि जानहिं ॥ कौशल्यादि सासु गृहमाहीं । सेवहि सबहिं मानमद नाहीं ॥ उमारमा बूह्मानिवंदिता । जगदंबा संतत मनिन्दिता ॥ जासुकृपाकटाक्ष सुर चाहतचितवनि सोइ । रामपदारविन्दरतिरहति स्वभावहिखोइ ७६

भरतस्वभावसुशीतलताई सदाएकरसबरणिनजाई ७७

टी० । श्रीभरतजी को सुन्दर भाव जो है सोई श्रीराम यश जल जो कवितरूप नदीमें भरोहै तिसका शीतलगुणहै पर सदा एकरस सो भरत जीको सुन्दर भाव बर्णा नहींजाइ है जो कहो बर्णा नहीं जाइहै तौ कहतेहौ क्या तहां भावनहीं कहा है भावकीदशा कहीहै जो दशादेखि के भाव अकथह्वै गयो है (लक्ष भावदशा कि अयोध्याकी सभा में) सानी सरलरसमातुवाणीसुनिभरतब्याकुलभये। लोचन सरोरुह श्रवत सींचत विरहउर अंकुर नये । सो दशा देखत समय तेहि बिसरी सबहि सुधि देहकी ॥ (पुनः) रामसखासुनि स्यन्दन त्यागा । चले उतरि उमगत अनुरागा ॥ (पुनः) मांगउँ भीष त्यागि निज धर्मं । आरत काह न करै कुकर्मं ॥ असजिय जानिसुजान सुदानी । सुफलकरौ जग याचकबानी ॥ (दोहा) अर्थन धर्मनकामरुचि पद न चहौं निर्वाण । जन्मजन्म रतिराम पद यहबरदाननआन ॥ जानहिंराम कुटिल करिमोहीं । लोग कहैं गुरु साहिबद्रोही ॥ सीताराम चरण रतिमोरे । अनुदिन बढ़ै अनुग्रह तोरे ॥ (प्रसंगभरिपुनः) करतप्रणामचलेदोउभाई । कहतप्रीतिशारद सकुचाई ॥ इत्यादि चित्रकूटकीसभा भरिमें ठौर ठौर है वो जबफिरि श्रीअयोध्याजी में नन्दीग्राम में बैठे तब इत्यादि प्रसंग सुन्दर भावदशाके जानो ७७ ॥

अवलोकनिबोलनिमिलनि प्रीतिपररुपरहास ॥
भायप भलि चहुँ बन्धुकी जलमाधुरीसुवास ७८

टी० । चारिउभाइनकीआपुसमें परस्परअवलोकनिजोहै वोबोलनिजोहै वो मिलनिजोहै वो प्रीतिजोहै वो हास्यजोहैसो यह जलकी माधुरी नाम मिष्ठगुणहै वो चारिउ भाइनको भायप जोहै सो यहजलकीसुगन्धतागुणहै

अबक्रमहीतेसबको(लक्ष्य)सुनोअनुरूपबर दुलहिनिपरस्पर लखि सकुचि हिय हर्षहीं । यामें ध्वनि करिकै अवलोकनि वो हास्य दोऊ सिद्धिहोतहैं वो । जिन वीथिन्ह विहरहिं सब भाई (पुनः) अनुज सखा सब लेहिं बुलाई । बनमृगयानितखेलहिंजाई॥ यहिपदमें ध्वनिकरिकै बोलनिसिद्धि होतिहै वो । बरबसलियेउठायउर लायेकृपानिधान । भरतरामकीमिलनि लखि बिसरेउसबहि अपान ॥ मिलिसप्रेम रिपुसूदनहिं केवटभेंटेउराम । भूरिभाग्यभेंटे भरतलक्ष्मणकरतप्रणाम । भेंटेउ लषण ललकि लघुभाई । इत्यादि वो उत्तरकांडमें मिलापचारिउ भाइनकोहै अब प्रीतिसुनो।सेवहिंसानुकूलसबभाई।रामचरणरतिअतिअधिकाई॥ अहनिशिबिधिहिमनावतरहहीं । कबहुं कृपालुहमहुंकछु कहहीं ॥ रामकरहिंभ्रातनपरप्रीती । इत्यादि परस्पर प्रीतिजानो सो यहबोलनिआदिवो हास्यअंतपांच जोहैं सो यहजलकी माधुरीनाम मिष्ठगुणहै अब भायपसुनो। जनमेएकसंगसब भाई।भोजनशयनकेलिलरिकाई।।कर्णवेधउपवीतविवाहू।संगसंगसबभयेउ उछाहू ॥ विमलवंशयह अनुचितएका । बंधुविहाय बड़ेहिअभिषेका ॥ यह राघवको वोअब भरतकोओरसुनो।विनुरघुवीरविलोकिअवासू।रहेप्राणसहि जगउपहासू ॥ रामपुनीतविषयरसरूखो।लोलुपभूमिभोगकेभूखे ॥ कहँलगि कहौंहृदयकठिनाई । निदरिकुलिसजेहिलहीबड़ाई ॥ यह भायपकिभरत बिना श्रीरामचन्द्र पिताकीदई राज्य अङ्गीकार न करे वो सोई भरतजी गुरु मातापिता स्वामी सबकी दईराज्य श्रीरामबिनु नकरे श्रीरामपांवरीको राज्यसिंहासनपर बैठारि आपुराज्यकेकामकाज देखते रहे वो लक्ष्मणजी श्रीरामचन्द्रमें शामिल वो शत्रुघ्नजी श्रीभरतजी में शामिलहैं यह भायपजलको सुवासगुणहै ७८ ॥

आरतिविनयदीनतामोरी लघुताललितसुवारिनथोरी ७९

टी० । अबजलको हलुकई गुण श्रीगोस्वामीजी महाराज कहतेहैं कि हमारी आर्त्ति वो विनय वो दीनता जो इसग्रंथमें ठौरठौर है सो लघुता है परथोरी नहीं बहुतहै लघुतासुवारिमें लालित्य है कुछ अशोभित नहीं काहेकि जो सायत जलमें सबगुण होइ एकहलुकई न होइ तौ वहजल बादी होताहै ताते लघुतालालित्यहै जो गोस्वामीजीइतनीलघुता अपनी न कहते विनय न करते तौ अभिमानीसूचित होते तब ऐसोनिर्पक्ष एक ग्रंथग्रन्थ चलनो अशक्यरह्यो सोई बादीतुल्य भयो जब स्वामीजू की

आर्त्तिविनय दीनता सुनी तबसबकोऊ सराहिके धारण किये ताते हलु-कई लालित्यहै (लक्ष्य) मंगलाचरणमें बहुतहै वर्णानांसे लेइवो ३५दोहा ताई बीचमें और प्रसंगभी है ७९ ॥

अद्भुतललितसुनतगुणकारी आशपियासमनोमलहारी ८०

टी०। ऐसो अद्भुतनाम आश्चर्य जलको सुनतमात्र गुणकारीहै कौन गुणकारी कि आशारूपपियास वो मनकोमलजोपापतिसकोहरिलेतहै८०॥

रामसुप्रेमहिपोषतपानी हरतसकलकलिकलुषगलानी ८१

टी०। (पुनः) यह जल कैसोहै कि रामचन्द्र विषे जो प्रेम तिसके पोषने वालाहै नाम प्रेम को बढ़ावतहै वो सकल कलिको कलुषजो पाप वो ग्लानि तिसको हरिलेतहै ८१ ॥

भवश्रमसोखकतोषकतोषा शमनदुरितदुखदारिद्रदोषा ८२

टी०। (पुनः)यह कैसोहै किभवश्रमजोजन्ममरणतिसकोसोखक नाम मिटावने वालाहै (पुनः)संतोषऊको संतोषकरनेवालाहै वो दुरित जो दु-ष्कृत करणी वोदुःख वो दारिद्र वोदोष इनसबकोनाशकरनेवालाहै ८२॥

कामक्रोधमदमोहनशावन विमलविवेकविरागबढ़ावन ८३

टी०। (पुनः) काम क्रोध मद मोह इनसबकेनशावने वालाहैवोविम-ल विवेक वो विमल वैराग्यतिसको बढ़ावनि हारोहै ८३ ॥

सादरमज्जनपानकियेते मिटहिंपापपरितापहियेते ८४

टी०। ऐसे राम यश रूप जल में सादर कही आदर पूर्वक मज्जन तुल्य श्रवण वो पान तुल्य धारण कियेते पाप तथा परिताप हृदय ते मिटि जाते हैं ८४ ॥

जिन्हयहिबारिनमानसधोये तेकायरकलिकालबिगोये ८५

टी०। अब श्री गोस्वामीजी महाराज कहतेहैं कि जिन्ह प्राणिन यह रामयशरूप वारिसे अपनो मानस नधोयो नाम इसमानसको धारणकरि अपने मनको न शुद्धकियो ते कायर नाम कपटीहैं तिनको कलिकालबि-गोये नाम ठगिलियोहै ८५ ॥

तृषितनिरखिरविकरभववारी फिरहिंमृगाजिमिजीवदुखारी ८६

टी० । ते प्राणी तृषित मृगाकीनाईं विषयरूप मृगतृष्णाको रातिदिन धावतेफिरतेहैं दुःखितहैकै कुछ हाथनहीं लागतहै ८६ ॥

दो० मतिअनुहारिसुबारिगुण गणगणिमनअन्हवाइ ॥
सुमिरिभवानी शंकरहि कहकविकथासुहाइ ८७

इतिषोड़शप्रकरणम् ॥

टी० । अब श्री गोस्वामीजी महाराज कहतेहैं कि अपनी मतिकेअनुहारि सुवारि जो श्रीरामयश तेहिको गुण गण कही समूह तिनको गनि कही विचारिकै मन अन्हवाइकही मनको उसीमें प्रवेशकरि श्री भवानी शंकरको सुमिरिकै तब कवि जोमैं तुलसीदास सो श्रीरामचन्द्रकीसुहाई कथा जोहै सो कहतहौं देखिएतौ जो मन मतिको पूर्वरंक कहारहा सो शंभुके प्रसादते मतिहुलसी हुलसिकै रामयश मानसको अवलोकनिकरि उसीमें गोतालगाइ विमलभई तब रामयश मानसको गुणगण विचारने लगी सो विचारि मनको प्रवेशकरि दोनों विमलभये तब कवि रामकथा कहनेको उद्यतभये ८७ ॥

इतिश्रीरामचरित्रमानसप्रचारिकायांमानससरयूरूपक
वर्णनोनामषोड़शोकैंकर्यः १६ ॥

यह प्रचारिका पढ़नेवालोंपर प्रकटहोय कि जो षोड़शकैंकर्य लिखाहै सो षोड़श प्रकरणजानो ॥

दोहा ॥

संवतदश नौसै गनौ और बत्तिसै जान ॥
मानसकीपरिचारिका जन्मलियोमतमान १

इति ॥

श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतबहुतमोटे अक्षरोंकीरामायणमूल ॥

इसको बालक और वृद्धभी सुगमतासे पढ़सक्तेहैं और इसमें श्रीरामचरित्र के विशेष रावणविजय, श्रीगंगाजीकी कथा, रामदलसेना संख्या, महिरावण, नारान्तक,सुलोचना आदिकी कथा के क्षेपक भी संयुक्तहैंऔर जगह २ सर्व कथाओं के अनुसार तसवीरें भी शामिल कीगईहैं--पत्थर में छपीहै क़ीमतहिनाई कागजकी १॥।) सपेद काग़ज़ के २)

तथा छोटी रामायण मूल ॥

इसमें भी सब ऊपर के आशय संयुक्तहैं पत्थर के छापेकी क़ीमत१)

अन्य छोटी रामायण

टैप के छापे की काग़ज़ गुन्दा सपेद ऊपर के लिखे सब अलंकारों समेत क़ीमत ।॥)

गीतावली गोस्वामि तुलसीदास कृत ॥

अनेक रागों में रामचन्द्रजीके बालचरित्रादि समस्तलीला युक्तहैं ॥ क़ीमत ।)॥

तथा सटीक

इसमें सुख बोध और सबके समझने समझानेके लिये भाषा टीका संयुक्तहै क़ीमत ॥।)

तुलसीदासकृत कवित्तावली रामायण॥

प्रसिद्ध तुलसीदास कृत कवित्त्वोंमेंरामायण है =)॥

तथा सटीक ॥

इसमेंभी अतिसरल टीका शामिल कीगईहै क़ीमत॥-)

तुलसीदास कृत दोहावली ॥

इसमें सातसौ दोहोंमें विचित्र रामचरित्र वर्णितहै -)॥

श्री तुलसीकृतरामायणमूलकेसर्वकांडअलग२ भीमिलसक्ते हैं

१ बाल कांड	क़ीमत	।-)॥
२ अयोध्या कांड	क़ीमत	।)
३ आरण्य कांड	क़ीमत	-)
४ किष्किंधा कांड	क़ीमत	)॥
५ सुन्दर कांड	क़ीमत	)॥
६ लंका कांड	क़ीमत	=)॥
७ उत्तर कांड	क़ीमत	=)

तुलसीकृत रामायण का कोष ॥

इसमें सातोंकांड रामायणके कठिन शब्दोंके अर्थविवेचनासहितहैं =)

तुलसी कृत रामायण का इतिहास ॥

इसमें सातों कांडरामायणके अन्तर्गतसंयोगिकइतिहासहैंक्रीमत -)॥

श्री महार्ल्मीकि रामायण सातोंकांडभाषा ॥

इस प्रसिद्ध और प्रमाणिक संस्कृत रामायण का यन्त्रालय के अति वित्त व्ययसे अवध मण्डलान्तर्गतअयोध्या संस्कृत पाठशालाके तृतीयाध्यापक पंडित महेशदत्त जी शुक्ल ने प्रत्यक्षर देवनागरी भाषा के अनुसारउल्थाकिया और श्लोकार्थ जानने के निमित्त प्रति श्लोक केउल्था के उपरांत अंकभी रखदिये कि श्लोक लगाने से भ्रम न पड़े परिपूर्ण सातोंकांड विद्यमानहैं अक्षर अतिस्पष्ट कि वृद्ध और बालकभी सुगमता से पढ़ सक्तेहैं ५)

श्री रामायण रामबिलास ॥

इस रामायण को अवध मण्डलान्तर्गत पीरनगर निवासि ईश्वरी प्रसाद शर्मा ने संस्कृतबाल्मीकि का आशय लेकर दोहा चौपाई कवित्वादि पद्यमें रामाश्वमेध की कथा पूर्वक रचना किया उत्तमोत्तम छपीहै ॥)॥

रामायण अध्यात्मविचार ॥

कोलास्य नगर निवासि पंचोली पंडित यमुना शंकर नागर ब्राह्मण कृत--इसमें वेदान्तशास्त्र के बिचार कर्त्ता अधिकारी पुरुषों के विचारार्थ श्री रामचरित्र को अध्यात्म बिचार(वेदान्त शास्त्र)कीरीति श्रुति समन्वय पूर्वक निर्मित किया कि वेदके अनुसार ही रामचरित्र वर्णनकियाहै केवल बालकांड छपकर तय्यार है कागज़ बहुत गुन्दा सपेद क़ीमत ॥।)

अद्भुत रामायण ॥

परमप्रेमी लालमनी रचित--इसमें श्रीमहारानी सीताजी की कराल शक्तियों का उपजकर महिरावणके नाशहोनेकीलीला भाषा पद्यमें वर्णन कीगई है =)॥

जोमनुष्य यह पुस्तकें मोललेनाचाहैं उनको ताजराना और क़िफायत सेभी मिलसक्ती हैं कृपाकरके खतपत्रकेद्वारा छापेखानेको इत्तिलाअदें ॥